पहटैयाजी

★★ इश्वर चन्द्र सिन्हा

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

http://bhojpurisahityangan.com

गहरेबाजी

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

लेखक

ईश्वरचन्द्र सिनहा

भोजपुरी संसद

जगतगंज, वाराणसी

http://bhojpurisahityangan.com

गहरेबाजी

● प्रकाशक

भोजपुरी संसद
जगतगंज, वाराणसी-२

● संस्करण

प्रथम, संवत २०३०

● दाम

चार रुपया

● मुद्रक

भोजपुरी प्रेस,
जगतगंज, वाराणसी-२

http://bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषी महान सन्त
अवधूत भगवान राम
के चरनन में

जेकर अवतरण भोजपुरी क्षेत्र में भयल। जे आपन साधना भोजपुरी क्षेत्र में कइलन औ एही क्षेत्र के आपन केन्द्र बनउलन। जे विश्व के पीड़ित, दलित औ उपेक्षित मानवता के कल्याण बदे बराबर जागरूक हउवन।

http://bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

कहानी	पन्ना
लेखक क आपन बात	एक
कथा-यात्रा	दू
गहरेबाजी	१
कहाउत पुरान हो गयल	८
बासमती चाउर	१६
बहिन क हक	१९
चेयरमैनी क चुनाव	२७
गाँव के पैंड़ा में	३१
अब्दुल हमीद	३९
बासना	४६
बनिया क बेटा	५१
भैरवी क साज	५७
राधा गावत हौ	६४
दसखत	७१
छात्र नेता क हत्या	७६
पुरुसारथ	९८

http://bhojpurisahityangan.com

— एक —

लेखक क आपन बात

हम न त साहित्यकार हई औ न कहानीकार। पत्रकार जरूर हई औ 'न्यूज स्टोरी' वहुत लिखले हई। एतना जेकर गिनती नाहीं वताय सकित। वाकी खाली 'स्टोरी' या कहानी, जवन कल्पना के अधार पै लिखात कब्वों नाही लिखले रहली। भोजपुरी वोलीला जरूर। घरो में औ वहरहूं। वाकीं भोजपुरी में एक्को लाइन लिखले नाहीं रहली। तब्वो लिख गइली। जवन कुछ लिखली, ऊ वटोर के ई किताव हो गइल। कइसन वन पड़ल, ई पढ़वइया जनिहै। वाकी हमें सन्तोष हौ कि जेकरे जिद पै ई कुल कहानी लिख गइली औ भोजपुरी (काशिका) में लिख गइली, ओनके नीक लागल।

भोजपुरी संसद क अध्यक्ष डाक्टर स्वामीनाथ सिंह हमार पुरान साथी हउवन। ऊ एतना जिद्दी हउवन कि वालहठ, तिरियाहठ औ राज-हठ ओनके हठ के आगे पानी भर। ईहै हठ हमसे जिनगी में पहिली वार कहानी लिखवाय लेहलेस औ उन्हो भोजपुरी में। डाक्टर साहव साढ़े तीन साल से बेमार होकर खटिया पै पड़ल हउवन, वाकी ओनके हठ के तेजी में कउनो कमी ना आयल हौ। हमरे मना कइलो पै ऊ ई संग्रह छाप के रहलन। एकर दस कहानी 'भोजपुरी कहानियाँ' वदे लिखे के पड़ल रहल। आखिरी चार कहानी एह वदे लिखली।क डाक्टर साहव कहलन कि संग्रह के काया ठीक करे वदें कुछ आउर लिखा।

एह संग्रह के सम्पादन वदे पण्डित रामवली पाण्डेय के हम आभार मानीला। चिरंजीवि वीरेन्द्र त आसीष के हकदार वटलै बाटन, जे प्रूफ वगैरह के झंझट से हमें बचउले रहलन। भोजपुरी प्रेस के लोगन के वधाई जरूर देव, जे लोग देखत-देखत किताव छाप के तैयार कय देहलन।

ईश्वरगंगी, वाराणसी

शारदीय नवरात्र १, सं० २०३०

—ईश्वरचन्द्र सिनहा

http://bhojpurisahityangan.com

कथा-यात्रा

श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा की कथा-कृति के सन्दर्भ में कुछ लिखना मेरे लिये भारी संकट की स्थिति है। एक तो सिनहा जी के प्रति मेरे मन में गुरुजनोचित श्रद्धाभाव है। दूसरे, वे समर्पित जीवन पत्रकार होकर भी अच्छी खासी कहानियां लिख गये हैं और तीसरे, कृति उस भोजपुरी–हिन्दी में है जिसकी स्थिति सत्तारूढ़ हिन्दी के आगे परिगणित अथवा अनुसूचित जैसी है। अव्वल संकट से भूमिका की जगह कथा-यात्रा लिख कर बच निकलना चाहता हूँ। सिनहा जी की कथाओं के साथ यात्रा बहुत सुखद है। उन्होंने आश्चर्यजनक रीति से कुल चौदह कहानियों के लघु संग्रह में लोक कथा और पौराणिक बोध-कथा से लेकर नयी कहानी और अकहानी तक की सम्पूर्ण ऐतिहासिक और प्रवृत्यात्मक सृजन शिल्प-यात्रा करा दी है। यात्रा के पड़ावों की रंगारंग झांकियों का जलूस बहुत आकर्षक है। किसी कथा-झांकी के शिल्प को दुहराया नहीं गया है। समय की करवट के साथ बदलती हिन्दी कथा-धारा की पकड़ और उसके परिवर्तित विषय-वस्तु की पहचान कृतियों में स्पष्ट है। इतनी विविधता क्या सायास जुटाई हुई है? एक लम्बे अन्तराल के भीतर समय-समय पर लिखी इन कहानियों में संयोगवश ऐसा वैविध्य और सम्पूर्ण कथा-साहित्य की परिचायक प्रवृत्तियों का रूप-उभार आ गया है। संगृहीत कहानियों का वर्तमान क्रम तो रचना क्रम है अतः इसे सदोष कहने का प्रश्न ही नहीं, परन्तु ऊपर जिस तथ्य की ओर संकेत किया गया है उसे स्पष्ट करने के लिये निम्नांकित नये क्रम पर ध्यान आकृष्ट कराना चाहूंगा।

http://bhojpurisahityangan.com

(क) कहानी का आदिरूप :

१— लोककथा	—	बनिया क बेटा
२— पौराणिक बोध कथा	—	वासना

(ख) प्रेमचन्द पूर्व :

३— सामाजिक नीति कथा	—	गाँव के पैंडा में
४— जासूसी कहानी	—	छात्र नेता क हत्या

(ग) प्रेमचन्द युग :

५— आदर्शवादी कहानी	—	बहिन क हक
६— आदर्शोन्मुख यथार्थवादी	—	कहाउत पुरान हो गइल
७— रोमेन्टिक	—	भैरवी क साज
८— ऐतिहासिक	—	अब्दुल हमीद
९— हास्य-व्यंग्य	—	चेयरमैनी क चुनाव

(घ) प्रेमचन्दोत्तर कहानी :

१०— यथार्थवादी	—	वासमती चाउर
११— आंचलिक	—	गहरेवाजी
१२—रेखा चित्रात्मक	—	गुरुसारथ

(ङ) आधुनिक कहानी :

१३— नयी कहानी	—	राधा गावत हौ
१४— अकहानी	—	दसखत

कहानी के आदि रूप को यदि छोड़ दिया जाय तो शेष हिन्दी कहानी के विकास के चार युगों की प्राय: समस्त प्रमुख प्रवृत्तियों से जुड़ी रचनाओं का ऐसा संतुलित न्यास है कि लगता है, बहुत सुविचारित और आयोजित ढंग से यह कार्य हुआ है, जब कि ऐसा है नहीं। सिनहा जी की पहली कहानी जिसकी रचना के बाद उनकी ओर पाठकों

http://bhojpurisahityangan.com

का ध्यान आकर्षित हुआ 'गहरेवाजी' है, जो 'भोजपुरी कहानियाँ' में नवम्बर १९६४ में प्रकाशित हुई और इसके बाद पाठकोंकी मांग पर उक्त पत्रिका में वे समय-समय पर बराबर लिखते रहे। वास्तव में अनायासागत यह कथा-यात्रा-क्रम न केवल इस कृति की महत्वपूर्ण उपलब्धि है अपितु भोजपुरी हिन्दी की क्षमता और छलांग का परिचायक भी है। कहानी का इतिहास जहाँ सहस्राब्दियों का है वहाँ खड़ी बोली हिन्दी-कहानी का इतिहास पिछली शताब्दी का है। और भोजपुरी हिन्दी-कहानी तो अभी पिछले दो-तीन दशक से राह बना रही है। स्वामी विमलानन्द सरस्वती की कहानी 'जेहल के सनद' से भोजपुरी हिन्दी की कहानी का व्यवस्थित इतिहास शुरू होता है। कमला प्रसाद विप्र, मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध,' अरुण मोहन भार्गव, गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश,' ऋषीश्वर, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य,' विजय बलियाटिक, रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक,' लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी और रामवृक्ष राय, रामनाथ पाण्डेय, जगन्नाथ उमाकान्त वर्मा, जगदम्बा आदि लेखकों ने इसे गतिवान किया है। भोजपुरी हिन्दी के इन कहानी-लेखकों के बीच सिनहा जी आये नहीं, 'फट पड़े' हैं, ऐसा लगता है। वास्तव में उनका क्षेत्र दूसरा है। सृजनात्मक कृतित्व के अन्तर्गत हिन्दी में सफल फीचर-लेखक के रूप में उन्होंने ख्याति अर्जित की है।

सन् १९६२ ई० में ज्ञानमंडल से एक जन भावनायें' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें तत्कालीन भारत-चीन-युद्ध के सन्दर्भ में लिखे सिनहा जी के विविध फीचरों का संकलन है। वास्तव में 'आज' (वाराणसी) में उक्त शीर्षक के स्तम्भ में वे २ नवम्बर सन् १९६२ से दिसम्बर सन् १९६३ तक जबकि लोहा गरम रहा, नित्य लिखते रहे। बाद में वही सब पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। युद्ध-काल की मनःस्थिति और जन मानस की वैचारिक यात्रा की इन फीचरों में गहरी और सूक्ष्म पकड़ है। शुष्क समाचारों को संवेदनशील कोणों से उठा कर उन्होंने

http://bhojpurisahityangan.com

सृजनात्मक मूल्यों से जोड़ा है। पत्रकार की दृष्टि और कथाकार की सृजन-चेतना लेकर सिनहा जी ने फीचर लेखन में सफलता तो पायी परन्तु कहानी-लेखन की अपेक्षायें कुछ और थीं। इस कूचे में आकर पत्रकार को पूरी तरह विसर्जित हो जाना था। यही हुआ भी। कुल चौदह कहानियों में एक भी फीचर नहीं है।

नयी कहानी ने इधर अपनी सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लिया है और फीचर, स्केच, रिपोर्ताज तथा ललित निबन्धादि की सीमाओं में उसकी निर्बाध घुसपैठ चल रही है। सिनहा जी फीचर से जुड़ी कहानी दे सकते हैं परन्तु ऐसा नहीं होता है। सच तो यह है कि कहानी लिखते समय वे पत्रकार एकदम नहीं रह जाते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं है कि कहानी के शुद्ध साहित्यिक मानदण्डों, उसकी शास्त्रीय विधाओं अथवा नवीनतम प्रक्रियाओं से परिचित वे परिनिष्ठित कहानीकार रह जाते हैं। कहानी की टेकनीक, शिल्प-भंगिमा और उसके चालू फैशन या फार्मूलों आदि की प्रयोगात्मक सूक्ष्मताओं की उन्हें एक सीमा तक ही अपेक्षा होती है और इसका एक सुन्दर परिणाम उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है। लगता है, कथा-चेतना स्वयं राह बना रही है। वह राह कुछ अनगढ़ होकर भी अत्यन्त सहजाकर्षक है। कहानियाँ बहुत सपाट हैं। तब भी गहरी सूझ और चुस्त पकड़ के कारण कहीं कुछ खटकता नहीं है। कहीं व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ बन कर आ जाता है तब भी रचना की इकाई का कसाव बना रहता है। बराबर एक परिपक्व सिद्ध और व्यावहारिक जीवन का जिन्दा किस्सा जो पाठकों के अवधान को समेटे रहता है। आकर्षण में भोजपुरी हिन्दी के काशिका रूप की न्यारी मिठास और मस्ती भी कुछ अतिरिक्त बढ़ोत्तरी कर देती है।

खड़ीबोली हिन्दी के अभ्यस्त पाठकों को अक्सर शिकायत होती है कि भोजपुरी हिन्दी पढ़ने में अटपटी लगती है और जल्दी ही थक कर

http://bhojpurisahityangan.com

ऊब जाते हैं। शिकायत निराधार नहीं है। भोजपुरी-हिन्दी का लेखक जब उसे 'गढ़ने' लगता है तो उसका सहज प्रवाह आहत हो जाता है। इस भाषा के रूपों और प्रयोगों में विविधता होने के कारण उसके सहज प्रवाह की पकड़ सरल कार्य नहीं है। खड़ीबोली हिन्दी की मानसिकता और पड़ने वाली छाया उसे और असहज बना देती है। समर्थ भोजपुरी हिन्दी के लेखक भी कभी-कभी इस चक्कर में दुरूह हो जाते हैं। भोजपुरी भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से खड़ीबोली से अधिक सक्षम भाषा है। जब उसे पिछलग्गू या खड़ीबोली से नियंत्रित करने का प्रयास होता है तब उसमें जो कृत्रिमता आती है उसके रहते पाठकों की खटक का कोई जवाब नहीं है। ऐसे असन्तुष्ट पाठकों से एक बार श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा की बनारसी पगी भोजपुरी हिन्दी भाषा का स्वाद लेने का निवेदन किया जायेगा, विशेषकर 'गहरेबाजी' और 'भैरवी क साज' शीर्षक कहानियों की भाषा। इन कहानियों में उतरते ही भाषागत सहजता अपने झोक में इस प्रकार ले लेती है कि खड़ीबोली और भोजपुरी का अन्तराल स्मरण भी नहीं रह जाता है और जब स्मरण होता है तो आश्चर्य होता है। वास्तव में यह आश्चर्य की ही बात है कि भोजपुरी हिन्दी के प्रति एक मिथ्या हीनता की भावना बद्धमूल हो गयी है।

भोजपुरी हीन क्यों? सिद्ध, सन्त, भक्त और लोक-कवियों की वाणी का जिससे शृंगार हुआ वह भारत के सत्रह जिलों के साढ़े सात करोड़ लोगों की पूर्ण सक्षम और सशक्त भाषा अन्तर्प्रान्तीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय भाषा जिसे बिहार विश्वविद्यालय ने अध्ययन के लिए अपने पाठ्यक्रम में रखा, सचमुच हीन क्यों? क्या इसका एकमात्र कारण यह है कि उसे सरकारी या अर्द्धसरकारी मान्यता प्राप्त नहीं है? मेरे विचार से उसे महान् प्रतिभाओं और श्रेष्ठ सर्जनात्मक कृतियों की अपेक्षा है। बुरा हो उस राजनीतिक दृष्टि का जिसके चलते न जाने कैसे भोजपुरी का नाम लेते ही विघटनवादी गंध पाकर लोग बिदकने लगते हैं। भोज-

http://bhojpurisahityangan.com

पुरी के विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी का ह्रास कैसे होगा ? जिसे हम हिन्दी भाषा कहते हैं वह भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से क्या है ? क्या वह पांच उपभाषाओं, कई विभाषाओं और भोजपुरी सहित लगभग बीस व्यापक बोलियों के समुच्चय का नाम नहीं है ? शंका का आधार यदि राजनीतिक है तो वह परम मिथ्या है। साहित्य उसकी परवाह नहीं करेगा। भोजपुरी-हिन्दी अपनी निहित ऊर्जा और प्राणशक्ति के बल पर आगे बढ़ेगी और ऊपर उठेगी। गद्य की नवीनतम विधाओं में उसकी अभिव्यक्ति क्षमता निखार पाती जायेगी।

कहा जाता है कि कहानी कविता को अपदस्थ कर हिन्दी-साहित्य की केन्द्रीय विधा हो गयी है और उत्तरोत्तर अधिकाधिक प्रभावशाली और प्रामाणिक बनते-बनते वह आज 'अकहानी' तक पहुँची है। शायद आलोच्य संग्रह की 'दसखत' शीर्षक रचना भोजपुरी हिन्दी-कथा-साहित्य की पहली "अकहानी" है। इसकी "क्षमता" के विषय में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। अकहानी की मानसिकता का यहाँ सीधा साक्षात्कार है। श्रावयिता रोजमर्रा के घिसे-पिटे जीवन की कठिनाइयों का प्रामाणिक भोक्ता है। युगीन जीवन की विसंगतियों के धक्के से टूटते-टूटते भी यदि जीवन का कोई अंश शेष है तो उसे लेकर कोई व्यवस्थापूर्ण सृजन हो सकता है किन्तु जब सब कुछ बिखर कर खंड-खंड हो गया है और क्या भीतर क्या बाहर, समूचा जीवन एक अन्तहीन यातना और घुटन का पर्याय हो गया है तो इन एब्सर्ड स्थितियों के साक्षात्कार से उत्पन्न सृजनात्मकता की चुनौती को कहानी नहीं अकहानी ही स्वीकार सकती है। अकहानी, जिसमें प्लाट खो गया है, मूड खो गया है, कलम छिन गयी है और कोई कहानी न लिखी जाकर लेखक स्वयं लिख गया है, 'दसखत' के रूप में अत्यन्त कड़वे मध्यवर्गीय जीवन के व्यर्थता-बोध के दस्तावेज पर दसखत कर दी गयी है।

संग्रह की सर्वोत्तम कहानी जिसमें आधुनिक जीवन की पहचान

http://bhojpurisahityangan.com

अत्यन्त सफाई से उभरी है 'राधा गावत हौ' है और यह नयी कहानी की भंगिमाओं, संवेदनाओं और सूक्ष्मताओं की ताजगी से पूर्ण अन्तरान्दोलन के सघन क्षणविम्वों का आलेखन है। कुछ लोगों की दृष्टि में सर्वोत्कृष्ट रचना 'भैरवी क साज' है और निःसन्देह इस कहानी की प्राणशक्ति अद्भुत है, परन्तु कुल मिला कर इसका वोध पुराना है। हाँ, इतना अवश्य है कि इसका कलात्मक चरमोत्कर्ष अतीतगाथा से जुड़े होने के कारण ही है। भैरवी-गान के समय कौन सा साज वजेगा ? पाठकों में मीठा कुतूहल होता है, परन्तु साज के रूप में जव खिची हुई चमचमाती तलवारें निकल आती हैं तो श्रृंगारिक भीषणता के अन्तरविरोव को आत्मसात कर कलेजा कांप उठता है। वनारसी सांस्कृतिक रग रुद्र जी की पुस्तक 'वहती गंगा' में वहुत घुला पर उसका कथागत रोमेन्टिक निखार प्रसाद की 'गुण्डा' नामक रचना के वाद फिर ईश्वरचन्द्र सिनहा की इस कहानी में ही दृष्टिगोचर होता है। 'गुण्डा' आदर्शों से आच्छादित कहानी है और उसकी तुलना में 'भैरवी क साज' का परिवेश कुछ अधिक मुक्त है। प्रसाद ने उसे इतिहास से जोड़ कर वहुत गंभीर कर दिया है और उसका प्रभाव मन पर वहुत विस्तार के साथ उतरता है। सिनहा जी की कहानी इतिहास-मुक्त रोमांस की गहराइयों में सिमटी परिवेश-प्रधान हो जाती है। इसमे संयम वहुत है।

पर, 'राधा गावत हौ' के आस्वाद का धरातल कुछ और है। इस कहानी का भोक्ता नैरेटर सीरीकिसुन पांच वर्ष वाद एक वड़े अफसर की हैसियत से वनारस लौटता है तो मन ही मन पूर्व निर्धारित व्यवस्था के अनुसार क्लार्क होटल में टिकने की अपेक्षा वह दारानगर की उस सहु-आइन के घर रहने के लिये ललक उठता है जहाँ वह विद्यार्थी जीवन में रहकर पढ़ता था तथा जहाँ कि अन्यान्य मधुर स्मृतियों के अतिरिक्त एक सुघर-सलोनी राधा भउजी उसे खींच रही थीं। नैरेटर अद्भुत मनोवैज्ञानिक ऊव की उतार-चढ़ाव युक्त स्थिति के वीच अन्ततः तीन दिन

http://bhojpurisahityangan.com

वार लकदक वर्दी वाले शोफर के साथ होटल की इम्पाला में दारानगर के उस चिरपरिचित पुराने मकान में पहुँचता है। अपनी सहुआइन चाची को तो वह उसी सांस्कृतिक स्नेह सौन्दर्य के बीच पा लेता है किन्तु सपने की भाँति मन में उगी राधा भउजी की परिवेशगत विकृति और निर्यातिगत क्रूरता की टकराहट को वह झेल नहीं पाता है। राधा के असमय उजड़े सौभाग्य की घनीभूत मसंवेदना को उनके द्वारा गायी गयी मिठारा में कसी लोकगीत की एक कड़ी में व्यंग्य बनाकर कथाकार पाठकों को झकझोर देता है। पूरी कहानी में आकर्षण एक सुन्दर युवा नारी देह का है पर आधुनिक सैक्सी टच सहज भाव से बचता गया है। शायद इस तरह की स्थितियों का साक्षात्कार आज का फैशनजीवी, पेशेवर अथवा धारा में बहने वाला कथाकार नही कर सकता है। वास्तव में आधुनिक हिन्दी-कहानी को मनोवैज्ञानिक सेक्स केन्द्रीयता ने मार डाला। उसकी सम्बन्धों की सारी तलाश सेक्स केन्द्रित हो चली है और इससे जो एकरसता, उबास तथा कृत्रिमता का अहसास होता है उससे उबरने के लिये ही नये कथाकारों ने स्वयं को 'अकहानी' पर उतार लिया।

कथा-यात्रा के अन्त में इस महत्वपूर्ण तथ्य पर ध्यान आकर्षित हो जाता है कि कुछ को छोड़कर शेष समस्त कहानियों की पृष्ठभूमि काशीनगरी है जिसमें मुगलसराय, रामनगर, हिन्दू यूनिवर्सिटी, राजघाट, मैदागिन, कबीरचौरा, गोदौलिया, चेतगंज और दशाश्वमेध आदि की आंचलिक रेखायें बनारसी साफा-पानी के साथ उभार पाती हैं। बनारसी रंग और उसके एक खोये सांस्कृतिक आयाम की बहुत चटक खोज पहली कहानी 'गहरेबाजी' में है। तीस वर्ष बाद साठ वर्षीय अल्लर साहु को अपने समवयस्क मित्र जुम्मन शेख के साथ गहरेबाजी की प्रतिद्वन्द्विता मे संयोगवश जुट जाना पड़ता है और राजघाट पर बनारस और मिर्जापुर के पानी की वह रोमांचक टकराहट होती है कि पाठकों की सांस रुक जाती है। डाक्यूमेन्टरी फिल्म की भाँति क्षण भर के लिये चालीस मील

http://bhojpurisahityangan.com

प्रति घण्टे की रफ्तार से कथाकार गहरेवाज एक्कों के साथ पाठकों को दौड़ा देता है पर क्लाइमेक्स पर पहुँच कर हार-जीत के अतिरिक्त एक तीसरा रंग उभार देता है। अप्रत्याशित अन्त अथवा कथान्त में सर्वथा नयी जगह पर चोट सिनहा जी की कहानियाँ की विशेषता है। एक्कों-घोड़ों की गहरेवाजी यहाँ जीवन की गहरेवाजो में बदलते देखते हैं। एक समय के सांस्कृतिक बनारस का प्रतिनिधि अल्लर साहु मानवीयता की कितनी गहराई में जाता है। प्रतिद्वन्द्विता तोड़ती नहीं, जोड़ती है। बूढ़े मिलते हैं, नया रक्त एक दूसरे का स्वागत करता है, न कोई हिन्दू है और न मुसलमान, अनुपस्थित नारी-तत्व, नयी 'गहरेवाजी' के लिए नया राजघाट का पुल बन जाता है। अत्यन्त छोटी पर कसी इस कहानी में समूचा रोमांच संकेतों में उभरता है और बिम्बात्मक होता है।

इस महत्वपूर्ण कहानी-संग्रह को प्रकाशित करने के लिये भोजपुरी-संसद के संचालक और नियामक डाक्टर स्वामीनाथ सिंह को जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है। वास्तव में डाक्टर साहब रचनाओं के प्रकाशक ही नहीं हैं, वे कहीं न कहीं उनकी सृजना-प्रेरणा के मूल में भी होते हैं। जिस गंभीरता के साथ भोजपुरी-संसद के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक नारेवाजियों में फँसी भोजपुरी हिन्दी की प्रगति-नियति को मूल्यवान् सृजनात्मक उपलब्धियों से संवार-संभाल दिया है उसके लिए हिन्दी-साहित्य का इतिहास उन्हें भूलेगा नहीं।

स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गाजीपुर।

(डाक्टर) विवेकी राय

http://bhojpurisahityangan.com

गहरेबाजी

रामजी जौने समय में रहल होइहैं ओके ना जाने केतना जुग बीत गइल, बाकी हर साल कुआर के महीना में रामनगर में रामजी क लीला जरूर देखे के मिलेला। ठीक ओइसहीं बनारस में गहरेबाजी के जुग बितले भले पचीस बरीस से उपरे होत होई, बाकी रामनगर के लीला के सँगही हर साल गहरेबाजियो देखे के मिल जाला। ई बात दूसर हं. कि पहले जहाँ सैकड़न गहरेबाज ललकार के मैदान में उतरत रहलन, उहाँ अब ओनके अंगुरियो पै गिने के जरूरत नाही होत। काहें कि अँगुरी दसठे होले, आउर उनहन में पोर के निसान तीस। असोंवें के बात कहीं त कुल चार-छ ठे गहरेबाज भर मेला में देखइलन। रामनगर के लीला के नेमी पुरान लोग त ई गिनती देखके सांस ले के रहि जालन, बाकी नइकी पीढ़ी के लोगन के बदे त ईहो बइसने लगेला, जइसे ऊ कवनो अजायबघर में जायके पुरान समय के पुरान बातन के अन्दाज लगावत हों। एह गयल गुजरल दिनों में, मेला के आरती खतम भइले पर जब ई चारे छ गहरेबाजन के एक्का ललकार के रामनगर से छूटला त मील भर आगे के सड़क पहिलहीं साफ हो जाला। मेला देख के पैदल, साइकिल से आ रिक्सा से लउटे वाले घोड़न के टाप से होत बन्दूक मतिन अवाज अउर ओनके हाँके वालन के ललकार दूर से सुनते सड़क छोड़ के पटरियो के नीचे उतर जालन। बाकी ओ लोगन के ढेर ना रुके के पड़त। देखत देखत एक-एक इञ्च बदे जान लड़उले गहरे बाज हवा से बात करत आगे निकल के आँख से ओझल हो जालन। हजारन अदमी त राजघाट के पुले पर गहरेबाजी के मजा लेवे बदे घण्टन डटल रहेलन।

http://bhojpurisahityangan.com

चना चबेना गंग जल पर साफा पत्त देके मस्ती झारे वाले बनारसी भी चनो के भाव सेर भर क हो गइले पर भले मुरझायल देखाये लगल रहलन, बाकी अबकी कुआर में, जब सुनायल कि ललकारहन के दिन ६० बरिस के उमर में अल्लर साहु ३० बरिस बाद फिर से रास थाम के मैदान में उतरे वाला हउवन त बनारसिन के नस-नस झन नाइ उठल। ऊ अल्लर साहु, जेकर कउनो समय में बनारस के गहरेबाजन में वइसहीं नाव रहे, जइसे पहलवानन में गामा के आउर क्रिकेट में रणजी आर दलीप सिंह के। अपने समय में जउने ओर अल्लर साहु अपने एक्का पर निकल जांय, लोगन के निगाह ओनके पै और ओनके घोड़ा पर टँगले रह जाय। चाहे भाष्करा क सैल रहे, चाहे आशापुर के घुड़दौड़। जहाँ अल्लर साहु क एक्का पहुँचे, अपने के लगावे वाले गहरेबाज बगल होके रस्ता दे देत रहलन। तब अल्लर साहु के पचीसी रहल, अउर अब त पचासा से भी दस पार हो गयल बाय। ओही अल्लर साहु के जुम्मन शेख तीस बरिस बाद बनारस आके ललकार देहलन।

जेह समय अल्लर साहु के बनारस में रंग रहे ओही समय ओइसने जमाना मीरजापुर में जुम्मन शेख के रहल। शेख भी जानवर के एके पारखी रहें। हरिहर छत्तर के मेला से जवन बछेड़ा ऊ छांट ली अइलन, ऊ मैज और सज के जब गर्दन उठैले सड़क पर खड़ा भयल तो सेखो के गर्दन देखवइयन के निगाह में ओतने ऊँच लगल। शेख अपने एक्का से बराबर बनारस आवें, आउर अल्लरो साहु कबों-कबों भांग-बूटी छाने मीरजापुर तक चढ़ जायल करें। एक्के सउख के कारन शेख अउर साहु दुनो के नांव बनारस अउर मीरजापुर दुनो शहर में मशहूर रहल। साहु जब मीरजापुर जांय त ओनके भांग बूटी के इन्तजाम शेख करें अउर शेख जब बनारस आवें त साहु भी ओनके खातिरदारी में तनिको कोताही न करें। ई सब होत रहे बाकी दुनो एक दूसरे से बल बचउले रहें। चाहे

http://bhojpurisahityangan.com

बनारस में चाहे मीरजापुर में ई दूनो गहरे बाजन के एक्का कब्बों एक साथ, एक सड़क पर अउर एक ओर मुँह कइले नाहीं देखाय।

बाकी होनी होके रहेले। एक दिन शेख कउनो काम से चुनार गइल रहलन। संझा के लौटत के जैसही ओनकर एक्का रेलवे के फाटक पार कइके मीरजापुर वाली सड़क पर मुड़ल, पीछे से अल्लर साहु क एक्का झनझनात पहुँत गयल। अल्लर साहु के एक्कावान शेख के बिना देखले आवाज लगाय के जैसहीं एक्का आगे बढ़ावे चहलस, शेख के तेवरी चढ़ गयल। ओह समय लगाम शेखे के हाथ में रहे। ऊ ओ तड़प के आवाज देहलन और घोड़ा हवा मतिन उड़ चलल। शेख के घोड़ा के उड़त देखतें अल्लर साहु के नस तनाय गइल। ऊ अपने एक्कावान के पीछे खींच के चट दे लगाम अपने हाथ में ले लेहन। लगाम के हरकत से घोड़ा अपने मालिक के हाथ पहचान गयल अउर जानवर होत भयल भी ओके ई जाने में देर ना लगल कि आज मालिक के इज्जत ओही के दम, खम अउर हिम्मत पर बाय। फिर त दूनों जानवर जैसे जान क बाजी लगा देहलन। सड़क पर दूनों एक्का अगल-बगल ऐसन उड़े लगलन, जइसे मोटर साइकिल के संगे साइड कार। न ऊ एक्को हाथ आगे बढ़ पावें और न ऊ एक्को हाथ पीछे। तीन मील तक इहे गति रहल। एह बीच न शेख साहु के देख पवलन अउर न साहु शेख के। केहू के निगाह अपने घोड़ा से तनिको दहिने बायें नाहीं भइल। बाकी जब मीरजापुर से दू मील रह गइल, ऐसन बुझाइल जइसे शेख के घोड़ा क दम उखड़े चाहे ला। शेख पूरी ताकत से ललकार के घोड़ा के हिम्मत दियवलन। ऊ ओ एक बार जान लड़ाय देहलेस, लेकिन मीरजापुर पहुँचत-पहुँचत शेख के एक्का साहु से करीब एक फर्लांग पीछे रह गयल। शेख ओहीं से एक्का लउटाय के अपने घरे चल गइलन। साहु के एक्का रुकल त घोड़ा के पसीना से उहाँ के जमीन तर होई गइल। साहु अपने हाथ से साज

http://bhojpurisahityangan.com

खोललन आउर आपन पसीना पोछव भुलाय के घोड़ा के पंखा डोलावे लगलन। घोड़ा थँउस के वइठ गइल। साहु ओके टहरावे चहलन, वाकः ऊ उठल नाही। दूध, घी और घास कुलिये रखायल, वाकी कउनोके ना तकलेस। ढरकी से कच्ची शराव पियावल गयल। जानकारो वोलावल गइलन, वाकी केहू ओह गाढ़े में सहाय नाही वन सकल। अपने मालिक के इज्जत वचाय के ऊ जानवर ओहीं ठवर दम तोड़ देहलेस। अल्लर साहु के ऐसन सदमा पहुँचल कि ओही दिन से ऊ फिर एक्का घोड़ा नाही रखलन। ओहर शेख के एह दौड़ में ऐसन किरकिरी भइल कि ओह दिन से ऊ वनारस एक्का पर नाहीं अइलन। हाँ, शेख के एक्का घोड़ा के सउख में कउनो आंतर नाहीं पड़ल।

शेख के वेटवा गफूर के गहरेवाजी क सउख जइसे वपौती में मिलल रहल। रेखिया भिनान गफूर जेहर एक्का लेहले चल जाय, राहवाट में लोगन के टकटकी वँव जाय। शेख रोजगार धन्धा के चक्कर में बनारस आयल रहलन। दुइये दिन में लौट जाये के रहलन, वाकी ओनके लग गयल पूरे पाँच दिन। गफूर घवड़ाय के एक्का तइयार कइलन आउर ओनकर पता लगावे वदे बनारस पहुँचलन। गफूर शेख से जिद कइलन कि रामनगर के लीला देखके लउटल जाय। दूनों वाप वेटवा रामनगर गइलन। ऊहाँ संयोग से अल्लर साहु भेंटाय गइलन। अल्लर साहु गहरेवाजी त छोड़ देहले रहलन वाकी लीला के नेम निवहले जात रहलन। शेख और साहु वड़े खखायके मिललन। पान पत्ता के वाद शेख के मुँह से निकल गयल "साहुजी अगर ए वखत तोहरे पास एक्का रहत त एक बार आउर भिड़ लिहल जात।"

अल्लर साहु क आँख भुक ही जात रहे कि ओनके साथ के नौछरिया जवान रहमान वोल उठल—"ठीक त हौ चच्चा लंका दहन के दिन तय रहल।"

http://bhojpurisahityangan.com

शेख और अल्लर दूनों अचकचाय के जइसहीं रहमान के ओर तकलन, छुटते रहमान शेख से कहलन—"शेख साहव तोहमे के कहलस कि चच्चा के लगे एक्का नाहीं हौ।" पासे में मस्ती में अँखड़त सब्जा के ओर हाथ उठाय के रहमान तड़ाक से कहलन कि 'ई चच्चे के न हौ। चचचे एके छतर से छाँट के लिआयल हउवन।'

केहू कुछ कहे ओकरे पहिलहीं रहमान छोट लड़िकन मतिन मचल के साहु से कहलन— 'त चच्चा लंका दहन के तय रहल न।'

रहमान के मचलल देखिके गफूरो के नस फरफराये लगल औ ऊहो ऐंठि के शेख से कहलन—"ठीक हौ अब्बा! ढेर दिन पै वनारसौ मीरजापुर के पानी देख ले।" गफूर ऐसन तकलन जइसे रहमान कउनो पिद्दी होंय।

वड़कन से लड़िकन में और फिर लड़िकन से वड़कन में जाइके वात एइसन वइठल कि लंका दहन के दिन लंका से राजघाट के पुल के मोड़ तकके दउड़ वद गयल। उहाँ ई वात होते रहल तवले सगरे मेला में ई खबर फैल गइल कि लका दहन के दिन अल्लर साहु आउर शेख में भिड़ी। दुसरे दिन सबेर होत होत त विना अखवार में छपले वनारस भर एह वरावरी के चरचा होइ गयल। ओहर ओही घड़ी से दूनो ओर के तबेला में रियाज शुरू हो गयल। अल्लर साहु और शेख दूनों के जइसे जवानी लउट आइल। घोड़न के रातिव में तर माल वढ़ाय देवल गयल। दिन रात मलाई दलाई होवे लागल। लंका दहन के दू दिन वीच में पड़त रहल।

रहमान के जोस पूछे लायक नाहीं, देखही लायक रहे। आज ओनके साहु चच्चा के पकल मोंछ के वाजी लग गयल हौ। ओनके भइया के मान के सवाल हौ, जेकर कुल दुलार सब्जे पर ढरल रहेला। रहमान नखास के एक अच्छा खात पियत व्योपारी परिवार के जवान हउवन।

http://bhojpurisahityangan.com

ओनके भाई के जब गहरेबाजी के नशा चढ़ल तौ ऊ अल्लर साहु के साथ लेके ओनहीं के पसन्द से सब्जा लिआयल रहलन। सब्जा के रातिब में रोज तीन पाव घीव, अढ़ाई सेर दूध, एक पाव मक्खन आउर एक सेर जलेबियो दियात रहल। बढ़िया दौड़ में थकले पर शरावो पियावल जाला। एह समय बनारस के बचल खुचल गहरेबाजन पर त सब्जा के रंग रहबे कयल, नई नई मोटर के मालिकौ सड़क पै सब्जा के देख के ललच के रह जात रहलन।

लंका दहन आखिर आई गयल। ओह दिन न जाने केतना लोग मेला खतम होवे के पहिलहीं सड़क के दूनों ओर डट गइलन। राजघाट के पुल के दूनो पटरी पर तिल धरे के जगह नाहीं बुझात रहे। पुलिस भी चौकन्नी रहे। ओह समय सड़क ओइसहीं साफ और खाली होइ गइल रहे, जइसे लाट साहब या बड़का मिनिस्टर के अइले पर खालो करावल जाला। केतना लोग मोटर औ फटफटिया ले के तइयार हो गइल, पांछे पांछे दौड़ाइके घुड़दौड़ देखे के बदे। लीला के आरती खतम होते गफूर और रहमान अपने अपने पठ्ठन के तैयार कइके एक्का में जोत के सामने लौ अइलन। शेख साहब जरी के वास्कट पहिनले औ साफा बँधले अइसन अदा से खड़ा भइलन कि बनारसी तमाशबीनन के पसीना चुहचुहा गयल। बाकी जब अल्लर साहु अद्धी के कुरता पै सेल्हा बन्हले छउक के एक्का पर चढ़लन त हरहर महादेव से आसमान गूंज उठल। अल्लर साहु के संगे रहमान और शेख के संगे गफूर के बइठते दूनो घोड़न के रास तनाइल और दूनो संगही ऐसन उड़लन कि मोटर और फट-फटियावाले तकते रह गइलन। कटेसर पर दूनो गहरेबाज अगल बगल रहलन। पड़ाव पर मोड़ो दूनो संगही घुमलन। राजघाट के पुल पर भी ई समझ में नाहीं आयल कि कौनो आगे भी होइहें या नाहीं। बाकी आधा पुल पार करत करत अल्लर साहु जैसे पगलाय के रास घइले खड़ा हो गइलन औ ऊ ललकार ओनके मुँह से निकलल कि देखवइया

http://bhojpurisahityangan.com

थरथराय गइलन। ठीक ओही समय जादू नियर लोग देखत हौ कि सव्जा गर्दन उठौले पुल पार कइके मोड़ के नीचे उतरके खड़ा हो गयल आउर शेख के घोड़ा के मुँह ठीक साहु के एक्का के पीछे सटल हौ। अल्लर साहु कूद के सव्जा के गरे लपटाय गइलन। वाकी वाह रे शेख! ओही शान से एक्का से उतर कर आगे वढ़लन। पहिले सव्जा के पास जाके ओकर पीठ थपथपा के सावासी देहलन औ फिर जाके साहु के गले से लपट गइलन। गफ़ूर आ रहमान भउचक्का होके देखलन कि दूनो दुढ़वन के आँखी में से पानी वहत वाय। पीछे पीछे मोटर से आवे वाले वतउलन कि गहरेवाजन के चाल घटा में ४० मील रहे।

दुसरे दिन रहमान के भाई के यहाँ शेख के दावत भइल। शेख और अल्लर साहु जव पहिले के गहिरेवाजी के एक एक किस्सा सुनावे लगलन त पुरनियन के मुँह से निकलल कि अव त ऊ दिन सपना हो गयल, लेकिन जवान औ लड़िका भले कुछ ना वोललन, वाकी ओनकर मुँह देखले ईहे वुझाय की ई लोग पतियाये वदे तइयार नइखें। शेख और साहु में जव धर दुआर आ लड़का छेहड़ के वात होवे लगल त शेख कहलन कि अल्लाह के फजल से सव त निवटाई देहले हई, वस एक विटिया के हाथ पीयर करेके वाकी वा। साहु छुटते कहलन कि शेख हमहूं के एक ठे सुग्घर पतोह के साध वा। एतना कहके साहु जव रहमान की ओर ताक के मुसकियाय देहलन त रहमान त लजाय गइलन वाकी शेख के चेहरा खिल उठल।

http://bhojpurisahityangan.com

कहाउत पुरान हो गयल

रेकसा वालनके त सवही दबेर देला। रेकसा पै चढ़ेवाली सवरियो, आउर आगेसे चाहे पीछेसे सग्गड़ ढकेलत आवत बेलदारो। सवारी त एह वदे घुरक देले कि ऊ पइसा देले। सग्गड़वाले बेलदार गरियाय तक देवेमें एसे तनिको ना हिचिकिचातन कि ऊ जानलन कि सग्गड़से तनिको छुआते रेकसा छुई मुई मतिन लुड़ियाय जाई, आउर अकेल दुव्वर रेकसावाला ओह मुसक मोढ़ा वालनके आगे मुहों खोलेके हिम्मत ना कय पायी। "केराके ठिकरवे चोख" होला। आज के जमानेमें जव पुलिस कप्तानों के घुरकात देर नाहीं लगत, पुलिसके सिपहियो रेकसाके चाडी पै छड़ी पीटत पीटत रेकसावालेके पिठियोपर दू छड़ी धै देव आपन वइसने हक समझेला जइसे पहली तारीखके तनखाह लेव। वाकी अवकिये ठीक कुआरके पुन्नमासी के दिन मेंदागिनके वड़का चौराहापर जव एक ठे अदमी एक रेकसावालेके गोड़ेपर गिरके चिरौरी करत देखायल त रामजी वावूके अचकचाय जायेके पड़ल। रामजी वावू शहरके मानल जानल लोगनमें समझल जालन। हाकिमों हुकुममें ओनकर पहुँच औ जोर केहूसे छिपल नाहीं रहल। देस दुनिया भी मजेमें देखले हउवन आउर सुभावोमें दया के कमी नाहीं हौ। गरज पड़लेपर गदहाके वाप वनावत त वड़े-बड़े लोगनके रामजी वावू देखले रहलन वाकी वीच चौमुहानीपर रेकसावालेके गोड़े गिरके केहू रिरियाय सकला, ई वात खाली ओनही वदे नयी ना रहल, वलुक उहाँ जेतना लोग रहे सवकर आँख ओहरे खिचाय गइल।

http://bhojpurisahityangan.com

रेकसा वालेके गोड़ छानके रिरियायेवालेके बेमारीसे थेथर देहिये ओकरे लचारीके उघारेवदे काफी रहल। उमिर त पैंतालिसके आसैपास रहल होई, बाकी ओकर समउरिया ओसे दस पन्नरह बरिस छोट जरूर लउकत होइहें। सूरदासके कारी कमरी पै भले दूसर रंग न चढ़त होय, बाकी ओ अदमी के गाढ़ सांवर रग के पियरई औ सफेदी छोप लेहले रहल। देहें पै के कपड़ा लत्ता देखलेसे एमें कउनों सक ना रहल कि ऊ जाँगरके हारल मजूर हौ। हाथमें एकठे चवन्नी लेहले ऊ रेकसावाले से फेर गिड़गिड़ायल—"इहैं बचल बाय भइया" पहुँचाय द बड़ा पुन्न होई। पौरुख थकल ना होत त काहें ई दिन देखे के पड़त। जनम लेके दुनिया त देख लेहली। अब कासी में मरके सरग देखेके हियाव नाहीं रह गयल। पहुँचाय देता त मरै के बखत एक बार ओ कोठरियो में फिर रोइ लेइत, जउनेमें जिनिगी के हमार पहली रोआई सुनके माई बाबू निहाल हो गयल रहलन।

रेकसावाला गँवइयेके रहेवाला रहल। ओहूके देखले इहे बुझात रहल कि दिनरात हाड़ ठठउले पै भी सुबेवत पेटौ भरेके डउल नाहीं लगत। एक त देहीं से अब्बर रहलेसे ढेर कमइयो न रहल होई, दुसरे गाँवेके न जाने केतना बोझो ओके चँपले रहल होइ। रेकसावाला त ई कब्बों सोचलहू न रहल होई कि ओहू एइ लायक बाय कि केहू ओकर गोड़ धरी। ऊहो बीच बजारके चौमुहानी पै। ऊ हकबकायल एक टक्के देखत रइ गयल। थोड़ी देर ले त मुँहवै ना खुलल। न जाने कउने धियानमें ऊ पड़ गयल। फिर बहुतै धीरे से बस एतने मुँहसे निकलल—"आवा बइठ जा।"

ऊ रोगीके पीयर चेहरा पै एतना सुनते जइसे लाली दउड़ गइल। हुमुकके ऊ चवन्नीवाला हाथ रेकसावाले के ओर उप्पर उठाय देहलेस। रेकसावाला देखलेस औ पहिलहीं जइसन धीरेसे कहलेस—"एके अपनही पास रख ला।"

http://bhojpurisahityangan.com

पँजरवें ठाढ़ एकठे मेहरारू ओह अदमीके हाथ थामके रेकसा पं वइठा देहलेस औ चारो ओर जुटियाइ गयल लोगनके ओर ताकके कहलेस "अस्पतालमें भरती होवे वदे आइल रहलन, बाकी उहाँ केहू सुनही वाला नाहीं हौ।" तनीसा सांस लेके ऊ फिर अपने मनवे बोल उठल—"गरीबनके भगवानो के इहाँ पूछ नाहीं होत त आउर कहाँ होई ?"

रामजी बाबूसे नाहीं रह गयल। ऊ आगे बढ़के पूछलन—तूँ अस्पताल में भरती होवे चाहला।"

"एही वदे त इहाँ आइल रहली सरकार," ठंडा मनसे ऊ कहलेस।

"तोहार घर कहाँ हौ।" रामजी बाबूके दूसर सवाल भयल।

"सारनाथ से सटलै।"

रामजी बाबू अब समझलन कि ऊ अदमी रेकसावालेके गोड़े पं काहें लपटायल रहै। कउनो रेकसावाला सारनाथ जाये वदे एक रुपया से कम न लेत। औ उहाँ जायेवालेके विसात चवन्नी से उप्परके ना रहे। सरीरके ऊ हाल रहे कि दमो परग चलले पं भहराय जायेमें कउनो सक नाहीं रहल। रामजी बाबू तनी देर कुछ सोचलन। ऊ रेकसाके छतरी पं हाथ धैके ठाढ रहलन, एसे रेकसओ रूकले रहल। फिर ऊ कहलन—"चला तोहके अस्पतालमें भरती करा देई।"

रेकसावालेसे रामजी बाबू रेकसा घुमायके अस्पताल चलेके कहलन। जब रामजी बाबू छतरी परसे हाथ हटायके अपने बदे दूसर रेकसावाले के बोलउलन त ऊ मेहरारूओ, जवन ओ अदमीके हाथ धैके रेकसा प वइठवले रहल, रेकसा पं वइठ गयल। अब रामजी बाबू इ हौ समझ गइलन कि ऊ मेहरारू अपने सँवाग के सथही आइल हौ। दूनो रेकसा अस्पताल पहुँचल। रामजी बाबू अपने रेकसावालेके पइसा देके, जब दुसरके के पइसा देवे लगलन त ऊ नाहीं लेहलेस। ऊ रामजी बाबू के

http://bhojpurisahityangan.com

हाथ जोरके कहलेस—"वाबू ! आप वड़ अदमी होके जव गरीव वदे एतना तकलीफ उठावत हई त का हम अपने भाईके एतनो नाहीं कय सकित।" रामजी वाबू ओके तकते रह गइलन औ ऊ रेकसा घुमायके ओह ओर वढ़ गयल, जेहर दू ठे सवारी खड़ी रहल।

रामजी वाबू ओ रोगीके लेके सीधे वड़का डाक्टरके इहाँ गइलन औ डाक्टरसे ओकर हाल वतायके भरती कय लेवेके कहलन। रोगीके देखेके पहिले डाक्टर साहव मुसकियायके रामजी वावूसे कहलन—"पखंडी पगला सालिगराम अव वुढ़ाय गयल, जे सहरके सज्जे लवारिस रोगिनके उठायके अस्पताल पहुँचाय जात रहल।" "सालिगरामके वरोवरी केहू ना कय सकत डाक्टर साहव," रामजी वावू कहलन, "ओनकर जगह खलिये रही।"

डाक्टर साहव रोगीके जाँच कयके रामजी वावूसे कहलन—"एनके त अनीमिया हो गयल हौ। लीवर एकदम्मे खराव हौ। हम भरती त कय लेत हई, वाकी एह रोगीके खून चढ़ाइव जरूरी वा।"

रामजी वावू जइसे पहिलहींसे सोचके वइठल रहलन—"ऊ कुलके जुगाड़ हो जाइ डाक्टर साहव।" छुटते रामजी वावू कहलन।

डाक्टर साहव रोगीके भरती करेके टिकट वनावे वदे जव नाँव पूछलन त रामजी वावू रोगीके ओर तकलन।

"परभु" रोगी आपन नाँव वतवलेस।

परभू वार्ड में भेज देवल गइलन। रामजी वावू के कहले से परभूके असपतालेसे खायेके मिलेके भी हुकुम हो गयल। रामजी वावू जातके पाँच ठे रुपया परभूके देवे लगलन। रामजी वावू के फिर अचकचायेके पड़ल जव ऊ देखलन के चौमुहानी पं रेकसा वालेके गोड़ छानके रिरियायेवाले परभूके हाथ आगे नाहीं वढ़त हौ। परभूके चेहरा पं ऊ एक अजबे उतार देखलन।

http://bhojpurisahityangan.com

"दुखमें सकुचायेके काम नाहीं हौ, नीक भइले पै कमायके लउटा दीहा।" ई कहत रामजी वाबू परभूके खटिया पै नोट रखके बाहर चल गइलन। जात जात विहान फिर आवेके कहत गइलन।

परभूके खूनके जाँच दुसरइी दिन होय गयल। रामजी वाबूके डाक्टर बतलवन कि दू बोतल खून बदे पचपन रुपया चाही। रामजी वाबू संझाके रूपया जमा करेके कहलन। कहेके त ऊ कह देहलन बाकी ई सोच ओनके धै दवउलेसके रूपया कहाँसे मिली। रामजी बाबू न अमीरे रहलन औ न गरीबे। मजेके खातपीयत जरूर रहलन औ तनखाहो मजेके मिलत रहल, बाकी कुल नौकरिहन मतिन महिन्ना बीतत जेवा खलिये रहे। सोचत बिचारत ऊ अपने एकठे संगीके इहाँ पहुँचलन औ झूठसाँच बतिया के ओनसे साठ रूपया उधार माँग ली अइलन। अस्पताल के एकठे वार्ड ब्वाय डाक्टर औ रामजी वाबू के बात सुनत रहल। परभुओके उज्जर देंह ओकरे आँखीके अगवें रहे। चीनसे लड़ाईके वखत ऊ हो आपन नाँव खून देवे वालनमें लिखौले रहल। ओके अपने खूनके ग्रूपो इयाद रहल। रामजी वाबू जब संझाके रूपया जमा करैके कहके अस्पतालसे गइलन त ओके ई समझत देरी न लगल कि रामजी वाबूके हाथ एह वखत खाली हौ। ऊ रामजी वाबू के जानत रहल। ऊ इहो जानत रहल कि आनके जेवा में रूपया रहल होत त निकासके कुरय देत ओन्हें देरी ना लगत। ऊ वार्ड ब्वाय डाक्टरके पँजरे जायके कहलेस—"सरकार परभू बदे हमार खून ले लेवल जाय। हमार औ एनकर खून एवके ग्रूपके हौ।"

डाक्टर साहव भौंचकाय गइलन, बाकी जब ऊ वार्ड ब्वायके ओर तकलन त ओकरे कहले औ चेहरामें तनिको फरक ना पउलन। डाक्टरके मनके बात बूझके वार्ड ब्वाय कहलेस—"सरकार ई अपने बिरादरियेके हउवन।"

http://bhojpurisahityangan.com

संझाके रामजी वाबू रूपया लेके अस्पताल अइलन त देखलन कि परभूके खटियाके नगिचहे ठाढ़ कयल छड़पर वोतल उलटके टाँगल हौ औ ओम्मनसे एकठे पतीलसी पाइप निकलके परभूके वाहींमें लगावल हौ। रामजी वाबूके ई देखके वड़ा अचरज भयल कि परभूके खून देवे वदे रूपया के जमा कइलेस। ऊ सोझे डाक्टर साहवके इँहा गइलन त मालूम भइल कि परभूके विरादरीके एकठे वार्ड ब्वाय आपन आधा सेर खून ओही तरे देहलेस हौ। डाक्टर जव पँजरवे ठाढ़ वार्ड ब्वायके ओर इसारा कइलन त रामजी वावू मुँहसे त कुछ ना कहलन, वाकी ओनकर मन कइलेस कि ओह वार्ड ब्वायके गोड़ धैले। अव एक्के वोतल खूनके आउर जरूरत रहे जौने वदे कुल तीस रूपया जमा करेके भयल।

परभूके ओर रामजी वावू के एतना नेह देखके अस्पतालके छोट वड़ सभै ओनकर पूरा खियाल रखे लगलन, जेसे थोड़िके दिनमें परभूके चेहरापर फिर सँवरई लउट आइल। अस्पतालसे छुट्टी भइले पै परभूके रामजी वावू अपने घरे ले गइलन। अव जायके रामजी वावू के मोका मिलल परभूके घरे दुआरेके वारेमें पूछेके।

परभू जवन वतउलन ऊ इ रहल कि परभूके वाप द्वारिका सिंह अपने समयमें वावू साहव कहात रहलन। वावू द्वारिका सिंह के मरते ओनकर पट्टीदार परभूके वोलाय के कहलन कि "गोंइड़वाला चारो विगहा खेत तोहार वावू हमरे इहाँ तोहरे वियाहे के बखत दिरिस्ट वन्दक रख देहले हउवन। अव कागदके मियाद वीतत हौ, ऐसे ओकर कउनो निपटारा कै के वापके रिनसे मुकती पायजायेके चाही।"

वाप के जीयत परभू कब्बों करजा के वात नाहीं सुनले रहलन, वाकी ऊ धूमधाम ओनके आँखी के आगे नाच गयल, जवन ओनके वियाहे में द्वारिका सिंह के धूम मचाय देहले रहल। परभू के कउनो

http://bhojpurisahityangan.com

रस्ता नाहीं देखायल, सेवाय एकरे के चारो बिगहा खेत बाप के करजा में पट्टीदार के हवाले कय दें। गाँवे के रमेस्सर साहु ओ खेतन बदे ढेर रूपया देवे बदे तइयार रहलन, बाकी पट्टीदार के ई बात परभू के जम गयल कि टकुरे के खेत बानया के हाथ में न जाये के चाहीं। गोंइड़ के चारो बिगहा निकल गइले से बचल पाला के अढ़ाई बिगहा से पेटो नाहीं भर सकत रहल। पेट के जुगाड़ में परभू के ठाकुर शिवलाल सिंह के कारखाने में नौकरी करे के पड़ल। ओह कारखाने में मजूरी कम्मे मिले औ काम एतना करे के पड़े कि नसनस चरचराय जाय। बाकी परभू के ई सन्तोस रहे कि अपने भाइये बिरादर के नौकरी हौ, आन के नाहीं।

परभू अपने के एक बात में भागवान मानत रलहन कि ओनके एक्के ठे लड़िका हौ। केची पेची के किचाइन से ऊ बचल रहलन आउर ईहो भरोस रहल कि पितरपख में पुरखन के उपवासो कयके लउटे के ना पड़ी। परभूवो के मन में कन्यादान के लालसा जरूर रहल। जेके ऊ एकठे पड़ोसी के बिटिया के बियाह में पूरा कइलिन।

ओह दिन दूनो परानी दिन भर ओ पाँच बरिस के लड़िका के लेहले बइठले रह गयल, जेह दिन ओके बोखारे के साथे खोखियो आवे लागल। दिन रात में न जाने केतना खरबिरइया लड़िका के दिहल गयल बाकी जीव तनिको हलुकायल नाहीं। दू दिन बैदो जी के दवाई भइल, बाकी मरज गढ़ुवाते गयल। हार मान के सहर के डाक्टर के ईहाँ गइलन। डाक्टर लड़िका के देख सुन के कहलन कि एकर साँस लेवे के नली फँस गइल हौ। डाक्टर एकठे सूई लगावे के लिख देहलन, जेकर दाम चौवीस रूपया रहल। चौवीस रूपया सुन के परभू के काठ मार देहलेस। भागल भागल कारखाने के मुनीब जी के ईहाँ गइलन औ आपन गरज सुनाय के तीस रूपया अगता मँगलन। मुनीब जी कहलन कि मालिक त कोठी चल गइलन। कल अइहें त ओनसे कहि ह। बाकी परभू के त एक एक छन

http://bhojpurisahityangan.com

पहाड़ भयल रहल। ऊ हकसल पियासल ठाकुर शिवलाल सिंह के कोठी पै पहुँचलन। ठाकुर साहव वइठके में भेंटाय गइलन, वाकी अगता के नाँव सुनले खुनसाय के कहलन कि कारखाना के काम कारखाना में होला। परभू कहे चहलन कि लड़िका के जिनिगी के सवाल हौ, वाकी ठाकुर साहव विना कुछ सुनले घरे में चल गइलन। चारो ओर से फोफया होके जव ऊ मुँह लटकवले डाक्टरी में पहुँचलन त ऊँहा अपने मेहरारू के छाती पीट पीट फेंकरत देखते ओनके आंखी के आगे अन्हार छाय गयल।

ई बक्का से परभू के देंह जवन गिरे सुरू भइल ऊ नाहियें थमल। आखिर में एक दिन ऊहो आयल जव परभूवो रमेसर साहु के ईहाँ दू रूपया में थरिया गीरो रखके ओन्हें टेकाय के अस्पताल में भरती करावे वदे सहर अइलिन।

परभू कहलन—"जेके हम आपन खून समझली ऊहे दगा कइलेस।"

"जात के वैर। जात" रामजी वावू परभू के ढाढस वन्हावे वदे कहलन।

नाहीं भइया! ई कहाउत पुरान हो गयल, परभू कहते गइलन—अव त दुनिया में दुइये जात रह गइल। एक अमीरन के औ दूसर गरीबन के। अमीर अमीर के वुराई नाहीं करत आउर गरीव के भलाई गरीबे करेला।"

अराम कुरसी पै लेटल रामजी वावू के आँख मुनाय गयल। ऊ सोच में डूवल अपने मन में उठल एह सवाल के जवाव खोजे में गोता लगावे लगलन कि ओनकर आपन जात का हौ।

बासमती चाउर

"हरे, सुनले जा रे।"

आवाज सुन के भिखमंगा के गोड़ थम गयल। पहले त ओके कुछ आस बुझायल, वाकी घुमके देखले अइसन लगल, जइसे वोलावेवाला ओह वड़की कोठी के दुअरिये पै ठाढ़ हौ, जउने के पँजरवे से ऊ जात रहल। ऊ एके भरम समझलेस। रोजै त ऊ एहि कोठिया के ओरी से जाला। कव्वों त अइसन नाहीं भयल कि ओह कोठी के कउनो अदमी ओके वोलउले रहल होय। ऊ सोचे लगल कि आज एकादशी भै कउनो परव त नाहीं हो, जव कुछ कोठियन पै खैरातके नावे एकाध मुट्ठी अन्न या दू एक ठे नया पइसा कँगलनके वँटाला। वाकी ओह समय त कँगलनके चिचियाय के वोलावेके नाहीं पड़त। ऊ त खैरात वँटे वाले जगहों और दिनों के खूवै जानलन। ऊ अपनौ जानला औ उहाँ जुटै वाली कँगलनके भीड़ में ऊ खुदै रहला। वाकी ई कोठी, जउने में से वोलावल जाये के ओके भरम भयल, कँगलन के धियान में कव्वों ना आइल रहल।

ऊ आगे वढ़े चहलेस। तव्वे दोहरायके आवाज आइल। एह वार ऊ देखलेस कि कोठी के दरवान सोझे-सोझे ओहीके गोहरावत हौ। अवकी दरवान जोरसे कहले रहल—"अरे भिखमँगवाँ, तोहहीं के वोलावत हई। सुनात नाहीं हौ का?" अव तनिको सक सुवहाके जगह नाही रहल। वोलाहट ओही के रहल। ओकरे अलावा केहू दुसरेके नाहीं। काहें कि ओह समय ओह सड़क पै ओकरे सेवाय दूसर कउनो भिखमंगा नाहीं रहल। अइसनो कउनो अदमी नाही रहल, जेके देख के दरबान

http://bhojpurisahityangan.com

भिखमंगा समझ लेत या भिखमंगा कहके वोलावत। ओके पक्का हो गयल कि वोलउवा ओही के हौ। वाकी काहें ?

भिखमंगा कोठी के ओर वढ़ल त जरूर, वाकी दुइये परग जायके फेर ठमक गयल। ओकरे चेहरवै से बुझात रहल कि ऊ डेरायल जइसन हौ। ऊ निहुर के आपन गोड़ खजुवावे लगल। एही वहाना ओके सुझायल कि कुछ सोच ले। ऊ सोचे लगल कि ओसे कत्तों कौनो गलती त नाहीं भइल। वाकी अइसन कुछ ओके चेत नाहीं पड़ल। ऊ त अस्सी फुट चाकर ओह सड़कके दुसरकी ओरके पटरी से जात रहे। दरवान के त वाते दूर रहल, जवले दरवान ओके हाँक ना लगउले रहल, ओकर आंख कोठियोके ओर त नाहीं घुमल रहल। राती के पेटे के आग कइसे बुताई, ऊ त एही फिकिरमें थकल मानल अपने डहर लगल रहल। दिन भर जानल औ न जानल न जाने केतना घरे के चक्कर लगउले के वादो अन्न से ओकर झोली खलिये रहल। हाँ, ओकरे चिथरा जइसन कोट के जेवा में, जवन परसाल ऊ घूरे पै फेकल पउले रहल, कुछ नयका पैइसा जरूर रहल। एह मंहगी में अन्न के एक्को चुटकी दे देव गिरस्तनं के बूता के वहरे हो गयल हौ। दया मया वाले दू एक पइसा भले दे देत होंय। वाकी ओतना पइसा से एक्को जून क त ठेकान नाही हो पावत।

दरवान के तिसरकी अवाज पै ओके आगे वढ़ही के पड़ल। नगिचे पहुँचतै दरवान झड़झड़उलेस। झिड़की सुनत सुनत ऊ झिड़की के सुर औ झिड़कैवालेके चेहरो पढ़ेके माहिर हो गयल रहल। एम्मन ओसे कब्वों चूक ना होय। दरवान के झिड़की में कड़ूअई नाहीं रहल, ऊ ओर-हन मतिन बुझायल। भिखमंगा दाँत चियारके हँस देहलेस।

कोठियै से सटल सड़क के नरिया के ओर अंगुरी उठाय के दरवान कुछ देखौलेस। नरिया में वहत पानी के भित्तर उज्जर उज्जर कउनो चीज जमल चमकत रहे। दरवान वतउलेस कि ऊ चाउर हौ जवन

http://bhojpurisahityangan.com

मालिक वदे आयल रहै। रेकसासे उतारत वखत रेकसाके काँटीमें लगके वोरा फट गयल और सँभारत सँभारत एतना चाउर नरियामें गिरी गयल। दरवानके अंदाज से ऊ एक किलो से उपरे रहे, कम नाहीं।

अव भिखमंगाके कुछ समझे के वाकी नाही रहल। ऊ लपक के नरियाके पास पहुँच गयल। फटल वाही उप्पर सरकौलेस। झोली से कुँचायल, वाकी वड़ासा अलमुनियमके कटोरा निकालके घुटना मोरके काममें लग गयल। मुट्ठीसे उ चाउर निकालके अँजुरीमें कयके नरियाके पानीसे पखारै औ कटोरामें धय दे।

ओके ई तनिको ना जनायल औ एकर फिकिरो ना रहल कि ओही कोठिया में काम करैवाले कुछ वावू ओकरे पजरवे आयके ठाढ़ हो गयल वाटन। ओह वावुओ लोगन के धियान भिखमंगा से ढेर कटोरामें रखात चाउर के लम्वा लम्वा दनवै पै रहल, जवन नरियो के पानीमें धोवाय के आउर धप्प-धप्प उज्जर होके अइसन बुझात रहे जइसे जूही के कली डलियामें धरात होय। ऊ देहरादूनके वासमती चाउर रहल जवन आजकल तीन रूपिया किलो खोजले पै मुसकिल से मिल पावला।

http://bhojpurisahityangan.com

बहिन क हक

पांच सितम्वर १९६५ के रात के ८½ वजे राजेन्द्र औ सुधा अपने गाँव के घरे में ट्रांजिस्टर पर खवर सुनत रहलन। पाकिस्तान कश्मीर पै हमला कय देहले रहल। छम्व-जोड़ियाँ के इलाका में पाकिस्तानी सेना घुस आइल रहल। भारत क जवान जान क वाजी लगाय के दुश्मन के पीछे ढकेलत औ खदेड़त रहलन। आकाशवाणी से ओह दिन पहिली खवर ईहे सुनाइल कि भारत के सेना तीन ओर से लाहौर के इलाका में जवावी हमला शुरू कय देहलेस। राजेन्द्र औ सुधा के चेहरा खुसी से खिल उठल। एतने में आकाशवाणी भइल—'भारत के सेना के जवानन के छुट्टी रद्द कय देवल गयल। जवान लोग एही खवर के हुकुम समझ के अपने अपने यूनिट में तुरत पहुँच जाँय।'

राजेन्द्र झटके से उठ के खड़ा हो गयलन। सुधा भकुवाय के राजेन्द्र के मुँह ताके लगलिन। राजेन्द्र के जाये के पड़ी। अवहीं त अइले आठो दिन नाहीं भइल। वहिन के विदाई करावे वदे राजेन्द्र छुट्टी लेके आयल रहलन। वियाह के बाद ६ महीना सुधा ससुराल में रहलिन। राजेन्द्र के वड़ी मुश्किल से दू महीना के छुट्टी मिलल रहल। छुट्टी लेके ऊ सीधे सुधा के ससुराल गइलन और भाई वहन दूनो संगही घरे पहुँचलन। राजेन्द्र के छुट्टी ३१ अक्टूवर के खतम होत रहल। सुधा ई सोच के खुस भइलिन कि भइयादूज २६ अक्टूवर के पड़ी, जव वियाह के वाद के पहिला टीका ऊ भइया के कढ़िहैं।

राजेन्द्र सीधे मतारीके पास गइलन और कहलन कि हमें आजै रात के गाड़ी से जाये के पड़ी। मतारीके जइसे काठ मार गयल। सुधा भरल

http://bhojpurisahityangan.com

आँख लोहले राजेन्द्रके पीछे ठाढ़ रहे। कुछ देर केहू क कंठ ना खुलल। एतनेमें वाहर से आवाज आइल—'राजेन्द्र कुमार के तार हौ।'

राजेन्द्र वाहर निकल के तार लेहलन। फौज से वुलाहट के तार रहल। राजेन्द्र लौट के मतारी के चरन छू के कहलन - 'अम्मा, असीस दा कि तोहरे दूध के लाज रख के लवटीं।'

मतारी कुछ वोल नाहीं सकलिन। गला रूँधायल रहल औ आँख भरल। ऊ धीरे-धीरे राजेन्द्र क माथे पं हाथ फेरे लगलिन।

राजेन्द्र उठलन। विस्तर वाँध के तैयार भइलन। गाँव के स्टेशन पं रात के ११॥ वजे पसिंजर गाड़ी रुकेले। राजेन्द्र ओही गाड़ी से जाये के रहलन। खात पीयत ११ वज गयल। स्टेशन करीबे रहल। चलै के समय मतारी दही के टीका माथे पं लगाय के तन्ही सा दही राजेन्द्र के मुँहें में भी लगवलिन। सुधा घरे में से एक ठे थरिया ली अइलिन, जउने में आरती वरत रहल। थरिया में थोड़ी सा चाउर भी रहल। ऊ अँजुरी में अच्छत लेके भाई के माथे पं लगल दही के टीका पं चफनाय देहलिन औ काँपत हाथ से आरती उतार के जइसहीं गोड़ छूवे के लटकलीं, फफक के रोय पड़लिन। राजेन्द्र के आँख भरि आइल। ऊ वहिन के उठाय के आँस पोछलन औ मतारी के गोड़ छू के स्टेशन के ओर वढ़ि गइलन।

राजेन्द्र क वाप जव काशीवास पउलन ओह समय राजेन्द्र क उमिर नौ औ सुधा क पाँच वरिस रहल। राजेन्द्र क मतारी पन्द्रह वरिस से ई कच्ची गिरस्थी ढोअत चलल आवत हइन। राजेन्द्र क वाप रहवइया त गाँव के रहैं वाकी नोकरी के सिलसिला में ऊ वनारसै में वस गयल रहलन। जिन्दगी भर क ओनकर कमाई एक ठे मकान रहल, जेके शहर में वनवाय के ऊ जिनिगी भर करजा भरलन। मकान में तीन हिस्सा रहे। दुई में किरायदार रहलन औ एक हिस्सा में अपने रहत

http://bhojpurisahityangan.com

रहलन। गाँवों पर बाप दादा क छोड़ल कुछ खेतो रहल, जउने से साल में कुछ अनाजो के जुगाड़ हो जाय।

राजेन्द्र क मतारी बड़े करेजा क औरत रहैं। मकान क केराया औ गाँव से मिलै वाले अनाज क भरोसे ऊ राजेन्द्र और सुधा के पालत पोसत तेरह बरिस काट देहलिन। बाईस बरिस क उम्र में राजेन्द्र एम० ए० पास कइलन औ अठारह बरिस के सुधा इण्टरमीडिएट। राजेन्द्र पढ़ै लिखे के साथै खेलौ कूदौ में सबसे आगे रहलन। देखै सुने में भी सैकड़न में एक। ओनके घरे देखहरून के चक्कर शुरू हो गयल। ओनकर मतारियो चाहत रहलिन कि पतोह आ जाय त ऊ पहिला कुल दुख भुलाय जाँय। बाकी राजेन्द्र अड़ियाय गइलन। ऊ साफ कह देहलन कि जबले कमाये न लगब औ सुधा के बियाह न कय लेब आपन बिआह ना कय सकित।

१९६२ में चीन के हमला के समय फौज में भरती शुरू हो गइल। राजेन्द्र अखबार में पढ़लन कि पढ़ल लिखल जवानन क भरती सीधे सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट के दरजा पै होई। ऊ चुनाव में बइठलन औ चुनाइयो गइलन। मतारी सुनलिन त छाती पीटे लगलिन। बाकी आखिर में ओनके राजेन्द्र क ईहो जिद मानै के पड़ल। पूना में ट्रेनिंग लेहले के बाद सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र कुमार कश्मीर में सिवान के रखवारी बदे भेज देवल गइलन।

सेना में रहत भयल राजेन्द्र एक-एक पैसा जोड़ जोड़ के मतारी के पास भेजत गइलन। मतारियो गिरस्थी में से एक एक पइसा काट काट के जुटावत गइल। एह बीच सुधा बी० ए० पास कय लेहलिन। अढ़ाई बरिस क कतर ब्योंत से राजेन्द्र क मतारी एतना पइसा जुटाय लेहले रहलिन, जेसे पछिले फागुन में एक ठे अच्छा घर औ अच्छा बर सुधा बदे मिल गयल। सुधा बियाहै ससुराल चल गईलिन।

http://bhojpurisahityangan.com

सुधा के बियाहे के बाद राजेन्द्र क मतारी के सहर क घर काटे लगल। ऊ गाँवे के घरे चल गइलिन। राजेन्द्र के घरे दूसर कोई मरदाना त रहल नाहीं. जे सुधा क विदाई कराय के ली आवे। बड़ी मुसकिल से राजेन्द्र के दू महीना के छुटटी मिलल औ ऊ सुधा के विदा कराय के घरे ली अइलन। राजेन्द्र के गाँवे के घर एक बार फिर गुलजार हो गयल। ओन्कर मतारी बेटवा-बिटिया के संगही पायके जुड़ाय गइलिन। अब ओनके मन में फिर से पतोहू के टीस कुरेहै लगल। दू एक लड़कियो ओनके निगाह में रहलीं। ऊ राजेन्द्र से बतियावे क मोका खोजते रहलिन, तबले देस के गोहार राजेन्द्र के हाजीपीर दर्रा खींच ले गइल।

राजेन्द्र के गइले के डेढ़ महीना बाद ठीक धनतेरस के दिन राजेन्द्र के घरे सेना से आइल चिट्ठी से ई खबर मिलल कि सेकण्ड लेफ्टिनेण्ट राजेन्द्र कुमार के पता नाहीं चलत हौ। राजेन्द्र क मतारी कटल ऊख मतिन भहराय गइलिन। सुधा के त जइसे सकता मार गयल। सज्जे गाँव के मरद मेहरारू राजेन्द्र के दुआरे बटुर गइलन। सबकर चेहरा झुरायल रहे। गाँव के मेहरारू घरे में जाय के मतारी बिटिया के सँभार करे लगलिन। पट्टीदारी के दू मेहरारू रातभर ओंही रहके ऊ लोगन के देखभाल कइलिन। दीवाली के दिन गाँव के लोग बटुर के तय कइलिन कि अबकी दीया ना बारल जाई। सुधा ई खबर पाइके बटोर में पहुँच गइलिन। सुधा के देख के ढर लोगन के आँख से पानी गिरै लगल।

सुधा गाँव के प्रधान से हाथ जोड़ के कहलिन—'काका दीवाली पै दीया बारे के मत रोका, अइसन कइले भइया के अशुभ होई।' सुधा क आँख औ गला दूनो भर आइल।

"ठीक कहत हऊ बिटिया। हमार भूल रहल। हमार राजेन्द्र हम-हनों के उमिर लेके जुग-जुग जीयें।'—गाँव प्रधान सुधा से कहके गाँव वालन के ओर घुमलन—'गाँव में दीया जरावल जाई; बाकी पाँच पाँच

http://bhojpurisahityangan.com

से ढेर ना। औ एसे जवन पइसा बची ऊ ओही काम में लगी, जइसे वदे हमार राजेन्द्र जूझ रहल वाटन।'

अपनो घरे सुधा दीवाली के पाँच ठे दीया जरउलिन औ तुलसी के चउरा पै दीया धरत धरत गंगा जमुना का धार ओनके आँखी से वह चलल। ओनके आँखी के आगे तुलसी मैया और भीतर राजेन्द्र भैया।

दीवाली के तीसरे दिन भैयादूज आ गइल। एह दिन वदे सुधा के मन में वड़ी साध रहल औ राजेन्द्र के मन में हौसला। सुधाके एक्के भाई औ राजेन्द्र के दुलरूई सुधा। सुधा के रात भर नींद नाहीं आइल रहल। रोवत-रोवत आँख फूल गइल रहल। वी० ए० पास सुधा कुछ सोच ना पावत रहें कि का करे के चाही। जव भैया नाहीं त भैयादूज केकरे वदे।

"सुधा दीदी, सुधा दीदी"—अवाज देत पड़ोस के पार्वती आइल।

'आवा पार्वती, भउजी अवकी दीवाली पै नाहीं अइलिन का,'—सुधा अपने के सँभारत पार्वती के दुलार से वोलउलिन। पार्वती क भउजी वनारस में लड़किन क स्कूल में पढ़ावत रहलिन, वाकी हर तिहवार के गाँव जरूर आवें।

'अवकी नाहीं अइलिन दीदी! ओनके स्कूल के सव लड़किन औ बहिन जी लोग आज मुगलसराय जाय के ओहर से जायेवाले सेना के जवानन के टीका कढ़िहैं।'

सुधा चौंक पड़लिन। ओनके आँख के आगे फौजी वर्दी पहिनले राजेन्द्र के तस्वीर घूम गइल। फिर ओनकर धियान गयल वारह वजे दुपहरिया के ओनके गाँव के स्टेशन पै रुके वाली पसिंजर के ओर। जव ऊ राजेन्द्र के साथ इहाँ अइलिन त ओहू गाड़ी में कुछ फौजी रहलन।

http://bhojpurisahityangan.com

सुधा गोधन पूजा के तैयारी में लग गइलिन। ओनके चेहरा पै जौन उदासी डेढ़ महीना से छवले रहल, ऊ न जाने कहाँ हेराय गइल। सुधा के देखके अइसन बुझायल जैसे राजेन्द्र नहाये गयल होंय औ सुधा टीका काढ़े के तैयारी में लगल होंय। पूजा बारह बजे खतम भयल। सुधा थरिया सजावे में लग गइलिन। ओनकर मतारी देखत रहलिन, बाकी कुछ बोललिन नाहीं। ऊ नाहीं समझ पावत रहलिन कि सुधा के अचानक का हो गयल हौ। थरिया सजाय के सुधा जब मतारी के इहाँ गइलिन त ऊ मुँह ताके लगलिन। सुधै बोललिन—'अम्मा! भैया के टीका काढ़े जात हई। भैया एही पसिंजर से जात होइहें।'

सुधा के मतारी के आँख छलछलाय गइल। ओके बिना पोछले ऊ कहलिन—'पगलाय गइल हई सुधा, पसिंजर में भैया कहाँ होइहन।'

'चला अम्मां तोहहूं देखला। पसिंजर में जरूर होइहें।'—ई कहत सुधा मतारी के हाथ धैके उठाय लेहलिन औ अपने थरिया लेके स्टेशन के ओर बढ़ चललिन। कुछ समझ में न अइले पै भी मतारियो पीछे-पीछे चल पड़लिन।

स्टेशन पर पसिंजर के रूकते सुधा गाड़ी के डब्बनमें झाँके लगलिन। कई डब्बा देखले के बाद भी राजेन्द्र के कत्तों ना देखलिन। सेकण्ड क्लास के डब्बा पै पहुँच के सुधा देखलिन कि नौछटिया उमीर के एक फौजी अफसर ओम्मे लेटल कुछ पढ़त हौ। सुधा डब्बा खोलके भीतर गइलिन। औ फौजी अफसर से कहलिन—उठा भैया टीका काढ़ देईं।'

सुधा के पीछे ओनकर मतारियो डब्बा में पहुँचलिन। ओनके अइसन बुझायल जइसे ओनकर राजेन्द्र सामने हौ। ओहे उमिर, ओहे रंग औ वइसने वर्दी।

उनहूं के मुँह से निकल पड़ल—'बइठ जा बेटा, गाड़ी इहाँ थोड़िकै रुकेले।'

http://bhojpurisahityangan.com

फौजी अफसर उठके बइठ गयल। सुधा माथे पै रोरी के टीका लगाय के अच्छत लगउलिन। फिर माला पहिनाय के जब गोड़ छूये के झुकलिन त अफसर लजाय के गोड़ खींचे लगल। सुधा के मतारी बोल पड़लिन—'छोट बहिन टीका काढ़ के भाई के गोड़ छुअलिन बेटा।'

सुधा गोड़ छूके पाँच ठे चना देहलिन, जेके ऊ अफसर पानी से घोंट गयल। ओकरे बाद सुधा मिठाई आगे रख देहलिन। मिठाई खाय के ऊ अफसर दस रुपया के नोट सुधा के ओर बढ़ाय के कहलेस—'बहिन एह समय सफर में कुछ पास में नाहीं बाय।' अगिले भैयादूज पर जीयत रहब त तोहार हक देदेब। आपन पता बताय द। एतना कहत-कहत अफसर लड़िकन मतिन फूट के रो पड़ल। सुधा औ ओनके मतारियो के आँखि भींज गइल। गाड़ी खुलत-खुलत अफसर एकठे कार्ड देके मतारी के गोड़ छुअलस।

कार्ड पै सुन्नर अच्छर में छपल रहल 'रामप्रकाश, सेकण्डलेफ्टिनेण्ट, राजपूत राइफल्स।'

पन्द्रह दिन बाद डाकिया सुधा के नाम एकठे चिट्ठी दे गयल। लिफाफा पै राजेन्द्र के लिखावट देखके सुधा के करेजा धड़के लगल। खुशी औ डर दूनो के मारे सुधा के हाथ काँपे लगल। चिट्ठी लेहले मतारी के पास जायके खोललीं। चिट्ठी राजेन्द्र के लिखल रहल। तारीखो टटकै रहै।

'अम्मा! भैया के पता लग गयल। उनही के चिट्ठी हौ।' सुधा के आंख मारे खुशी के छलछलाय आइल। मतारी तुलसी के चौरा के माथ झुकउलिन।

बाकी चिट्ठी पढ़त-पढ़त सुधा के जइसे लकवा मार गइल। भइयादूज के दिन फौजी आफसर के देवल कार्ड ओनके आँख के आगे नाच गयल। रामप्रकाश सेकंडलेफ्टिनेंट, राजपूत राइफल्स।' कुछ कह

http://bhojpurisahityangan.com

ना सकलिन। चिट्ठी मतारी के आगे फेंक के ओनके नटई में दूनो हाथ डाल के सुसुकै लगलिन।

राजेन्द्र लिखले रहलन—'हम दुश्मन के कैद में पड़ गइल रहली। दस दिन मोर्चा पै दुश्मन के खेमा में बन्द रहे के पड़ल। ग्यारहवें दिन दुश्मन हमरे सीमा में चोरी से घुसे के कोसिस कइलेस त हमरे देश क सेना ओके अइसन चहेट के लखेदलस कि सब समान के सथही हमरे अइसन कैदियनों के छोड़ के उनहन के भागे पड़ल। हमें छोड़ावे वदे हमार जिगरी साथी सेकंडलेफ्टिनेंट रामप्रकाश आपन बलिदान चढ़ाय देहलस। उनहीं के टुकड़ी दुश्मनन के खदेड़ के हमें कैद से छोड़उलेस। रिहाई हमें बड़ी मँहगी पड़ल।'

http://bhojpurisahityangan.com

चेयरमैनी क चुनाव

रामूके मेहर भले ओनके निखट्टू कहत रहल, वाकी वड़-वड़ लगावे वालनके देखत-देखत चपरगट्टू कयके लट्टू मतिन नचाय देव ओनके वाँये हाथ क खेल रहल। टाउन एरिया क चेयरमैनी क चुनावमें जव निरहू साव के मुकाविले में रामू क नाँव सुनायल त लोग पहिले त एके उप्परफट्टू मजाक समझलेस, बाकी जव वोट गिनाये लगल त निरहू साव क वजरबट्टू मतिन मुँह देखही लायक होय गयल। ५७० वोट में से कुल डेढ़ सौ निरहू सावके मिलल। वाकी कुल वोटर वोट के परचा पै रमाशंकर तिवारी उर्फ रामू के नाँव काट देहले रहलन। निरहू साव केतनो दोहाई देहलन कि सरकार जव वोटर रामूके नाँव काट देहलन त ऊ कइसे चुनल जइहें, वाकी अफसरके बुद्धि पै त जइसे पत्थर मार गयल रहे। ऊ रामू के चेयरमैन वनाय के जीप पै धूर उड़ावत टसक गयल। निरहू साव हाय मार के वइठ गइलन। अव ओनके याद आयल कि चुनाव में २४७३ रुपिया १३ पैसा खरच हो गयल।

निरहू साव क दादा वटोही के मुँह, ओह समयके एक्को अदमी नाहीं देखले रहे, बाकी निरहू साव रईस खानदान के सपूत कहात रहलन। निरहू साव के बाप ओनके लड़िकईमें रुपया कमायके मंतर बतावत बेरा कान में धीरे से इ हौ बतौले रहलन कि हमार बाप ताड़ीखाने के बहरे पकौड़ी बेचत-बेचत मरेके पहले ताड़ीके ठीकेदार हो गयल रहलन। अपने बापके बारेमें निरहू साव जनतै रहलन कि सूखाके समय चोटा क गोदाम खोलके ऊ केहू गरीव गुरवाके मरै नाहीं देहलन। अइसन न हो जाय कि चोटासे गोदाम खाली हो जाय औ गरीब खइले विना मरै लगें, ऊ

http://bhojpurisahityangan.com

चोटा क डराममें मट्टी औ पानी मिलायके एक डरामके सवा कयदें। वजार औ आसपासके गाँव क लोग आजो याद कइके कहेलन कि निरहू सावक वाप मुराहू साव के दया न भइल होत त दयार में गरीव खोजले न मिलतन।

निरहू साव जवसे कुरताके उप्पर जवाहरकट वंडी औ गांधी टोपी पहिने लगलन लोग ओनके नेता कहै लगल। कउनो पार्टी से त ओनकर लगाइत नाहीं रहल, वाकी धीरे धीरे वजार क नेता ऊ अपने के समझे लगलन। टाउन एरिया क चुनावमें चेयरमैनी वदे खड़ा होवेके जव सज्जे बजारके लोग ओनके घेरलन त ऊ नाहीं ना कह सकलन। निरहू साहु पइसा खरचव औ माघ क महिन्नामें गंगा नहात्र दूनोके बेवकूफी समझें, वाकी चेयरमैनी वदे सौ पचास खरचदेव घाटा क सउदो नाहीं बुझायल। वाकी जव वजार क चार ठे लुहेंड़ा मिल के ओनके मुकाविले में रामू क खड़ा कय देहलन त निरहू साव अपने वाप क ई कहल भुलाय गइलन कि गारी औ गम खायलेव अच्छा होला। ऊ फाँड़ वाँध के लड़ै वदे तइयार हो गइलन।

वजार भर के पुरोहित गोवरधन तिवारी जव सुनलन कि ओनकर सपूत रामू चुनाव में निरहू साव के मुकाविले खड़ा हो गयल हौ त कपार ठोक लेहलन। वजारमें के अइसन हौ जे निरहू साव से दवायल न होय। गोवरधनो तिवारी के सालमें कथा पूजामें दू जोड़ा धोती, दसवीस रुपया औ तर तिहवार पै सिद्धाके गोटी रहवे कइल। वाकी रामूके एसे कउनो मतलव नाहीं रहल। रामू वदे घर धर्मशाला औ मठसे ढेर नाहीं रहल। न कउनो काम न कमाई। गहना गुरिया क के कहो ओनकर खरीदल एकठे लुगरियो ओनकर मेहर नाहीं जानत रहल। ऊ त ओनकर भाग नीक रहे कि गोवरधन तिवारीके एक्के ठे लाड़का औ एक्के पतोह। न ननद के किचकिच न देवरान जेठान क ताना मेहना।

http://bhojpurisahityangan.com

नामजदगीक परचा दाखिल भइलै पै निरहूसाव के वकील एतराज कइलन कि रामूके नाँव काट देहल जाय काहेंसे कि रामूके वाप गोवरधन तिवारीके नाँव टाउन एरिया क टिकस वाकी हौ। वाकी हाकिम एके नाही मनलेस। ऊ कहलेस कि रामू के नाँव टिकस वाकी होय त नाव काट देई। रामू क नाँव नाहीं कटायल। ओनके नाँव न जगह न जायदाद फटकचन्द गिरधारी, न लोटा न थारी। वापके जीयत रहेके फायदा ओह समय रामूके पहिली वार मालूम भयल। कचहरीसे वहरे अउते रामू सवसे हाथ जोड़के कहै लगलन कि—अव आप लोगन के हाथमें हौ हाकिम त हमार नाँव नाहीं कटलेस अव आप लोगन के ओके वचावे के वाय।

निरहू साव सुनते तड़पलन—"हाकिम नाहीं कटलेस त का वोटर छोड़ दीहें। आज त वच गयल वाकी चुनाव में तोहार नाँव न कटल त हमार नाँव वदल दीह।"

"अच्छा साव देखे के वाय कि केकर नाँव कटेला।" रामू तनी तिरछा होय के ललकरलन।

नाँव कटेवाली वात निरहू साव के लग गइल। ऊ दुआरे-दुआरे धरना देके कहे लगलन कि रामू अइसन वँहेतुआ क नाँव चुनाव में ना कटल त वजार के नाँव डूव जाई। रामू औ ओनकर सथियो सवसे ईहे चिरौरी करें कि केहू क नाँव नाहीं कटे के चाही। जइसे जइसे चुनाव के दिन नगिचात गयल लड़ाई नाँव कटले औ न कटले के हो गइल। निरहू साव के दुआरे हलुवाई बइठ गयल। वजार भर के लोगन के सबेरे के खर मिटाव से लेके रात क भोजन तक ओहीं होवे लगल। लोग दिन भर में तीन चार वार खाय के निरहू साव के भरोसा दियाय जाँय कि रामू के नाँव कट के रही। जइहा वोट पड़े के रहल ओह दिन निरहू साव के दुवारे भिनसहरे अइसन भीड़ जुटल जइसे वरात आइल होय। दिन चढ़ते

http://bhojpurisahityangan.com

निरहू साव के जय बोलत लोग ओनके पीछे पीछे पोलिंग स्टेशन पर पहुँचल। निरहू साव क नाँव ओटरन के अइसन नीक लगत रहल कि ऊ ई सोच के बेकल हो जाँय कि रामू क नाँव न कटल त निरहू साव बदे दूसर नाँवे खोजे के पड़ी।

ओट पड़ब बन्द भइले पं जब ओटन क गिनती बदे परचा सरियावल जाये लगल त निरहू साव क करेजा ई देख के दूना होवे लगल कि थोड़ बहुत छोड़ के कुल परचन पं रामू के नाँव पेंसिल चलाय के काट देवल गयल हो। ऊ हाकिम के ओर देख के अइसन मुरिकअइलन जइसे कहत होंय—"देखा, तू नाँव नाहीं कटला त का भयल, ओटर जब रामू क नाँव काट देहलन त तूँ का कय सकयला।"

बाकी हाकिम के धियान एहर नाहीं रहल। ऊ रामू क नाँव कटल परचन के एक ओर कय के गिनलन। पूरे ४२० भयल। फिर ऊ ओ परचन के गिनलन, जेपर निरहू साव के नाँव के आगे निसान बनावल रहल। ऊ १५० भयल। हाकिम हँसत भयल रामू के ओर हाथ बढ़ाय के हाथ मिलउलन औ ओनके चेयरमैन चुनाये के बधाई देहलन। हाकिम के चल गइले पं निरहू साव कपारे हाथ धै के ऊ खरचा के हिसाब जोड़े लगलन जबेन रामू क नाँव कटावे में लगल रहल। ओनके सन्तोष एतने रहल कि रामू क नाँव ४२० परचा पं कट गइले से ओन्हें आपन नाँव न बदले के पड़ी।

http://bhojpurisahityangan.com

गाँव के पैंड़ा में

वैदगी पास कइके जब प्यारेलाल मुगलसराय में दुकान खोलके बइठ गइलन त भगवान के दया से थोड़ि के दिन में ओनकर कारबार एतना त चली निकलल कि खाये पीये के कबनो तंगी ना रह गइल। भगवान ओनके हाथ में थोड़ा जसो देहले रहलन औ सुभावो ऐसन रहल कि भुलइलो एक बार आय गइले पर दुसरे बार काम पड़ले पै बिना कुछ सोचले बिचरले लोगन के गोड़ बैदजी के दुकान के ओर अपने बढ़ जाय। बैदजी पइसा कमाये बदे जरूर दूकान कइले रहलन, बाकी न त ऊ लालची रहलन औ न ओनके रोगी के फँसाय के पइसा दूहे के सहूरे रहे। ओनके ईहाँ आवेवाले रोगिन में न त सेठ साहूकार रहलन न त कउनो बड़का अफसर हाकिम। सरकारी नोकरिहन बदे त सरकारी अस्पताल रहबे कइल, जहाँ ओन्हें कुलिये दवाई मुफुते में मिल जाला। रेलवे के बाबू लोगन बदे अलगे आपन जुगाड़ रहे। ईहो लोग का करे बदे बैदजी के ईहाँ जातन। रह गइलन सेठ साहूकार लोग। ओनके घरे त लड़िकन के खोखियो अइले पै बड़का बड़का डाक्टर के ईहाँ चट दे नोकर दउड़ावल जाला। औ जब कब्बौं रोग के जड़ से दूर करावे बदे बैदगी दवाई के याद पड़े त दरियें बनारस में बड़के सास्त्रीजी लोगन के कमीं त रहल ना। तब्बौ बैदजी के ईहाँ भीड़ भाड़ लगले रहे। भले ऊ भीड़ अइसने लोगन के होत रहे जे महमूली अदमी कहल जालन, बाको ओह लोगन में एतना समुझ त रहबे करे कि बैदजी के कुछ न कुछ त देवे के चहबे करी।

http://bhojpurisahityangan.com

वैदजी मोगलसराय से एक टेसन पूरुब के एक गाँव के रहवइया रहलन, वाकी पढ़ाई लिखाई सहरे में सुरु भइल। ओनकर वड़का भइया कचहरी में पेसकार रहलन। ओनही के साथ रहके ऊ अरदलीवजार के प्राइमरी स्कूल से दर्जा चार अउर लन्दन मिसन से अंग्रेजी में मिडिल पास कइलन। एक दिन ऊ अपने भइया के साथ टाउनहाल में आर्य-समाज के जलसा देखे चल गइलन। ठाकुर तेजसिंह के भजन जब सुरू भइल त अइसन बुझाइल कि अब हिन्दुअन में तनिको आलस अउर ओंघाई नाहीं रह जाई। तेजसिंह के भजन त झकझोर के जगइवे कइलेस, व की जब स्वामी मुनेश्वरानन्द बोले लगलन त अइसन लगल जइसे गियानोंवाली अँखिया खुलि गइल। बस ओही दिन से वैदजी स्वामी दयानन्द के पक्का चेला बन गइलन औ अपने भइया से जिद कइके लन्दन मिशन के पढ़ाई छोड़ के गुरुकुल में पढ़े वदे कांगड़ी पहुँच गइलन। ई त ठीक से नाहीं जानित कि ऊहाँ कै बरिस लगल, वाकी ऊहाँ के इम्तिहान पास कइले पै ऊ आगरा के मुसाफिर उपदेशक महाविद्यालय में दाखिल भइलन। ऊहाँ ओनके संगही केदारोनाथ पढ़त रहलन, जे वाद में राहुल सांकृत्यायन कहे जाये लगलन। वैदजी वतावत रहलन कि केदारनाथ के कपारे पै वड़ी वड़ी जुल्फी रहे, जेके एक दिन हमहन ओनके सुतले में काट के खउरहा कइ देहली। केदारनाथ वहुत खुनसइलन औ खिझिअइलन, वाकी मुसाफिर विद्यालय में त ओन्हें माँग फारे के मौका फिर नाहिये मिलल। आगरा के पढ़ाई खतम कइके वैदजी लाहौर पहुँचलन अउर ऊहाँ उपदेस देवे के साथे साथ वैदक भी पढ़ लेहलन।

वैदजी अपने जिद से कांगड़ी पढ़े गइलन वाकी अवकी जब भइया के जिद भइल त ओनके लाहौर के उपदेसकी छोड़ के गाँवे लउटे के परल। घरे अइले पर जब हरदी लग गयल, त गरे में परल ढोल वजावे बदे मोगलसराय में दुकान खोल के वइठवो जरूरी हो गयल। बैदजी के घरेवाली क नाँव त लच्छिमी जरूर रहे, वाकी विस्नूजी वाली लच्छिमी

http://bhojpurisahityangan.com

के एमे तनिको सरोकार नाहीं रहल। हाँ, सीता औ सावित्री के कथा ऊ जरूर पढ़ें। कुल मिलाय के वैदजी मोगलसराय में सुखी रहलन। छोट गिरस्ती औ थोड़ खरच। ओह समय पाँच रुपया महिन्ना के घर में कउनो अंडस ना रहे। वहरी कोठरी में दवाखाना औ वइठका दूनो रहल। भीतर एक कोठरी औ एकठे ओसारा। ओसारा में खाये के वने औ कोठरी सुते वइठे औ सर समान रखे के काम आवे। आर्यसमाज में रहले से वैदजी अमलो से वचलै रहलन। एतनो वदे ओनके दिन भर रोगिन के ऐसन पैंड़ा देखे के होय कि कुल उपदेसकी धीरे धीरे भुलाय गयल। वाकी वैदजी के ईहाँ जेतना रोगी आवें, सवही के मांस खाये के औ नसा पीये के ऊ जरूर मना करे। कउनो कउनो रोगी के सन्ध्यौ करे के वतावें औ ओकरे साथे दुचार सलोक भी पढ़ के ओकर अरथो समुझाय दें। वैदगी वदे सलोक पढ़व त जरूरिये रहे, वैदोजी के एसे तनी सन्तोसो हो जाय। उपदेसकी के पुरान जिनिगी के ओन पै एतने असर त वाकी रहल। आउर सव त नून तेल लकड़ी के चक्कर में पड़ के अपने आपै उधिराय गयल रहे।

देस परदेस घुमले से वैदजी के रहन सहन औ खाव पीयव तनी महीन होय गयल रहल। ओनके देख के औ ओनके वोले वतियावे के ढंग से केहू ई ना कह सकत रहल कि ऊ गँवई के रहवइया हउवन। वाकी वैदजी हर अठवें दिन गाँवें जरूर जाँय। एही सुतार से ते ऊ अपने दुकान वदे मोगलसराय छँटले रहलन। गाँव से कुल तीन कोस। पैदलो जाये चाहे त कुल डेढ़ पौने दू घंटा के पैंड़ा। वाकी वैदजी हमेसा रेलगाड़ी से जाँय। एक बेर गाड़ी छूट गयल त एक्का कइके गइलन। गाँव गिराँव के लोग ई कुल देखि के ई समझै लगल कि एनके गहिरी आमदनो जरूर हौ। धीरे धीरे गाँव में वैदजी के गइले पर ठकुर सोहाती करे वालन के वटोरो ओनके ईहाँ होवे लगल। ई लोग कब्बौ कब्बौ कौनो अकाज वताय के वैदजी से कुछ माँगो जाँच ले, जेसे इनकार करव वैदजी

http://bhojpurisahityangan.com

आपन हेठी समझें। ई बात दूसर रहल कि बैदजी से उधार के नाँवे जवन कुछ लीहल जाय, ओके लौटावे के चेत ले जाये वालन के कब्बो ना पड़ल। बैदजी पहले त मारे संकोच के केहू से तकादा ना करें, बाकी धीरे धीरे ई चपलूसिहा ओनके एतना चढ़ाय देहलन कि केहू के कुछ देइ के ओसे माँगव ऊ अपने मरजाद के खेलाफ समझे लगलन।

उपदेसकी के बखत बैद्जी के कतों एक ठहर वइठे त सिराय ना। आज ईहाँ त कल ऊहाँ। बैदजी जहाँ जहाँ जाँय ऊहाँ एतनी खातिर वात होय कि हितइयो के खातिर ओकरे आगे झख मारे। सज्जे लोग हाथ बन्हले ठाढ़ रहें। खरमेटाव के हलुवा से लगाय के सूते के वखत के आँटावल दूध के वीच में केतना वार ओ का का खाये के परै, ओकर लेखा जोखा मुसकिल हौ। भरसक त बैदजी के आपन होलडालो न खोले के पड़े। लक्क दक्क विछौना ओनके पहुँचे के पहिलहीं से विछल तैयार रहे। चलत के दच्छिना ऊपर से। साल छ महीना में कतौं अइसहू जगह जाये के पड़ जाय, जहाँ खाये पीये औ रहे टिके के तकलीफ उठावे के पड़े। बाकी बैदजी आउर उपदेसकन मतिन कब्बो खुनसाँय ना।

मोगलसराय में जब पहिले पहल बैद्जी के गाँवे के एक जने ओनके ईहाँ भेंट करे गयलन त दूनो परानी अइसन खुस भइलन जइसे भगवाने आय गयल हउवन। बात ई रहल कि मुंशी शिवनरायन लाल के कचहरी से लउटत के कउनो काम से साँझ के मोगलसराय रुके के पड़ गयल। गाँवे जाये के संझावाली गाड़ी छोड़ देहले पर भिनसहरा चार बजे दूसर गाड़ी मिलत। शिवनरायन लाल अइसन मुंशी के बदे जाड़ा के रात लाटफारम पै काटव जिउ के देव होत। मुंशी अदमी के अगर ओ वखत बैदजी से भेंट करे के याद पड़ गयल त कउनो अचरज के बात नाहीं रहल। खातिरदारी कइसे कयल जाला, ई बैद्जी खूब मजे में जानत रहलन। मुंशीजी के अइसन आवभगत भइल कि ओनके पहिले वार के ससुरारी जाव याद आ गयल। मुंशीजी जब दुसरे दिन गाँव लवटलन त

http://bhojpurisahityangan.com

खाली अपने गाँव नाहीं, वलुक अड़ोस पड़ोस के दू चार गाँव में वैदजी के साही तवियत के चरचा होवे लगल।

वैदजी के ईहाँ होवे वालो मेहमानन के खातिरदारी के अइसन धूम मुंशीजी मचाय देहलन कि ओ रे बाद से ओनके अपने आउर पास पड़ोस के गाँवन के लोगन के मोगलसराय भयल आवत जात अदवदाय के गाड़ी छूटे लगल, औ लोग गंगा में पइठ के ई कहे के तइयार रहे कि वैदजी अइसन देवता के दरसन कइले विना, मोगलसराय से ऊ लोगन के गोड़े कउनो ओर नाहीं वढ़ पावत। पहिले त वैदजी के गाँव गिराँव के लोगन के अइले से वड़ी खुसी होय। वाकी जव दुई चार जने रोजे ऊहाँ हिरके सुरू कइ देहलन त धीरे धीरे वैदजी के नकदमो सुरू होवे लगल। जेतने अनाज में वैदजी के ईहाँ महिन्ना पार हो जात रहल, ओतना से त अव अठवारो विताइव मुस्किल होय गइल। घीउ अउर तरकारी के खरचा नाहीं नाहीं त तिगुना होइ गइल। वैदजी के दुकान औ वइठका त रैनवसेरा होइ गयल रहल, ओनके यहाँ धमकेवाले जाड़ो में अपने संगे ओढ़नो विछउनो ली आवे के जरूरत ना समझें।

जस जस दिन वितै लगल वैदजी के फजीहत वढ़ते गयल। वैदजी के गाँवें के ओर से एकठे गाड़ी राती के १२ वजे मोगलसराय पहुँचे, औ मोगलसराय से वनारस जाये वदे पूरे चार घंटा लाटफारम पर टहरान लेवे के पड़े। वनारसो से रात के ११ वजे गाड़ी मुगलसराय पहुँचे अउर गाँवे जायेवालो गाड़ी बदे ५ घंटा अगोरे के पड़े। ई दूनौ गड़ियन के यात्री धीरे धीरे वैदजी के ईहाँ पहुँचे लगलन। रोजे आधी रात के वैदजी के दुआर खटखटाये सुरू हो गयल। गाँव से आवेवाले त खाय पी के आवें, वाकी वनारस से लउटेवालन के कामकाज के भीर में खअहू के फुरसत ना मिले। ऐसने लोगन बदे लछिमी के आधी रात में दोहराय के चूल्हा फूंके के पड़े। उवजियाय के वैदजी एकाघबार मुड़ियाये चहलन तवौ जीव नाहीं बचल। मेहमान बातै वात में सुनाय दें कि वकील साहव

http://bhojpurisahityangan.com

एतना देर कै देहलन कि खाब पीयव छोड़ के भागल परायल आयके टेसन पर कइसहूँ गाड़ी पकड़ पउली। अब वैदजी का करें। वैदजी ओह दिन के सोच सोच रह जाँय, जइहा पहिले पहल नुंशी शिवनरायन लाल के अइले पं ऊ ओनके भगवानै समझ के खातिरवार कइलन। ओन्हे ई कहावत के मतलव अब खूब बुझाय गयल कि "बुढ़िया के मरले के गम नाहीं बा, जम के परचले के डर बा।" ऊहाँ त एकै जम के डर रहल— ईहाँ त कुलिये कुल्ग जबार जम मतिन ओनके घरे परच गयल रहल।

सरीर के कउनो ठेकान नाहीं रहत। आज नीक बाय त कलियें कउनो वियाध न घर दवाई, ई केहु कह नाहीं सकत। वैदजी के मेहरारू लच्छिमी के इन्फुलुजा हो गयल। वोखार एक सौ चारो डिगरी से उप्पर चढ़ गयल रहल। सज्जे देह वत्थत रहल आउर धीरे धीरे जइसे टूटल जात रहल। वैदजी के घरे दुइये परानी रहले से केहू तीसर न देखवइया रहे औ न घर गिरस्थी सँभारेवाला। सबेरे त लच्छिमी कुछ ना कहलीन। वोखार से अंगार मतिन भभकत देह लेहले कइसहू वैदजी वदे रोटी सेंक देहलिन, बाकी संझा के त ओनके देहें में तनिको सक्क नाहीं रह गयल। ई संजोगे रहल कि ओह दिन वैदजी के ईहाँ केहू के डेरा नाहीं पड़ल रहल। वैदजी रात के बजारे के पूड़ी के सहारे रह गइलन औ लच्छिमी बदे ओही से दूधौ गरमवा के लेहले अइलन। वैदजी मोट कपड़ा के एकठे टुकड़ा में बरफ लपेट के लच्छिमी के माथे पं धैके वोखार कम करे के उपाय में लग गइलन। वैदजी के मेहनत अकारथ ना गयल। रात के १२ वजत बजत बोखार १०४ से उतर के १०२ डिगरी हो गयल। लच्छिमी के देहिओं तनिक हलुक बुझायल त ऊ वैदजी से तनी अराम कय लेवे के जिद कइलिन। ओनकर बात मान के जइसहीं वैदजी अपने खटिया पं तनी ढरकलन, ओइसहीं दुआर के सिकड़ी खनखनाय उठल। वैदजी के करेजा पं जइसे केहू सील कूटे लगल। बाकी सिकड़ीके खनकब तवले बन्द नाहीं भयल जवले बैदजी उठके केवाड़ी

http://bhojpurisahityangan.com

खोल ना देहलन। बैदजी कुछ बोलें तवले ओनके गाँवके पड़ोसके रामदयाल अपने सात वरिसके बेलचट लड़िका के हाथ धइले खटिया पँ जायके फइल गइलन। बैदजी मुँह लटकवले कहलन कि घरेमें बेमार हो गइलेसे आज त हम वड़ा परेसानीमें पड़ल हई। रामदयाल वदे जइसे ई कउनो भारी वात ना रहे। छुटते कहलन—"का हरज हौ, खाये पीयेके कउनो इन्तिजाम करैके जरूरत नाहीं वा। खइले त हमहू नाहीं हई, वाकी हम्मे कउनो तकलीफ ना होई। ई लड़कवाके वा, तनी दाना गुड़ मिल जाई त ईहो सुत रही। दू चार घंटाके वात वाय कइसहूँ कट जाई।" बैदजी कुछ वोललन नाहीं। ऊ कपार धइले इहे सोचत रहलन कि वजारमें कउनों दुकान खुलल होय तो ऊँहेसे कुछ ई लोगनके खायेके खरीद ली आयीं।

वाप बेटवाके गलचौरे करत ओंही छोड़के बैदजी उठलन और जूता कुरता पहिन के कुछ पइसा लेवे वदे जइसहीं धरेमें जाये वदे गोड़ उठवलन भित्तरसे लप्पसे लवर उठल, जेकर अँजोर दुआरीमें भयल वैठको में पहुँच गयल। ऊ हड़वड़ायके भित्तर गइलन त देखलन कि लक्ष्मी आग वार चुकल हईं। बैदजी त काठ हो गइलन। ओनके ई समझत देर ना लगल कि घरे के इज्जतके आँच लगेसे वचावे वदे लक्ष्मीके अपने देहीं के आँच भुलाय गयल हौ। ऊ कुछ वोललन नाहीं चुप्पे आके वैठका में वइठलन।

रामदयाल त खायेके नाहीं रहलन वाकी खायेके वन गइलेपर एक्के वार कहलेपर उठके लड़िका लेहले चौकामें वइठ गइलन। तव ले तीन वजल आउर ऊ चार वजेवाली गाड़ी पकड़े वदे टेसन चल गइलन। जात-जात एतना कहत गइलन 'भइया! तोहरे नराज होवेके डरन ई हियावे ना पड़त कि मोगलसराय आयके इहाँके रस्ता वराय दे।' बैदजी कुछ ना वोललन। रात दू एक घंटा वाकी रहल बाकी वैदजी फिर खटिया पँ ना गइलन। सबेरे होते ऊ एकठे एक्का मँगायके जरसे तलफत

http://bhojpurisahityangan.com

लक्ष्मी के लेके रामनगर चल गइलन और ओनके ऊँहाके अस्पतालमें भरती करा देहलन। ओहदिन वैदजी बेखइले पियले तवले रामनगरमें वौंड़िअइलन जवले अपने सुतारके एकठे घर ना ठीक कै लेहलन। दुसरे ही दिन वैदजीके दवाखाना औ गिरस्थी मोगलसरायसे लदफनके रामनगर पहुँच गइल। मोगलसरायके जमल दुकानदारी छोड़ेमें वैदजी के कइसन बुझाइल, एकर चरचा त ऊ कब्बों नाहीं कइलन, वाकी ई सलाह लोगनके ऊ जरूर देलन कि जब गाँव छोड़ेके पड़े त गांवेंके पैंड़ा बरकायके रहलेमें गाँव घर से प्रेम बनल रहेला।

http://bhojpurisahityangan.com

अब्दुल हमीद

गाजीपुर जिला क सैदपुर तहसील क घामूपुर गाँव में उसमान खलीफा दुपहरिया क खाना खइले के बाद दुकनिये में तनिक ढरकलन त ओंघाई आय गइल। ऊ सपना में का देखत हउवन कि जन्नत क फरिश्ता लोग ओनके बेटवा हमीद के माला पहनाय के हमीद क जयजयकार करत हउवन। फौजी वर्दी में हमीद जन्नत के फूलन के माला से दुलहा जइसन सज गयल रहलन। ओह फूलन के सुगन्ध अइसन रहल कि दुनिया मताय गयल। ऊ फरिश्ता लोग हमीद के एकठे खूब सजल उड़न खटोला पै बइठाय के असमान में खूब उप्पर उड़त चल गइलन। हमीद के कई मरतबा देखके उस्मान मियाँ के पहिले त विसवासे ना भयल कि ऊ हमीदै हौ। ऊ सपने में आँख मींज मींज के देखलन बाकी ऊ हमीद छोड़के केहू दूसर ना रहल। मारे ख़ुशी के उस्मान के आँख में पानी भर गयल। कुछ बोले चहलन बाकी गला रूँधाय गइले से अवाज नाहीं निकल सकल।

एतने में अंग्रेजी जूताके खट्ट-पट्ट आउर चप्पलके चटर पटर से उस्मान मियाँ के नींद उचट गइल। ऊ का देखत हउवन कि बुशर्ट औ पतलून पहिनले कुछ हाकिम लोग, कुरता पैंजामा वाले नेता लोग औ हाथे में नोटबुक औ कलम लेहले अखबार वाले दुकान के ओसारेमें ठाढ़ हउवन। ऊ हड़बड़ाय के उठें उठें तबले लोग ओनकर गोड़ छू-छू के हाथ माथे लगावे लगल। ओनके ना बुझायल कि ई का होत हौ। अबहीं एक सपना देखत रहलन त का ई दूसर सपना हौ। हमीद के अलावा आउर केहू त कब्बों ओनकर गोड़ नाहीं छुअले रहल। ऊ पीछे

http://bhojpurisahityangan.com

हटे चहलन लेकिन पीछे देवार आड़ लेहलेस। एतने में त सज्जे गाँव उस्मान के दुआरे वटुर गयल। गाँव के एक जने चिन्हलन कि गाँव में आयल लोगन में कलक्टर औ जिला के वड़का वड़का हाकिम लोग हउवन।

सब वटुर त गयल बाकी केहू के बकार नाहीं फूटत रहल। सबै मुँह बन्द कइले एक दुसरे के ओर टुकुर-टुकुर ताकत रहल। कुछ देर बाद कलक्टर साहब मुँह खोललन। ऊ उस्मान मियाँ से कहलन—"हमीद अपने देस के माथा दुनियाँ के सामने ऊँचा कय देहलन। ओनके जनम देवे वाला बाप मतारी धन्य हौ। ऊ जिला औ गाँव धन्य हौ जेकरे सपूत के बहादुरी क चरचा दुनिया क कोने-कोने में होत बाय। देसके आजादी के शहीद लोग स्वर्ग में हमीद के आगवानी बदे पलक बिछवले बइठल होइहें।"

अब लोगनके समझत देर नाहीं लगल कि हमीद लड़ाई में काम अइलन। गाँव के लोगन के आँख भर आइल। हमीद लड़िकइयें से सबकर दुलरुआ रहल। करेजा धक्क कय उठल। एतनेमें एकठे जवान भीड़ चीर के आगे बढ़ आयल। ऊ कलै रातके सैदपुर में रेडियो पै हमीद के बहादुरी के खबर सुनले रहल। लेकिन तब ऊ ना जनलेस कि ऊ अपने हमीद क चरचा रहल। ऊ जवान ललकार पड़ल—"के कह ला हमीद भैया नाहीं रहलन। आइब जाइब त लगले रह ला, लेकिन हमीद भैया त तबले रहिहें, जबले ई आपन देस रही।"

ऊ जवान तनी साँस लेके कहै सुरू कइलस—"कच्छ के लड़ाई से लउट के हमीद भइया कहले रहलन कि फौज में असली तरक्की त लड़ाई के मैदान में होले। ऊ ईहो कहले रहलन कि अबकी लड़ाई होई त ऊ करतब देखाइब कि दुनियाँ देखी। हमीद भइया जबन कहलन ऊ कय देखवलन। आज ओनके करतब पै दुनिया चकराय गइल हौ। घमंडी

http://bhojpurisahityangan.com

पाकिस्तान के रीढ़ त तोर के धई देहलन, अमेरिका के मुहें पै अइसन करिखा पोतलन कि छोड़ावे में दस पाँच बरिस लगि जाई।"

सब ओ जवान के मुँह देखे लगल। तब कलक्टर साहब के इसारा पै जिला सूचना अफसर ओझा जी बतावे सुरू कइलन।

कसूरके ओरसे भारत क सेना दुश्मनके दबउले लाहौर के ओर बढ़त जात रहल। दुश्मनो के ओरसे जबावी हमला हमार बढ़ाव रोके बदे जारी रहे। १० सितम्बर, १९६५ के दैत मतिन चार अमेरिकी पैटन टैंक हमरे सेना पै हमला करे बदे आगे बढ़लन। ओह समय सामने कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद आपन तोपखाना लेहले सामने डटल रहल। हवलदार के ई समझत देर ना लगल कि अगर ई टैंक आगे बढ़ अइहें त अपनी सेना बदे भारी खतरा हो जाई। का करे के चाही, ई तय करेमें ओन्हें तनिकों देर ना लागल। ऊ एक जीप लेके, जेमें टैंक तोड़ेवाली तोप लगल रहल अकेले आगे बढ़लन। ओनके आगी में कूदत देखके ओनकर साथियो आगे बढ़ै चहलन, बाकी सबके रुके के हुकुम देके, ऊ जीप लेहले टैंक से १५० गज फासले पर पहुँच गयल। टैंक वाले, जबले जीप देखें तब ले त हवलदारके तोप गरज उठल औ टैंक जइसे भहराय के किनारे लुढ़क गयल। दुसरके टैंकके लोग जबले अचकचाय, तबले हमीद के तोप फिर गरजल औ दुसरे टैंकमें आग लगके धाँय-धाँय बरे लगल।

हमीद ओह समय जइसे दुसरे दुनियाँ में रहल होंय। पैटन टैंकन के देखके ओनके जनून सवार हो गयल रहल। ऊ जानत रहलन कि ईहै ऊ ताकत ही जउने पै इतराय के पाकिस्तान हिन्दुस्तान पै हमला करैके हिम्मत कइलोस। ईहै ऊ किला हौ जवन देके अमेरिका अयूब के पागल बनाय देहले हौ। अमेरिको के ई घमंड हौ कि लड़ाई में एके केहू तोड़ न सकत। एही के बल पै अमेरिका अपनो अँकड़त-हेंठत हौ।

http://bhojpurisahityangan.com

एके साथ पाकिस्तान औ ओकरे हिमायती अमेरिका, दूनो के दाँत तोड़ेके मौका सामने पायके हमीद के सीना तन गयल। जयहिन्द के ललकार के साथ ओनकर तोप तिसरके टैंक पर गरज पड़ल। ऊ वचे चहलेस बाकी एतना चोट त खायी गयल कि एह लड़ाई में ऊ कउनो काम देवे लायक नाहीं रह गयल। हमीद अब मौका देखके अपने जवाननके ललकरलन—"आगे वढ़ा।" अब ऊ समझ लेहलन कि जवानन वदे खतरा नाहीं रह गयल हौ। हमीद ऊ अफसर रहलन, जे खतरामें जवाननके झोंके के जगह अपने कूदै पर भरोसा करत रहलन।

अइसन बुझायल जइसे हमीद के वहादुरी और करतब पै असमान वाले लट्टू होके सोचलन कि ई वहादुर त स्वर्गमें देवतन के सेनापति होवे लायक हौ। चउथा टैंक के ओर हमीद के तोप के मुँह घूमे-घूमे तवले त टैंक के तोप गरज उठल। हमीद पर गोलन क अइसन वौछार पड़ल, जइसे आससान वाले फूलन के वरखा कइके हमीद के उठाय ले गइलन। हमीद के करतव वेमिसाल रहे। ओनके वहादुरी अउर वलिदान पर दुनिया के आँख चौधियाँ गइल। भारत सरकार देस के सवसे वड़ा सम्मान "परमवीर चक्र" दे के ओन्हें आपन श्रद्धांजलि देहलेस आज सेना क एक एक जवान के माथा हमीद के नाम पर ऊपर उठल हौ। दुश्मन में खलवली मचल हौ कि एक हमीद के त ई हाल वाय औ भारत के सेना में जव सभै अपने के हमीद समझै लगल वाय त कइसे लाज वची।

ओझा जी जइसहीं कसूर मोर्चा क हाल सुनाय के चुप भइलन, गाँव क ऊ जवान फिर वोल पड़ल—"साहव आप लोग पूरा हाल नाहीं जनता। हमीद भैया तीन वरिस तक कश्मीर के सीमा क रखवारी कय चुकल हउवन। ऊ नेफा में चीनियन के मार मार के चटनी वनाय देहले रहलन। थागला पहाड़ी पै चीनी ओनके घेर लेहलन। ऊ अपने छोटकी मशीनगन से अकेल चीनियन के ओह समय तक भूंजत रहलन, जवले

http://bhojpurisahityangan.com

ओनके पास एक छोड़ के कुल गोली खतम ना हो गइल। ऊहाँ ओनके पास कुछ हथियार और वारूद वगैरह भी रहल। सब इकट्ठा कयके ऊ आखिरी गोली वारूद में मार के सब भस्म कय देहलन कि बचल रही त दुश्मनन के हाथ पड़ जाई। औ अपने मौका पायके जंगल में अइसन खसक गइलन कि चीनी ओनके खोजत खोजत थक गइलन। ऊ जंगल औ पहाड़न के आड़ लेत बे खइले पन्द्रह दिन में भूटान पहुँचलन, तब माँड़ भात के दर्शन भयल। भूटान के सरकार ओनके तेजपुर पहुँचउलेस। ओनके बहादुरी पं सरकार ओन्हें हवलदार के पद देहलेस, एकरे पहले ऊ नायक रहलन।

ऊ जवान कहत गयल—"हमीद भइया ओहदा एहसान में नाहीं पउले रहलन। कश्मीर क सीमा के रखवाली जवन शान से कइले रहलन, ओही से लांस नायक अउर बाद में नायक भइलन। वहीं ओनके सैन्य सेवा पदक औ जम्मू कश्मीर पदक" मिलल।

अइसन भाग कय जवानन के होला जे ११ बरिस के फौज के नौकरी में तीन तान लड़ाई में बहादुरी दिखावे के मौका पावे। जवान के मस्तक ऊँचा रहल, लेकिन गला भर आयल—"हमीद भैया हवलदार से कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार तब भइलन जब कच्छ के रन के लड़ाई में ओनके बहादुरी पं सेना अफसर लहालोट हो गइलन।"

"हमीद भैया लड़िकई के हमार साथी रहलन। हमहन सथहीं गाँव के एही स्कूल में पढ़ली। हमार बाबू त एकरे बाद हमें आगे पढ़े बदे सैदपुर भेज देहलन अउर उस्मान काका हमीद के सिलाई सिखावे लगलन। बाकी छुट्टी में हमहन संगही खेली। हमीद बइसे देखे में बड़ा लजाधुर रहे, बाकी खेल के मैदान में ओन्हें पछाड़े वाला एह जवार में केहू नाहीं दिखल।" लड़िकई के चरचा करत करत जवान के धीरज के बाँध टूट गयल। आँखी से धारा बह चलल। अवाज रूँधाय गयल। ऊहाँ

http://bhojpurisahityangan.com

जेतने लोग रहलन, सवकर आँख रूमाल चाहै गमछा से पोछाये लगल । अवहीं ले सवकर धियान हमीद के बहादुरी के चरचा पै लगल रहल । अव सवकर आँख हमीद के बूढ़ बाप उस्मान खलीफा की ओर घूमल । ओनके जइसे काठ मार गयल रहल । न मुँह से एक्को वात निकलल रहल औ न आँख से पानी । ओनकर चारो पोता सुसुकत ओनके पँजरे पहुँच गयल रहलन । पोती भी पाछे गुमसुम खड़ी रहल । वाकी उस्मान खलीफा जइसे पत्थर मतिन जड़ हो गयल रहलन । ऊ जइसे ई दुनिया से कहीं दूर चल गयल होंय ।

उस्मान क ई हालत देखके देखवइयन के छाती फटे लगल । केहूके समझ में ना आवत रहे कि उस्मान खलीफा चौंधियाय के आँख खोललन । अइसन जइसे गाढ़ी नींद से जागल होंय । चारो ओर देखलन, फिर चारो पोतन के गोदी में समेट लेहलन ।

केहू के ना वुझात रहल कि का करे के चाही । तवले उस्मान खलीफा के ओठ हिलल । चारो ओर सन्नाटा छाय गयल । उस्मान खलीफा कलक्टर साहव के ओर घुमलन । फिर साँस लेके वोललन—"साहव हम चाहत रहली कि हमीद आपन खानदानी काम सीख के गिरस्थी में हाथ वटावे, वाकी ओके ई पसन्द ना रहे । जव सयान भयल १९५३ में भागके फौज में भरती होवे वदे वनारस चल गयल । हम दउड़ल वनारस गइलीं औ ओके धयके घरे ली अइली । हम नाहीं चाहत रहली कि हमीद मारकाट में पड़े । वुढ़ौती के ऊहे सहारा रहल । वाकी अल्लाह के ई मंजूर ना रहल । दुसरे साल भाग के ऊ फौज में भरती हो गयल । हम ओह समय आपन करम ठोंक के वइठ गइली । जउने दिन के हम डेरात रहली ऊहो दिन देखाय गयल । वाकी सरकार आज हमीद हमार आँख खोल देहलेस आज हमार भरम मेटाय गयल । आज हमके बुझात हौ कि हमार हजारन लाखन हमीद अपने देस वदे दुश्मन से जूझत हउवन ।"

http://bhojpurisahityangan.com

उस्मान खलीफा तनी देर तक चुपाय गइलन। पोतन के आउर नगीचे खसकउलन। फिर बुढ़उती में जइसे ऊ तनेन हो गइलन। तनी तेज अवाज में फिर कहे सुरू कइलन—"हमीद आज खटिया पं देंह छोड़ले होतन त उस्मान के महीनो दू महीनो जीयव मुश्किल हो जात। बाकी उस्मान मरिहें नाहीं। ओह समय तक न मरिहें, जवले ई चारो पोता दुश्मन से बाप के बदला लेवे वदे तइयार न हो जइहें। एक दिन हम हमीद के बनारस से पकड़ लिअइली कि ऊ फौज में न जाय, अब हम अपने चारो पोतन के फौज वदे तइयार करब। हमीद जवन काम अधूरा छोड़ गइलन, ओके ई सब पूरा करिहन।"

गाँव के ऊ जवान दउड़ के उस्मान खलीफा से चिपक गयल। खलीफा ओकर पीठ सहलावे लगलन। एतने में बाहर असमान कँपा देवे वाली अवाज सुनाइल।

"उस्मान खलीफा जिन्दाबाद"

"वीर हमीद जिन्दाबाद"

"भारत माता की जय"

गाजीपुर से आइल लोग लौटानी त एही सोचत रहल कि उस्मान क करेजा केतना भारी हौ।

बाद में पता चलल कि अमेरिका के सरकार ई जाने वदे बेकल हौ कि हवलदार अब्दुल हमीद क करेजा क वजन केतना रहल।

http://bhojpurisahityangan.com

वासना

सबेरे क समय। वन में खिलल फूलन क भरमार। ओके छूअत वहत पुरवइया वयार। वन के वीच में ताल। ताल क पानी एतना साफ कि नीचे तक झलझल झलके। कमल के चाकर चाकर औ चिक्कन-चिक्कन पत्ता पानी के छाती में फइलल। हवा के झोंका में भुलाय के पानी उछर के पत्ता पै पड़ त जाय बाकी ओके विछलाय के नीचे गिरत तनिकों देर न लगे। कमल के फूल अपने रूप के घमंड में मूड़ी एतना तनले रहलन कि पानी बेचारे के समाई के बहरे रहल ऊहाँ तक पहुँचल।

घमंड यही वदे होला कि ऊ टूटे। रूप औ चिकनई के घमंड में अँइठल कमल औ पत्ता दूनो सिहर के काँप उठलन। दूनो कुमारी जव ताल में नहाये वदे कुदलिन त मारे खुसी के पानी उछर पड़ल। कुमारिन क रूप औ चिकनई देख के कमल के फूल औ पत्ता दूनो लजाय के कगरियाय गइलन। दूनो कुमारी पानी में किलोल करत नहाये लगलिन।

एक कुमारी क नाम रहल देवयानी। ऊ असुरन क गुरू शुक्राचार्य के विटिया रहलिन। ओनके सहेली शर्मिष्ठा क वाप वृषपर्वा असुरन का राजा रहलन। दूनो में लड़िकइयें से वड़ा मेलजोल रहल। दूनो साथे ताल में नहाये गइल रहलिन। कपड़ा उतार के किनारे पै रख के पानी में पइठले के थोड़िके देर वाद आँधी आ गइल। दूनों भाग के किनारे अइलिन। आँधी से किनारे रखल कपड़ा उधिराय गयल। शर्मिष्ठा दौड़ के कपड़ा उठाय के पहिन लेहलिन। संयोग से ऊ कपड़ा देवयानी के रहल। देखते देवयानी गुस्सा से लाल। ब्राह्मण के लड़की असुर के विटिया क अइसन ढिठाई कइसे बरदास्त करे।

http://bhojpurisahityangan.com

'का रे शर्मिष्ठा, तोर एतनी मजाल कि तू गुरू क बिटिया क कपड़ा पहिन ला।'···देवयानी डाँट वतउलिन।

'भीख पै जीये वालन के एतना गुमान।'···शर्मिष्ठा तड़प उठल। ऊ राजा के बिटिया रहल। वात वढ़ गइल। जनम भर के मेल जोल हवा हो गयल। दूनो अझुराय गइलिन। देवयानी आपन कपड़ा छोरे झपटें लगलिन। राजा क बेटी एके नाहीं सह सकल। शर्मिष्ठा के एक धक्का में देवयानी लड़खड़ाय के कुंआ में जाय गिरलिन।

अहेर के चक्कर में राजा ययाति के दुपहरिया हो गयल। पियासन कंठ सुखाये लगल त खोजत-खोजत एक ठे कुआ के पास पहुँचलन। कुंआ के भीतर से सुसुके के अवाज सुनके राजा चकपकाय गइलन। झाँक के देखलन त जइसे रूप क खजाना ओ अन्हार कुंआ में अँजोर कइले होय।

तू के हऊ ?'···राजा पुछलन।

'शुक्राचार्य के बेटी देवयानी।'

आपन साफा कुँआ में ढील के राजा देवयानी के वाहर निकललन। अपने साथ उपकार करेवाला के नाम पूछके देवयानी अपने घरे लौट गइलिन।

देवयानी के साथ शर्मिष्ठा क करनी सुनके शुक्राचार्य के जी खट्टा हो गयल। ऊ सदा वदे असुरन क संग छोड़ देवे खातिर वोरिया बँधना समेटे लगलन।

शुक्राचार्य असुरन क सँग छोड़के जात हउवन, ई सुनते दानवन में खलबली मच गयल। राजा वृषपर्वा के जइसे काठ मार गयल। ऊ सिंहासन छोड़के नंगे पाँव दौड़ के शुक्राचार्य के पास पहुँचलन। राजा अपने गुरु के गोड़ छान के चिरौरी-मिनती करे लगलन।

ब्राह्मण के पसिजत देर ना लगत वृषपर्वा के गिड़गिड़ाये पर शुक्रा-

http://bhojpurisahityangan.com

चार्य कहलन —'देवयानी तैयार होय त हम तू लोगन के साथ नाता बनउले रह सकीला।'

वृषपर्वा अपने मंत्री सेनापति औ सरदारन के साथ सीधे देवयानी के पास पहुँचलन।

'देवयानी ! आज हमहन दीन बनके तोहरे सरन में आइल हई। हमहन के उबार ला। तीनों लोक के जवन चीज कहा तोहरे चरन में हाजिर कय देई।'—वृषपर्वा के बानी कातर रहल।

देवयानी क कलेजा पिघल उठल। बाकी शर्मिष्ठा के अकड़ ओनके आँखी के आगे चमक उठल।

'राजन ! आप चिन्ता मत करा। सबकर भला भगवान करलन। हमें कुछ नाहीं चाहीं। लेकिन आप हमरे मन क इच्छा अगर पूरा करे चाहला त जनम भर बदे शर्मिष्ठा के हमार दासी बनाय दा।'

असुरन के सिर पर शुक्राचार्य के साया रहब एतना जरूरी रहल कि असुरराजा देवयानी के जिद माने बदे लाचार रहलन। पिता के बचन पर शर्मिष्ठा जनम भर बदे देवयानी के दासी बनब मंजूर कय लेहलिन। असुरन के संकट टल गयल।

देवयानी फुलवारी में लेटल रहलिन। राजा के बेटी शर्मिष्ठा गोड़ दबावत रहलिन। एतने में राजा ययाति ऊहाँ पहुँच गइलन। ऊ फिर अहेर खेलत ऊहाँ आय गयल रहलन। देवयानी के ओह दिन क रूप देख के ओनके टकटकी बन्हाय गयल।

देवयानी आपन जान बचावे वाला उपकारी राजा के सामने पाय के गदगद हो उठलिन। राजा के अपनी ओर एकटक देखत लाजो लागल। ऊ राजा के आदर से बइठउलिन। एहर ओहर के बतकही के बाद राजा ययाति देवयानी के सामने बिआह क प्रस्ताव रखलन। शुक्राचार्य सुनलन त ऊ खुसी से आज्ञा दे देहलन। धूम-धाम से देवयानी

http://bhojpurisahityangan.com

क विआह राजा ययाति से हो गयल। राजा देवयानी औ शर्मिष्ठा के लेके अपने राज लौट गइलन।

राजमहल में आनन्द से गृहस्थ जीवन बीतत रहल। एही बीच राजा क प्रेम शर्मिष्ठा से हो गयल। गुमचुप विआहो हो गयल। राजा ययाति के देवयानी के गर्भ से यदु औ तुर्वसु दुइ पुत्र भइलन। ओहर शर्मिष्ठा के गर्भ से राजा के तीन लड़िका भइलन, नाम धरायल—दुह्यु, अनु औ पुरू।

बहुत दिन ले त शर्मिष्ठा अपने लड़िकन क बात देवयानी से नाहीं बतवलिन. बाकी ई छिपल नाहीं रह सकल। देवयानी के मन के ई जान के गहिरा चोट लगल। देवयानी से ई अपमान नाहीं सह गयल। ऊ नराज होके अपने नइहर चल गइलिन।

शुक्राचार्य क क्रोध ई सुनते भड़क उठल। ऊ सीधे राजा ययाति के ईहाँ पहुँचलन।

'राजा! तोहके एतना घमंड हो गयल।'—मारे क्रोध के शुक्राचार्य के देह काँपत रहल। 'याद रखा जवानी के मद तोहें महापातकी बना के छोड़ी।'

शुक्राचार्य सराप देहलन—'तू जवानी के मद में लड़की के निरादर कइला, एसे आज से तोहार जवानी नष्ट हो जायी।'

देखत-देखत राजा के भरल खिलल चेहरा मुरझाय गयल। छाती धँस गयल। पेट दब के पीठ में सट गयल। आँख गड़हा में चलि गइलिन। कपारे के बाल उज्जर होय गयल। गाल पचक गयल। दाँत टूट गयल। कान बहिर हो गयल। हाथ पैर हिले लगल।

आपन ई हाल देख के राजा ययाति शुक्राचार्य के गोड़े पै गिरके रोवे-गिड़गिड़ाये लगलन। शुक्राचार्य के दया आय गइल।

'राजा! सराप के एकदम से लौटाय लेब हमरे बस के नाहीं हौ। हम एतना कय सकीला कि तोहार कउनो लड़िका तोहार बुढ़ापा लेके

http://bhojpurisahityangan.com

आपन जवानी तोहके दे दे त तू फिर जवान हो जइवा।' एतना कहके शुक्राचार्य चल गइलन।

राजा एह सोच में डूबे-उतराये लगलन कि ई मुसीवत केके देई। के आपन चढ़त जवानी देके ई बुढ़ापा लेके ढोई।

राजा ययाति अपने पाँचों लड़िकन के बोलाय के मुसीवत सुनवलन। राजा कहलन—'हम विना समय के बुढ़ाय गइली। हमार वासना अबहीं मिटल नाहीं हो। तू लोगन में से केहू थोड़े दिन वदे आपन जवानी दे दा त हम आपन होसिला पूरा कय लेई।

राजा वारी-बारी से पाँचों कुमारन क मुँह देखे लगलन, वाकी पाँचों चुप।

सवसे छोट कुमार शर्मिष्ठा के बेटवा पुरू आगे वढ़लन—

'पिता जी! ई देह आपे क हौ। हमार भाग हौ कि ई आपके काम आवे।'

राजा ययाति वड़े प्यार से पुरू के छाती से लगाय लेहलन। एकछन में पुरू बूढ़ हो गइलन औ राजा जवान।

राजा ययाति के दिन विषय वासना में वीतत गयल। एक दिन ऊ पुरू के वोलउलन। पुरू क जुलजुल बूढ़ सरीर देखके ओन्हें अपने ऊपर लाज लगल। ऊ जइसे धरती में समाय गइलन। छलछलाइल आँख औ भरल गला से राजा कहलन—'बेटा! तू अनासे हमरे वदे एतना दुख झेलला। अव हमें अपनी बेहयायी पर लाज लगत हौ। हम तोहरे ऊपर वहुत खुस हई आज हम तोहार जवानी तोहें लौटावत हईं। हम एतने दिन में देख औ समझ लेहली कि राक्षसी वासना के कब्बों अंत नाहीं होत।

न जातु कामः कामनामुपभोगेत शाम्यति।
हविष कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते॥

http://bhojpurisahityangan.com

बनिया क बेटा

भोजपुर इलाके में एक ठे वाभन रहलन। पढ़ल लिखल औ विद्वान। पूजा पाठ औ जजमानी कइके इज्जत औ सन्तोष के साथ आपन गुजर करत रहलन। वाकी न जाने भाग ओनके दगा देहलेस, कि भगवान ओनकर परिच्छा लेत रहलन। हैजा के वीमारी फइलल त घर के कुल परानी भगवान के पास पहुँच गइलन औ भाग अइसन कि मतहाई में ओनकर दूनों अँखियों जात रहल।

वाभन देवता के मन दुनिया से उचट गइल। ऊ कुल छोड़ि-छाड़ि के जंगल में तपस्या करे लगलन। तिजहरिया के ऊ जंगल से निकल के एक ठे चौरस्ता पै आय के वइठ जाँय। आवत-जात मुसाफिर जवन कुछ दे दें, ऊ ओनके वदे काफी रहे। भगवान ओनके इहाँ तक पहुँचाय देहलन, वाकी ओनके कब्वों भगवान से कउनो सिकायत नाहीं रहल।

एक दिन राजा ओही जंगल में सिकार खेलै अइलन। राजा के लस्कर देख के एक ठे हरिना आपन जीव लेके परायल। राजा के अमला फइला हरिना के पीछे घोड़ा घउड़ाय देहलन। ओही वखत ऊ वाभनों रोज मतिन चौरस्ता पै वइठल रहलन।

सवसे पहिले एक ठे सिपाही वाभन के लग्गे पहुँचलन। ऊ वाभन के देखते पूछलेस—'हरे सुरवा हरिना केहर गइल? वाभन एक ओर हाथ उठाय देहलन।

http://bhojpurisahityangan.com

थोड़िके देर में सूबेदारो पहुँचलन। ऊहो वाभन के देख के पुछलन—'हे सूर हरिना केहर गयल।' वाभन देवता एक ओर हाथ उठाय के कहलन कि—'हरिनो एहरे गयल है आउर सिपाहियो।'

सूवेदार के आगे बढ़त देर नाहीं भयल कि राजा के मंत्री के घोड़ा वाभन के लग्गे वमक गयल—मंत्री पूछलन—'सूरदास हरिना केहर गयल।'

सूरदास पहिलहीं मतिन हाथ उठाय के कहलन—'हरिनो एहरे गयल है औ सिपाही औ सूबेदारो।'

मंत्री थोड़िकै आगे पहुँचल रहल होइहें कि राजौ के सवारी आय गइल औ ऊहो पूछलन—'सूरदास जी हरिना केहर गयल।'

सूरदास ओनहू के हाथ उठाय के बताय देहलन, औ कहलन—'महाराज हरिना के पीछे सिपाही, सूबेदार और मंत्रियो एहरे गइलें ह।

राजा एतना सुनके अचकचाय गइलन। ऊ घोड़ा से उतर गइलन औ सूरदास के पँजरे पहुंच के पुछलन—'सूरदास जी तू देख त नाहीं सकता, वाकी सिपाही. सूवेदार औ मंत्री के आउर हम्मे कइसे वीन्ह गइला।'

'जवान से,' सूरदास कहलन। 'हरे सुरवा कहके पूछे वाला सिपाही जइसन छोटे दरजा के अदमी होय सकेला। हे सूर जे कहलेस ऊ जरूरै सिपाही से ऊँच ओहदा वाला सूबेदार रहल होई। आ मन्त्री अइसन ऊँच अदमी दुसरौ के इज्जत करे जानलन। जे सूरदास कहलेस ऊ मन्त्री से कम न रहल होई। औ सूरदास जी कहै वाला राजै हो सकला। अदमी जेतने ऊँच ओहदा पं होला ओकर जवान ओतने मोलायम होला।'

राजा सूरदास के बुद्धी पं लट्टू हो गइलन। ऊ जिद् कइके औ मनाय के सूरदास के अपने राजधानी में लियाय गइलन। सूरदास के

http://bhojpurisahityangan.com

रहै औ पूजापाठ वदे एकठे मन्दिर में इन्तिजाम कयल गयल। ओनके खाये पीये वदे दस रुपया महीना वँध गयल, जउने में से डुइये रुपया में ओनकर काम चल जाय। भजन कीर्तन में सूरदास के दिन मजे में बीतै लगल।

एक दिन राजा के ईहाँ घोड़ा के एकठे सौदागर आयल। ओकरे पास एकठे अइसन घोड़ा रहल, जवने के जे देखे देखते रहि जाय। ओकर तइयारी अइसन रहल कि पीठी पै से माछी विछलाय जाय। राजा के दरवारी लोगन के राय में ऊ जनावर राजै के सवारी लायक रहे। घोड़ा राजा के सामने हाजिर कयल गयल। राजा के मन में न जाने का आयल ऊ कह वइठलन कि सूरौदास के राय ले लेवल जाय। ई सुनके सबके अचरज भयल। भला आंन्हर भेंभर घोड़ा के हाल का जानी।

वाकी राजा के वात के काट सकला। सूरदास वोलावल गइलन। ऊ घोड़ा के पुठ्ठा औ पेट टोवलन त मुस्कियाय देहलन। ओकरे वाद ओकर मुँह औ कान टोअलन। फिर राजा के पंजरे आय के कहलन कि ई घोड़ा आप लायक नाहीं बाय।

राजा त चुप रहलन, वाकी रिसालदार पुछलन कि काहें? सूरदास कहलन—'सवार वोलावा, अपनै मालूम होय जाई।'

तुरतै सवार बोलावल गइल। घोड़ा के जीन कसायल। सवार जइसहीं घोड़ा के पीठ पै चढ़के लगाम थमलेस घोड़ा अइसन उड़ल कि देखवइयन के झाँई आवे लगल। रिसालदार मुस्कियाय के सूरदास के ओर तकलन। तबले त चारो ओर हउरा मच गयल। घोड़ा सवार के लेहले नदी में पइठ गयल। रिसालदार औ सौदागर दूनों के मुँह लटक गयल।

राजा सूरदास से पूछलन—'तूँ कइसे जनला कि घोड़ा में ई दोस वाय।'

http://bhojpurisahityangan.com

सूरदास कहलन—'जब हम घोड़ा के पेट टोअली त एतना गरमी मिलल कि हम त बुझलीं कि हमें आन्हर जानके भैंसा के घोड़ा बताय के देखावल जात हौ। एही से हमें हँसियों आइ गयल रहे, बाकी जब मुँह टोअली त पतियाये के पड़ल कि ई भैंसा नाहीं घोड़े हौ।'

सूरदास कहत गइलन—'ई घोड़ा त जरूर हौ बाकी दूध भैंसी के पियले हौ। एसे जब ई पानी देखी त ओम्मन पइठले बिना ना मानी।'

राजा ई सुन के सौदागर से सही बात बतावे के कहलन। सौदागर हाथ जोड़ के ठाढ़ हो गयल। कहलेस—'सरकार ई बात ठीक हौ। जब ई घोड़ा के जनम भयल ओही समय एकर मतारी मर गइल। हमार एकठे भँइसों ओही बखत बियाइल रहे। औ संयोग अइसन कि भँइस के पाड़ा मर गइल। भँइसिया सोरह सेर दूध देत रहल, जवन कुल ई घोड़वै पियलेस।'

राजा सूरदास के बुद्धि पर एतना खुस भइलन कि ओनके मिलै वाले तनखाह में एक रुपिया के तरक्की कय देहलन।

कुछ दिन बितले के बाद राजा के बियाह बदे पड़ोस के राजा के ईहाँ से बाभन आयल। राजा के फेर न जाने का सूझल कि ऊ कह बइठलन कि पहिले सूरदास लड़िकी देख आवें। दरबारी लोग फेर चकरायल। मंत्री कहलन कि सूरदास भला लड़िकी के कइसे देखिहैं। बाकी राजा के मुँह से निकलल बात टर कइसे सकत रहल।

सूरदास लड़िकी के बाप के राज में पहुँचलन। राजकुमारी ओनके सामने ली आवल गइलिन। राजकुमारियो एही सोच में डूबल रहलिन कि जेके अँखिये नाहीं बाय ऊ देखी कइसे। तबले सूरदास कुसल छेम पूछ देहलन। राजकुमारी क धियान त दुसरी ओर उड़ल रहल। ऊ सुन ना पउलीं। कह उठलीं—आँय'।

http://bhojpurisahityangan.com

सूरदास फेर ऊहे सवाल कइलन औ जवाव सुनके लवटि अइलन। राजा जव ओनसे लड़िकी के वारे में पुछलन, सूरदास कहलन कि अकेले में वताइव। राजा के हुकुम से जव सवलोग उहाँ से हट गयल त सूरदास कहलन—'वियाह जात में होला। तूँ वनिया आउर ऊ धुनियाँ त वियाह कइसे होई।'

राजा त ई सुनते लाल हो गइलन। राजा नंगी तलवार लेहले अपने मतारी के लग्गे पँहुलन। राजा रोवे लगलन। ऊ मतारी से कहलन कि ठीक-ठीक वताय दा कि हम केकर वेटवा हईं, नाहीं त आज गला काट के मर जाव।

ओनकर मतारी देखलिन कि अव वतवही के पड़ी। ऊ कहलिन कि हम्मे कउनो लड़िका नाहीं होत रहल। राजौ एसे वहुत दुखी रहलन। त हम्मे एकठे उपाय सूझल। एकठे वनिया के घरे लड़िका भयल। हम अपने दाई के भेज के आपन हार देके ओ वनिया के लड़िका के नार समेत मँगाय लेहली औ ओही लड़िका के लेके सवरी में वइठ गइली। सब जगह ई जान के खुसी मनावल गयल कि रानी के लड़िका भयल। औ वनिया के घरे एकठे पुतरा वनाय के नदी में वहाय देवल गयल औ ई कह गयल कि लड़िका जनमते जात रहल। ओही वनिया के लड़िका तू हउवा।

ई सुनके राजा के जइसे अँखिये टँगाय गयल। ऊ मतारी के गोड़े गिर पड़लन। उहाँ से उठके ऊ सोझे सूरदास के पास गइलन। ओनसे पुछलन कि सूरदास जी आप कइसे जनला कि हम वनिया हई ?

सूरदास कहलन—'राजा जहिया हम घोड़ा के असलियत परख के वतउली, औ आप इनाम में हमरे तनखाह में एक रुपया के तरक्की कइला, ओही दिन हम जान गइली कि आप वनिया हउवा। काहें से जे

http://bhojpurisahityangan.com

राजा के जनमल रहल होता त ओतना पै दस-पाँच गाँव इनाम में दे देता घाघ कहले बाटन—

'बनिया क सखरज, ठकुरे के हीन।
बइदे क पूत व्याधि नहिं चीन्ह।
पंडित चुप चुप बेसवा मइल।
कहे घाघ पाँचों घर गइल।'

राजा ई सुनके अइसन लजइलन कि फेर ओन्हें ई पूछे के हियावे ना परल कि राजकुमारी धुनियाँ कइसे रहल। ऊ दरबार में जायके सूरदास के नाँवे दस गाँव लगाय देवे के हुकुम मंत्री के सुनाय देहलन।

http://bhojpurisahityangan.com

भैरवी क साज

'बारे बलम फुलगेनवाँ न मारो लगत करेजवा में चोट'

सिंहवाहिनी देवी के सालाना सिंगार के समय माई के दरबार में जब चम्पा बाई अलाप लेके भैरवी सुरू कइलिन, त उहाँ बइठल लोगन क हाथ अनजाने में करेजा पै पहुँच गयल। रात भर गाना सुनत-सुनत जे झपकी लेवे सुरू कय देहले रहल, ऊहो अइसन अचकचाय के उठ बइठल जइसे केहू ओनके उप्पर लोटा क पानी उड़ेल देहले होय।

चम्पा बाई के गला जइसन सुरीला रहल बइसहीं ओनकर रूपो अइसन रहल कि देखबइयन के झाँई आवे लगे। औ भैरवी के त ओन्हे जइसे सिद्धि मिलल रहल। बनारस में ओह समय ओनके जोड़ के भैरवी गावे वाला केहू दूसर नाहीं रहल।

चम्पा बाई क टीप ओह भोरहरी के बेरा गंगा के चीर के ओह पार रेती तक पहुँचत रहल। जइसहीं चम्पा बाई दोहराय के गउलिन—'लगत करेजवा में चोट' सज्जै दरबार झूम उठल।

'वाह मालिक, तनी बताय के'—मन्दिर के ओर के सीढ़ी से ई आवाज लगते, दरबार के एक कोने में जइसे हलचल मच गयल। चम्पा बाई चकपकाय के ओहर तकली, त देखें कि बचऊ महराज क छ फुटी काया सीढ़ी पार कइके सामने आइ गइल हौ। चम्पा के गइबे जइसे भुलाय गयल।

बचऊ महराज आवाज देहलन—'सुरू होये दा चम्पा, रुक काहें गइलू। का सच्चों के पीर उठ गयल ?'

http://bhojpurisahityangan.com

बचऊ महराज के एतना कहतै दरवार के जउने कोने में हलचल मचल रहल, ओहर से आठ दस जवान लाठी लेहले तनतनाय के खड़ा हो गइलन। ई पट्ठा बल्ली बाबू के रहलन, जेकरे नाम के दबदबा ओह समय बनारस पै रहल। हर समय दस बीस पट्ठा दुआरे पै पड़ल भाँग-बूटी छानल करें औ जरूरत पड़ले पै सौ दू सौ के एकट्ठा करे में देर न लगे।

बल्ली बाबू के पट्ठन के लाठी खड़कतै, लोगन के देंही के जइसे खून सुखा गयल। बाकी बचऊ महराज पै एकर तनिको असर नाहीं देखायल। ऊ अगिला पट्ठा के ओर ताक के कहलन—'का रे सुमेरवा! जाय के बल्ली से कह दीहे कि हमसे मिल लीहें।'

सुमेर टकटकी लगाय के देखत रह गयल। बचऊ महराज कंधे से खसकल दुपट्टा उप्पर चढ़ावत घाट के ओर बढ़ गइलन। दरवार खतम हो गयल। कुछ लोग घरे गइलन औ कुछ लोग नहाये बदे गंगा किनारे। चम्पा बाई बल्ली बाबू के पट्ठन के घेरा में दालमंडी के रस्ता धइलिन।

बात ओह समय के हौ, जब तुरुकुन के अमलदारी के धूर चटाय के फिरंगिन के कोतवाली चौक के करेजा पर खड़ी होय के भद्दोमल के हवेली से आँख लड़ावे सुरू कइले रहल। बल्ली बाबू के घर एही हवेली के पिछवे लख्खी चौतरा से सटले रहल। कहल जाला कि एकर नाम लख्खी चौतरा एह बदे पड़ल कि हाथ भर के चौतरा बदे जब दुइ बनारसिन में ठन गयल त दूनो ओर के कुल मिलाय के एक लाख रुपया लड़े में खरच हो गयल। बल्ली बाबू बनारस के सराफा बाजार क राजा कहल जाँय। का मजाल कि एक्को गुल्ली सोना चाहे एक्को सील चाँदी बिना ओनके मरजी के बिकाय जाय। -मिर त अबही पचीसिये में रहल, बाकी सराफा के बूढ़ बूढ़ दलाल ओनके गुरू कहैं औ मानैं। जब बल्ली बाबू सराफा में पहुँचे त बड़े-बड़े सेठ हाथे में पान के दोना लेके खड़ा हो जाँय। बल्ली बाबू खाली दलालै ना रहें। बल्ली बाबू के रहत

http://bhojpurisahityangan.com

सराफा के ओर केहू आँख नाहीं उठाय सकत रहल। सराफा के नईकी कोतवाली पं ओतना भरोसा ना रहल, जेतना बल्ली बाबू पं।

बचऊ महराज पैंतीस के पास पहुँचलन रहलन। बाल-बच्चा वाले रहलन। सरीर औ रियाज खानदानी रहल। बाप दादा के बखत से जजमानी होत आइल रहल। जजमानियो एकठे रियासतें होले, जेकरे रच्छा बदे मालिक के गुंडा बने के औ चेलन के एकठे फउजो पाले के पड़ेला। बचऊ महराज ई दूनों में बनारस उप्पर मानल जात रहलन। ओनकर हवेली बालूजी के फरस पं रहल। ऊ हवेली का रहल एकठे किला रहल। सदरी दुआर एक्कै, बाकी ओम्मे अँगना इग्यारह ठे। बचऊ महराज लँगोट के पक्का रहलन, बाकी ओहि समय के रईसन मतिन गाना सुनै के सउख ओन्हऊ के रहल। साल भर पहिले जब बनारस के रईसन के महफिल में चम्पा बाई के धुम मचल रहल, बचऊ महराज कब्बों-कब्बों चम्पा बाई के कोठा पं जाय के गाना सुन आवें। बाकी साल भर से चम्पा बाई मुजरा त बन्द करी देहलिन, महफिलो में जाव छोड़ देहलिन, चाहे केहू ओनके एक लाख देवे बदे काहें न तइयार होय।

साल भर गहिले चम्पा बाई के भेंट जब बल्ली बाबू से भइल, त चम्पा अपने मतारी के कुल सिखावल-पढ़ावल भुलाय के बल्ली बाबू पर लट्टू हो गइलिन। बल्ली बाबू उहाँ जाये त सुरू कइलन गाना के आनन्द लेवे, बाकी धीरे-धीरे ऊ दूसरे आनन्द में पड़ गइलन। ऊहो समय आय गयल, जब मोजरा के समय रईस लोग दालमंडी पहुँचै त चम्पा बाई के खिरकी बन्द पावें। ई बात दालमंडी के घरे-घरे फइल गयल कि अपने रईस के कहले से चम्पा कोठा बन्द कय देहिलिन। दालमंडी में बल्ली बाबू चम्पा के रईस कहल जाये लगलन औ चम्पा के रोब-दाब ओह गली मे सबके छोप लेहलस। नया-नया आयल कोतवाल फरजंद अली के

http://bhojpurisahityangan.com

भी तरस के रह जाये के पड़ल। चम्पा के गाना सुने के लालसा ओनके मने में झुराय गयल।

चम्पा नाचव-गाइव कुल छोड़ त देहलिन वाकी जव सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के समय नगिचायल त ओनके अपने माई के कहल इयाद पड़ गयल। ओनकर माई हर साल सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के दरवार में गावे वदे जरूर जाँय। ऊ वतउले रहलिन कि चम्पा के ननियो उहाँ जाये में कउनो साल नागा नाहीं कइले रहलिन। ओनके ई विसवास रहे कि देवी जी के किरपा से ओकर वंस फूलत फलत आवत हौ। चम्पौ जव से नाचव-गाइव सुरू कइलिन, देवी जी के दरवार में जाय के अपने हुनर से माई के रिझावे से ना चूकें। ऊ वल्ली वावू के राजी कइ लेहलिन कि भोर के वखत मन्दिर में जाय के एकठे भैरवी सुनाय अइहें। ओनके संगे वल्ली वावू के दस वारह पट्ठो उहाँ गइलन। संयोग क वात कि ओही समय गंगा नहाये जात के जव वचऊ महराज मन्दिर के पास पहुँचलन त चम्पा के टीप सुनके माई के दरवार में पहुँच गइलन औ अनयासे ओनके मुँह से ऊ वात निकल गयल, जौन दरवारै के खड़वड़ाय देहलेस।

वल्लो वावू अपने पट्ठन से जव ई कुल सुनलन त मारे गुस्सा के ओनकर चेहरा लाल हो गयल। ऊ टप से लाठी उठौलन औ दलान के वाहर होय गइलन। गल्ली में पहुँचते ओनके मन में न जाने का आयल कि मुड़ के लाठी फेंक के खाली हाथ वचऊ महराज के घरे पहुँच गइलन।

वल्ली वावू के देखतै वचऊ महराज उठ के आदर से ओनके वइठावे चहलन, वाकी वल्ली वावू खड़े खड़े कहलन—'सुमेरवा कहलेस ह कि महराज वोलउले हउवन। सुमेरवा कउनो गुस्ताखी कइलेस का ?'

'नाहीं हो। चम्पा के भैरवी साल भर पै सुनै के मिलल, तवन ऊ

http://bhojpurisahityangan.com

ससुरा लाठी खड़कावे लागल। चम्पो त अइसन लजाइल जइसे तोहार विअहुता होय।

'विअहुता' सुन के वल्ली वाबू तिलमिलाय उठलन। तव्वौ अपने के सँभार के कहलन 'कल भोर में मनकनिका घाट पर चम्पा के भैरवो सुने के तोहके नेवता हौ महराज।'

वल्ली बाबू के चुनौती समझत वचऊ महराज के देरी ना लगल। ऊ झगड़ा बढ़ावे नाहीं चाहत रहलन। ऊ त लाठी खड़कले पं सुमेरवा के ई चेत दियावे वदे कि हम तोहरे मतिन पट्ठा नाहीं, वल्कि गुरू हई, वल्ली वाबू के भेज देवे वाली वात ओनके मुँह से निकल गइल रहल वाकी वल्ली वाबू के वात से ऊ समझ गइलन कि वात यहाँ तक बढ़ गइल हौ, जौने ले पीछे नाहीं हटल जा सकत। वल्लियो वाबू विना जवाव के इन्तजार कइले उलट के वाहर चल गइलन।

ई खवर विजली मतिन सहर भर में फइल गइल। सवकै जवान पै एवकै वात रहल कि कल का होवे वाला हौ। दूनो ओर के पट्ठा लाठी चिकनावे सुरू कय देहलन। दूनो कोठियन में हलचल मच गयल। रात दूइये वजे से मनिकनिका पै लोग जुटे लगलन। भोर होत होत वचऊ महराज औ वल्ली वाबू अपने अपने पट्ठन के साथ पहुँच गइलन। ओहारदार पालकी में चम्पो वाई उहाँ ली आवल गइलिन। चम्पा जवसे ई खवर सुनले रहलिन तवै से दाना पानी छोड़ के रोवतै रहलिन। रोवत-रोवत ओनकर आँख फूल गइल रहल। वार-वार ओनके मन में आयल कि रोय-धोय के वल्ली वाबू के रोकीं, वाकी ई सोच के कि फिर बल्लीबाबू वनारस में कवन मुँह देखइहें, मुँह न खुलि पावे। चम्पा पत्थर क करेजा कय के ई तय कय लेहलिन कि चाहे जवन कुछ हो जाय, वल्ली वाबू के सान में बट्टा चम्पा के मोहब्वत औ चम्पा के अपने स्वारथ वदे न लगे पायी।

http://bhojpurisahityangan.com

बचऊ महराज सामने के मढ़ी पं बइठल रहलन। बल्ली बाबू उहाँ जाय के पुछलन—'का महराज भैरवी सुने के तइयार हउवा।'

'हाँ हो! हम त सुरू होवे बदे अगोरत हई।' बचऊ महराज मुस्कियाय के कहलन।

'साज पं का बजे के चाही।' बल्ली बाबू तनी तिरछा होके कहलन।

'चम्पा तोहार हई और साजो तोहरे मन के रहे के चाही।' बचऊ महराज तनी ठनक के कहलन।

बल्ली बाबू लउट गइलन। चम्पा के पालकी से उतार के सामने के मड़ी पं बइठा देहलन। हाथ में तलवार ले के माथे पं लगवलन आ आगे बढ़के बचऊ महराज से कहलन—'आवा महराज! पहले साज मिलाय लेवल जाय।'

बचउओ महराज अपने चेला से तलवार लेके माथे लगउलन औ जय जगदम्बा कहके सामने आ गइलन। जइसे-जइसे तलवार खनके, वार अउर ओकर काट होय, वइसे-वइसे देखवइयन के साँस टँगाये लगल। एक घड़ी बीत गइल, लेकिन दूनो लड़वइयन के तेजी में कउनो कमी ना आयल। चम्पा दाँते से जीभ दबउले करेजा थाम के बइठल साज मिले के घड़ी टकटकी लगाय के अगोरत रहली। बाकी ई साज त भैरवी से मेल खातै नाहीं रहल। झलफलाइ होवे लगल। नहवइया घाट पर आवे लगलन। बल्ली बाबू के निगाह तनी अजोर में जब चम्पा के झुरायल मुँह पं पड़ल, त ओनके देह में जइसे बिजली दउड़ गयल। अब त ओनकर वार एतना तेज हो गयल कि बचऊ महराज के बचावै करे के फुरसत न मिलै। देखवइयन के अइसन बुझायल कि अब मैदान बल्ली बाबू के हाथ में हौ। तब ले त चारो ओर हल्ला मच गइल। चम्पा क भाग फुटल। बल्ली बाबू के वार रोके बदे जइसहीं बचऊ महराज तलवार चलउलन,

http://bhojpurisahityangan.com

बल्ली बाबू के गोड़ गोबर पै पड़के अइसन बिछलायल कि झटका से चलावल गइल बचऊ महराज के तलवार पर ओनकर गर्दन अपने-आपै लटक गयल।

बचऊ महराज झपसे तलवार फेंक के बल्ली बाबू के दूनो हाथ में उठाय लेहलन। ओनके उठउले तुरते अपने घरे पहुँचलन। चेला भेज के डाक्टर बोलउलन। तबले त कुल खतम हो चुकल रहल। चम्पा के जइसे काठ मार गयल। ऊ न त रोवलिन न कुछ बोललिन। बल्ली बाबू के पट्ठा रोय रोय के चम्पा के घरे चले के समुझवलन, बाकी ऊ त जइसे पत्थर हो गइल रहलिन। न कुछ बोलें न कुछ सुनें। दुइ घंटा बाद मनिकनिका पर चिता सजावल गयल। बचऊ महराज रोवत-रोवत लास के चिता पै सुतवलन। ओनकर रोवाई देख के पत्थर के करेजा पिघल जाय। अइसन बुझाय जइसे सग्गे छोट भाई के चिता में आग लगावे के होय।

चिता में आग लग गइल। चिता जल गइल। बाकी चम्पा अपने जगह से हिललिन नाहीं। जब लोग चिता बहायके चले लगलन त अइसन बुझायल जइसे झटके से चम्पा के नींद खुल गयल हो। बल्ली बाबू के पट्ठा आहीं रहलन। चम्पा चकपकाय के कह उठली—'हमें भैरवी गावे के रहल न। जगउला काहें नाहीं। देरी न हो गयल होई। बल्ली बाबू नराज न होइहें ?'

चम्पा के देख के सुमेर के आँख से पानी झरै लगल। चम्पा उठलीं। धीरे-धीरे उहाँ गइलिन, जहाँ बल्ली बाबू के चिता जलावल गइल रहल। पलथी मार के बइठ गइलिन। कुछ गुन-गुनइलिन। फिर अलाप लेहलिन ओकरे बाद ओनके कंठ से फूट निकलल भैरवी—

सैयाँ बेदरदी दरदिया न बूझे, रहत नजरिया के ओट।

http://bhojpurisahityangan.com

राधा गावत हौ

पूरे पाँच वरिस वाद वनारस आवे के मोका मिलल। पुरानी वात एक एक कयके याद आवै लगल। काशी एक्सप्रेस ज.व इलाहावाद से वनारस क ओर वढ़ल त पारी-पारी से ऊ सवकर चेहरा सामने उभरै लगल, जेकरे साथे जिनगी के ६ वरिस वीतल रहे। इन्टर से विजनेस मैनेजमेंट तक औ डी० ए० वी० कालेज से हिन्दू विश्वविद्यालय तक। दारानगर के सावजी क मकान क ऊ कोठरी, जेमें रहके इन्टर औ वी० काम० पास कइले रहली। अव ना जाने के ओमे होई। हो सकेला हमरे जइसन कउनो स्कूली लड़िका डेरा डलले होय, चाहे कउनो वाल-वच्चा वाला गिरहस्थ। सहुवाइन चाची क छोह त एह जनम में ना भुलाय सकत। कालेज से लउटे में देर होय तव्वो डाँट सुभै के होय औ सवेरे अवेर ले सुतल रही त ऊ तवले वरवराय, जइले उठके किताव खोल के पढ़े न लगी। एतना चौकसी त आपन मतारियो न रख पावत। सहुवाइनै के देख-भाल औ सख्ती क ई नतीजा रहे कि हम आज पढ़ लिख के एह लायक भइली कि वम्वई के एक ठे वड़हर फर्म में असिस्टेंट मैनेजरी करत हईं।

अव जव पाँच वरिस पै वनारस लउटत रहली त मन ईहे करे कि चल के सहुवाइन के ओह कोटरिये में डेरा डाली। वाकी लाचारी रहै। अगर हम वनारस आयके क्लार्क्स होटल से नीचे के कवनो होटल में ठहरित औ ई वात हमरे फर्म के मालूम हो जात त हमार नौकरी जात देर न लगत। हमरे फर्म के ई वरावर ख्याल रहे कि ओकरे अफसरन के

http://bhojpurisahityangan.com

रहन सहन में तनिको अइसन कमी न रहे, जेसे फर्म के इज्जत पै आँच आवे। बम्बई से चलेके पहिलहीं क्लार्क्स होटल में हमरे बदे कमरा रिजर्व हो चुकल रहल ।

याद आइल धर्मेन्द्र के जे सावजी के ओही मकान में एकठे दूसर कोठरी लेके रहत रहलन। ऊ हमरे साथे बी० काम० पास कयके जीवन-बीमा निगम में असिस्टेंट हो गयल रहलन। ओकरे दुइ बरिस बाद ले जब ले हम बनारस में रहली, बराबर भेंट मुलाकात होत रहल। ओ बखत त ऊ भेलूपुर वाले दफ्तरे में रहलन। अब कहीं बदली न होय गयल होय। पाँच बरिस क दिन कुछ होला। अब बच्चा बाबू कहाँ होइहैं, जबन बड़ बाप के बेटवा रहें। इन्टर तीन बरिस में कइसहूँ डकलन, बाकी चेहरा पै तनिको शिकन ना देखाय। तिसरे दिन घेर के हमहन सब साथिन के चाय पियावं। का अबहीं ले ऊ कालिजे में होइहन ?

औ ऊ राधा भौजी। राधा भौजी के याद अउते, मन में जइसे गुदगुदी उठे लगल। राधा भौजी क घर हमरे पड़ोसे में रहल। जब हम बनारस पढ़े अइली, ओकरे दू बरिस पहिले ऊ बियह के ओ मुहल्लामें आइल रहलिन। परसोतम भैय्या खात पियत घर के बड़ा सुग्घर जवान रहलन। ओनके घरे गल्ला क कारबार होत रहल। बाप के साथ ऊ कारबार में हाथ बटावें। परसोतम औ राधा क जोड़ी देख के लोग सिहाय। राधा क सास ना रहलिन, एसे डोली से उतरते गिरस्थी के बोझ कपारे पै पड़ गयल रहल। घरेके काम धंधा से फुरसत पाके, ऊ सहुवाइन चाची के इहाँ चल आवल करें। राधा क सुभाव से चाची एतना खुश रहें कि कहल करें कि राधा साच्छात लक्ष्मी हौ। चाची राधा के दुलार से पगली कहें।

पुरान बात सोचत ई ना बुझायल कि कब रस्ता खतम हो गयल। एक ठे झटका लगल और गाड़ी कैंट स्टेशन पर रुकल। प्लेटफार्म पर

http://bhojpurisahityangan.com

गाड़ी के रुकते एकठे वर्दी वाला बैरा आके सलाम कइलेस औ हमार समान लपेटे लगल। ओकरे वर्दी पर क्लार्क्स होटल क नाँव पढ़ के कुछ पूछे क जरूरत नाहीं भयल। बाहर पोर्टिको में इम्पाला गाड़ी खड़ी रहल। शोफर फर्राशी सलाम कयके दरवाजा खोललेस और पाँच मिनट में हम होटल क एयर कंडीशन कमरा में पहुँच गइली।

तीन दिन त फर्म के काम के झंझट में पड़ल रहली। शहर के बड़े-बड़े रोजगारिन से मिलब जुलब, ओ लोगन के लंच डिनर में शामिल होब, औ रोजगार क पैंतरेबाजी में वखत कटल। हम खुश रहली कि यात्रा क फल अच्छा रहल। हमरे फर्म क इज्जत रोजगार के दुनिया में पहिलहीं से रहल, बाकी एह यात्रा में फर्म के साथ हमरो धाक इहाँ के व्यापारिन में जम गयल।

रोजगार के झंझट में तीन दिन ले ऊ ख्याल मन से एकदम दूर हो गयल रहल, जवन इलाहाबाद से बनारस तक ट्रेन में उभड़ के पुरानी जिनगी के याद ताजी कय देहले रहल। बाकी रोजगार के काम से तनी फुरसत मिलते, फिर सहुवाइन चाची, धर्मेन्द्र, बच्चा बाबू, राधा औ न जाने केतना पुरान संघातिन क चेहरा आंखी के आगे नाचे लागल।

चौथे दिन साँझी क कुल प्रोग्राम कैंसिल कय देहलीं। चल पड़ली दारानगर। क्लार्क्स होटल से दारानगर तक के रस्ता में कउनो फेर बदल नाहीं देखायल, जौन एह पाँच बरिस में भयल रहल होय। होटल के इम्पाला जब दारानगर पहुँचल और हम एकठे पुरान मकान के सामने गाड़ी रोके के शोफर के इशारा कइली त ऊ चकपकायल। सोचले होई कि साहब भुलाय के इहाँ रोके के कहत हउवन। बाकी जब हम फेरू इशारा कइली त ओके गाड़ी रोकही के परल।

ओह दुआरी पै पहुँचतै हम ई भुलाय गइली कि अब हम के हईं। पाँच बरिस के अफसरी में हमार कपड़ा लत्ता त बदली गयल, चाल ढाल

http://bhojpurisahityangan.com

औ परसनालिटियो अइसन हो गयल कि पुरान चिन्हारों के हमें देखते चीन्ह जाव मुश्किल रहल। हमार ध्यान ओहरो नाहीं गयल कि इम्पाला रुकतै पास पड़ोस के लोग बाग के निगाह ओही पै जम गइल। औ जउने वखत लकदक वर्दी वाला शोफर गाड़ी से उतर के दरवाजा खोल के ठाढ़ भयल ओह वखत त देखवइन क आँखि चौंधियाँ गयल। बाकी हमार ध्यान ओह ओर नाहीं गयल। हम सीधे डेवढ़ी लाँघ के घर में पइठ गइली। ठीक वइसहीं जइसे पाँच बरिस पहिले कालेज से लउट के घरे में जात रहली। सहुवाइन चाची अँगना में खटिया पै वइठल चिमटी से खरवूजा के वीया छीलत रहे। हमें घरे में पइठते ऊ अचकचा के ठाढ़ होके अपने माथे के लुग्गा सरकावे लगलिन। हमें समझत देर नाहीं लगल कि चाची हमें चीन्हली नाहीं। अब हम अपने लजाय उठली। हम सोचली कि इहाँ त हमें कुरता धोती पहिनके और पैंदले चाहे रिक्सा पै आवे के चाहत रहल। बाको चाहो के त वेश न वदल पाइत। कुरता धोती त हम पहिनऊ भुलाय गयल रहली। औ अव हमरे पास ऊ रहवो त ना कयल।

'का चाची हम्के चीन्हवों ना कइलू'—हम ठेठ भोजपुरी में कहली। अव चाची क तनीसा तसल्ली भइल औ ऊ आँखि उठाय के हमरे ओरि देखलिन। तबले हम फेरू कह उठली—'अरे हम सिरी किशुन न हइ,' तोहरे गोदी में ६ बरिस रहके अदमी भइल वाटी।'

चाची के आँखि भरि आइल। 'अरे वचवा! तू अइसन भेष वदल के आयल अउवा कि कइसे चीन्ह पायीं।' चाची जइसे निहाल हो गइलिन। 'बइठा बेटा'—कहके चाची अपने कोठरी में जाय के कटोरा में मिठाई ली आय के हमरे आगे धय देहलिन। चाची एकर भारी ओरहन देहालन कि ईहाँ से गइले पर एको चिठियो हम ना देहली।

एतने में चाची के धरे के दलान में पास पड़ोस के मरद, मेहरारु औ लड़िकन के भीड़ जुटै लागल। चाची क निगाह पड़ल त घुरुक के कह-

http://bhojpurisahityangan.com

लिन—'का भीड़ लगउले हउवा लोगन, सिरी किशुन के ना जनता, जवन एही घरवा में रहके पढ़त रहलन।' चाची के आँखि में एकठे चमक देखायल। ऊ गंभीर होके कहलिन—'अव हमार सिरी किशुन बहुत बड़ा अफसर हो गयल हौ। कलक्टरो से ढेर तनखाह पावेला।' लोगन के चाची क ई बात पतियाये के पड़ल, काहें कि जइसन गाड़ी चाची के दुआर पर ओह समय खड़ी रहल, ओइसन गाड़ी पै चढ़त लोग कलक्टरो के नाहीं देखले रहल।

जलपान कराय के चाचीं पहले ईहे पुछलिन कि दुलहिन कहाँ वाय। हमें हँसी आइल औ हम कहली कि चाची अवहीं कउनो विटिया के वाप तइयारे नाहीं भयल। चाची हमरे एह जवाव पै बहुत नाराज भइलिन।

फिर त वतकहीं सुरू हो गयल। मुहल्ला भर के ऊ लोगन के हाल-चाल चाची वताय गइलिन, जेके हम जानत रहली। हमरे ओ संगिन साथिन के चर्चा चाची कइलिन, जेकरे वारे में चाची के थोरिको जानकारी रहे। वाकी डेढ़ घंटा में चाची एक्को वार राधा भौजी के नाँव ना लिहलीं। हम राधा भौजी के वारे में जाने के बेचैन होत रहली, वाकी न जाने कौन संकोच हमें अइसन दवाय दे कि हम भउजी के नावं न ले पाईं। हम सोचे लगली कि का राधा भौजी मुहल्ला छोड़ के कतौं अउर त ना चल गइलीं। अव हमार सवुर समाप्त हो चलल रहल।

हमरे सामने ओही अँगना के, जवने में आज हम बइठल हई, पाँच वरिस पहले के ऊ तसवीर नाचे लगल, जव राधा भौजी आके एके मनसायन कय देत रहली। राधा भौजी मुहल्ला के त पतोह रहलीं, वाकी एह अँगना में जव आवें त चाची के विटिया वन जाँय। ओनके चिकारी से हमरे नाकी दम हो जाय। हमें आगे के डहर न मिले। भौजी हमार समउरिये रहें, वाकी ओनकर सुभाव एतना निर्मल रहे कि मन के कउनो कोना में कलुष कत्तों खोजलहुं न मिलें।

http://bhojpurisahityangan.com

ओह राधा भौजी क हाल जाने वदे औ ओन्हें देखे वदे हमार मन छटपटात रहे औ चाची के दुनिया भर के पंचायत अइसन घेरले रहल कि जइसे राधा के कउनो गिनतियो ओनके आगे नाही रहल। उकताय के हम पूछी वइठली—'राधा भौजी क का हाल हौ चाची।'

राधा क नाँव सुनतै जइसे चाची तिलमिलाय उठलीं। ओनकर गला रूँधाय गयल। आँख भरभराय आइल। 'का वताईं बचवा, राधा ओह जनम के देवी रहल। कउनो कर्म क फल भोगे इहां आइल वाटे।— चाची वड़ी मुश्किल से कह पउलीं। चाची क ई भूमिका हमरे समझ में ना आइल। वाकी एतना त बुझाय गयल कि राधा प कउनो भारी विपत पड़ल हौ।

कुछ चुपाय के चाची कहे सुरू कइलिन—'तोहरै गइले के बाद ओही साल परसोतम के बाप मर गइलन। नई उमर और बाप क छोड़ल रोजगार। परसोतम कुसंगत में पड़के दारू सवाद लेहलन। रोज संझा के एही वखत घरे से निकल जाँय और आधी रात बितले नसा में चूर लउटें। धीरे धीरे दुकान दौरी खतम होवे लगल। पहिले त विलायती पीयत रहलन। जव पैसा क टोटा पड़ल त देशी ठर्रा शुरू भयल। जव ओहू क जुगाड़ होव मुश्किल होवे लगल त स्पिरिट वाली सस्ती शराव क पारी आइल! राधा समुझावत समुझावत थक गइल, वाकी परसोतम क जवन लत लगल ऊ नाहीं छुटल। एक दिन ऊहो आयल जव परसोतम रात के घरे नाहीं अइलन औ सबेरे ओनकर लाश कम्पनी वाग के पिछवारे वाली गली में पड़ल मिलल। ओह दिन शहर में अइसन डेढ़ दर्जन लाश जगह-जगह पड़ल मिलल रहल। पुलिस जाँच कइलेस त मालूम भयल कि शराव में जहर मिलल रहल।

चाची कहतै गइलिन राधा क करम फूटि गयल। अव ऊ सुखाय के काँट हो गइल वाय। घरे के बहरे नाहीं निकलत। मकान में एकठे भले

http://bhojpurisahityangan.com

मानुस किरायदार हउवन। ओही किराया से राधा के गुजर हो जाला। लोगन क कहव हौ कि राधा पागल हो गइल हौ। काहें न पागल होई। जेकर भरल जवानी में दुनिया उजड़ जाय, ऊ पागल न होई त का होई।

चाची एतना कहके अँचरा से आपन आँख पोछे लगलिन। हमे त जइसे काठ मार गयल रहे। एतने में बड़ी सुरीली आवाज में एकठे गीत सुनायल। आवाज में एतना दर्द रहे कि सुनवइयन क करेजा फट जाय। औ गीत के ई कड़ी वार-वार दर्द के साथ दोहरात रहे :—

अइसन शराव पिया तोहके पियइबे,
ढरके न पाई जवानी।
वलम कलवरिया न जइहा।

तनिक देर वदे हमरे और चाची के वीच में सन्नाटा रहल। फिर चाची वोललिन—'राधा गावत हौ।' फिर तनी सा चुपाय के कहलिन—रोज एही वखत ईहै गीत राधा गावैलै।' ई उहै बखत हौ जव राधा के लाख समझउले बुझउले और चिरौरी कइले पै भी परसोतम कलवरिया के डहर घरत रहलन। फिर न त चाची कुछ कह पउलिन औ न हमार कंठ खुलल। चारो आँख लोर से भींगल रहल।

http://bhojpurisahityangan.com

दसखत

वड़की विटिया के तीज भेजे के जवन लिस्ट वनल रहल ओमे कटौती के सवाल पै रात घरे में जवन किचकिच भयल ओकरे कारन सबेरे सूत के उठलीं पै मूड खराव औ मन विगरलै रहल। रह रह के ईहै सोचीं कि आज जे हाथ तंगी में न होत त ओह लिस्ट में दुई-चार आइटम त हम अपनै बढ़ाय देइत। मुँह हाथ धोके वइठका में वइठ के मन बदले के कोशिश करत रहली, वाकी अइसन वुझाय अव एह समय मन काबू में ना आय सकत।

सामने टेबुल पै भोजपुरी संसद के अध्यक्ष डाक्टर स्वामी नाथ सिंह के सनेस पड़ल रहल कि एकठे कहानी दुइ-एक दिन के भितरै चाही। डाक्टर साहब के कहव टारव हमरे बदे वड़ा मुश्किल रहे, वाकी ओह मूड में कहानी के कउनो प्लाट पँजरवे न फटके। खिझियाय के डाक्टर साहब के सनेस, जवन ओनकर लड़िका वीरेन्द्र दुई दिन पहले दे गयल रहलन पेपरवेट से दवाय के सिगरेट सुलगौली और टटकै आयल अखवार में आँख गड़ाय लेहली।

भारत औ पाकिस्तान के वीच दिल्ली में चल रहल वतकही के समाचार के दुइये-चार लाइन पढ़ले होव कि मास्टर वनवारी शर्मा आय धमकलन। ऊ एकठे लेख लेके आयल रहलन जेके चाहत रहलन कि हम ओके अपने अखवार में छाप देई। हम विना देखलही जानत रहली कि ई लेख रद्दी के टोकरिये में फेंके लायक होई, वाकी ई कहित त कइसे।

http://bhojpurisahityangan.com

हम ई कहके मास्टर साहब से जीव छोड़ावे चहली कि एके हम साहित्य सम्पादक के दे देव। मास्टर साहब एतने सस्ते में छोड़े वाला ना रहलन ऊ ई जिद करै लगलन कि लेख के हम पढ़ लेई। खुनुस बढ़ल जात रहल, बाकी मास्टर साहब जान पहचान के रहलन औ भलमंसी के तकाजा रहे कि अपने दुआर पै मीठै बोलीं।

मास्टर साहब से छुट्टी मिलतै फेर मन डाक्टर साहब के सनेस के ओर गयल। ओह मन हूसियतो में जब ध्यान गयल कि आज सबेरे सबेरे जेह दुइ जीवन से पाला पड़ल ओम्में एक डाक्टर औ एक मास्टर, त टर के जोड़ पै हँसी आइ गइल। औ तुरतै ई सोच के मन बदल गयल कि एडीटर होवे के नाते त हमहूं ओ तुक में फिट हई।

छन भर बदे मन जरूर बदलल, बाकी बिना प्लाट के कहानी कइसे गढ़ाय। डाक्टर साहब अगर सामने होतन औ तावबाजी के कउनो बात हो जात, तब त बिना प्लाट के प्लाट बन जात। बाकी अकेले बइठ के एह समय केतनो सोचत हई तब्बो कउनो प्लाट खोपड़ी में धँसते नाहीं हौ।

उठके घरे में गइली त बिटिया के मतारी आय के कहलिन कि बचिया के बहिन जी कहले हई कि आज किताब लेके न अइबू त क्लास से बहरे निकास देब। जेब खाली रहले पै खीझ ढेर आवैले। छुटतै जवाब देके उठ गइली—'कहदा आज न जाय स्कूल।' बहरे बइठल देखली कि बचिया मुँह लटकैले स्कूल जात रहल।

बिटिया क ओरमल मुँह औ ई चिंता कि आज बहिन जी दर्जा से निकाल दीहें त दर्जा क लड़कियन क आगे ओकर का हाल होई, मन पै रह रह के चोट करत रहल। बहिन जी क कउन दोष। जुलाई बीत गयल। अगस्त आधा डाँक गयल। स्कूलन में पढ़ाई शुरू। अब जे लड़िकी के बाप ओकरे बदे किताबो के जुगाड़ न कय पावे, ऊ ओके स्कूलै

http://bhojpurisahityangan.com

काहें भेजे। अइसन बुझायल कि बहिन जी बिटिया के दर्जा से ना निकलि , दर्जा भर के सामने हमरे मुँह पें थप्पड़ मरिहें।

ईहे सोचत माथा घुमत रहे। घर में से बुलाहट आय चुकल रहल कि खाना तैयार हौ। बाकी आपन हिम्मत त घरो में मुँह देखावे क नाहीं पड़त रहल। बिना कुछ कहले, बहरहीं से चुप्पे दफ्तर के डहर धइली।

दफ्तर में ओह समय चपरासी छोड़के आउर केहू न आयल रहल। चपरासियो देखके कुछ सकपकायल, बाकी ऊ ईहै सोचले होई कि कउनो जरूरी काम से जल्दिये आय गयल होइहन। टेबुल पें ताजा अखबार धराय गयल। डाक भी सामने धयल रहल। दस पाँच मिनट ले जब कउनो कागज में हाथ ना लगउली त चपरासी क परेशानी बढ़ल। ऊ कुछ समुझ ना पउलेस त पुछलेस— चाय के कह आयीं।' हम खाली मूड़ी हिलाय देहली।

खलिइर बइठल देख के फोरमैन पहुँचलन औ कहलन—'साहब कल साँझ के तिसरे पेज बदे कापी नाहीं मिलल। कम्पोजिटरन क हाथ रूकल हौ। हम अच्छा कहेके ओनके टारे चहली, बाकी जब ऊ ठाढ़े रहलन त पूछै के परल कि का बात हौ। फोरमैन कहलन—'परसों जन्माष्टमी के त्योहार हौ, कर्मचारी लोग पेशगी बदे कहत रहलन।'

'ठीक हौ, मुनीबजी के आवेदा'—ई कहके ओनके त बिदा कइली, बाकी एक झटका जइसन लगल। त्योहार त हमरो घरे होई। जन्माष्टमी के झांकी सजावे क सउख लड़िका साल भर से संजोय के रहले होइहन। ई सोचते फेर याद आ गयल किताब बदे बिटिया के बहन जी क धमकी।

दफ्तर के समय हो गयल रहल। धीरे-धीरे लोग आवे शुरू कय देहले रहलन। मुनीबजी अपने समय से आय गइलन। ओनके सामने

http://bhojpurisahityangan.com

अउते कहली कि मुनीवजी आज फोरमैन कर्मचारियन के पेशगी देवे वदे कहत रहलन। आज सांझले वन्दोवस्त कय लीहा।

मुनीवजी छुटते कहलन—'हाँ, आफिसो के लोग पेशगी वदे टोकारा देहले रहलन।'

'भाई त्योहार त हमरो घरे पड़ी औ हमहू के पइसा क जरूरत पड़ी।'—कहे के त कह गइली, वाकी ई सोच के जीव लजाय गयल कि मुनीवजी का सोचिहें। मुनीवजी के ई का पता रहे कि मई, जून औ आधा जुलाई तक हित-नात औ संगी-साथिन के इहाँ वियाह-शादी में करनी करै औ नेवता भेजे में आठ-नौ सौ रुपया के चोट पड़ल हो। बीच जुलाई में लड़िका-लड़िकिन के फीस औ यूनीफार्म में अच्छी रकम निकल गयल। सोचली अगस्त में तनी थाही रही, वाकी एकर चेतेना रहल कि विजली क विल, टेलीफोन क विल औ मकान के टिकस मिलके एकट्ठे चार सौ रुपया बदे मुंह बउले ठाढ़ हो जइहें। इ कुल जमा करव जरूरी रहे, नाहीं त विजली, फोन औ घूरे क पानी कटत त देर ना लगत। ई गति त घर घर क हौ कि ६ महीना पहिले, जहाँ चार सौ रूपया खरच कय के हम महिन्ना भर वदे गेहूं, चाउर, दाल, कोयला, तेल, घी, मसाला, चीनी, डालडा से सुचित हो जात रहली, उहाँ अव छः सौ रूपयो में सवकर जुगाड़ मँहगी से मुश्किल हो गयल वाय। नीक तनखाह मिललहूं पै आजकल मँहगी में सज्जे वजट उघराय गयल हौ। ई कुल फजीहत से हम निहंग हो गइल हई, ई वात त मुनीव जी से चाहे दुसरहूं से कहलो नाहीं जाय सकत।

साँझ के वेरा मुनीव जी सब कर्मचारिन क लिस्ट लेके अइलन, जेमें सवके नाँव के आगे कुछ न कुछ रकम लिखल रहल। वाकी ओह लिस्ट में हमार नाँव ना रहे। हम मूड़ी गड़उले लिस्ट पै मंजूरी के दसखत

http://bhojpurisahityangan.com

कइके मुनीवजी के लउटा दिहली औ ठीक वइसहीं चुप्पे उठके घरे चल दिहल, जइसे सबेरे चुप्पे घरे से उठ के दफ्तर आइल रहली।

घरे आके वइठहू ना पउली कि डाक्टर साहव के दूसर सनेस लेके एकठे अदमी आयल। डाक्टर साहव लिखले रहलन कि आज कहानी जरूर मिल जाये के चाही। विना कुछ वोलले ओही चिठिया के पीठि पै एतना लिखके ओही सनेसिया के हाथ दे देहली—'आज मूड़ औ मन अइसन नाहीं हौ कि कहानी लिखाय सके। माफ करव।'

http://bhojpurisahityangan.com

छात्र नेता क हत्या

साँझ के सात वजत रहल। गोदौलिया से लहुरावीर वाली सड़क विजली के ट्यूव औ वत्तिन से जगमगात रहल। पड़क पं कार, वस औ रिकशा क अइसन ठेलमठेल रहल कि पैदल चलैवालन क कदम कदम पं खतरा बुझाय। नगर महापालिका सड़क के चौड़ी करे वदे दूनो ओर के पटरी कटवाय के सड़क में मिलाय देहले हौ, वाकी एसे ट्राफिक क कउनो सुतार नाहीं भयल। कतों कतों तनी तुनी पटरी वचलौ हौ त ऊ खोमचावालन औ सामने के दुकानदारन क जागीर होय गयल हौ। एही भीड़ भाड़ में एकठे जवान, जवन कउनो कालेज क छात्र बुझात रहे, मूड़ी नीचे कइले कुछ सोचत चेतगंज क चउमुहानी डाँक के लहुरावीर के ओर वढ़त रहल। विक्रीकर दफ्तर से पचास कदम पहिलहीं ओह युवक के पीछे एकठे मोटर साइकिल रूकल। अइसने भीड़ भाड़ औ शोर गुल के बीच युवक क ध्यान ओहर न जाव कउनो अचरज क बात ना रहल। मोटर साइकिल पं दूइठे युवक वइठल रहलन। पीछे वाला मोटर-साइकिल के रूकतै उतर गयल औ आगे वाला मोटर साइकिल वढ़ाय के आगे निकल गयल। जवन युवक मोटर साइकिल से उतरल रहे, ऊ तेजी से आगे वढ़के पैदल चले वाले युवक के वाँयी ओर वगल में पहुंचल। ओकर हाथ बुशर्ट के भीतर गयल औ तुरते वाहर निकल के ऊपर उठल त ओम्मे चमचमात छुरा रहल जौने के मुठिया युवक के मुट्ठी में कसायल रहल। देखत देखत छुरा वाला हाथ नीचे गिरल औ खच्च से अवाज होतै पैदल चले वाला युवक सड़क पं गिर के ढेर हो गयल। छुरा ओकरे वाँयी पँजरी में काफी नीचे ले घुस के फँस गयल

http://bhojpurisahityangan.com

रहल। आम सड़क पै एतना वड़ा कांड अइसन पलक झपत होय गयल कि केहू देखलेस औ केहू नाहीं देखलस। जे देखलेस ऊ त गत्ते से टसक गयल। जे नाहीं देखलेस ऊ घूर घूर के सड़की पै गिरल युवक के देखे लगल। जहाँ ऊ युवक गिरल रहल उहाँ से चेतगंज थाना क दूरी मुश्किल से सौ गज होई।

तमाशवीन लोगन के निगाह जव युवक के पँजरी में धँसल छुरा पै पड़ल त होस उड़ गयल। खवर थाने में पहुँचल त थानेदार सहित सज्जे थाना वउरायल उहाँ उलट पड़ल। युवक दम तोड़ चुकल रहल औ हत्यारा आपन काम कय के चम्पत हो चुकल रहल। थानेदार जव छुरा खींच के पँजरी से वहरे निकललन त घाव में से खून क फुहारा वह चलल। देखत-देखत एक गज के घेरा में धरती रँगा गइल। छुरा देखले पर अइसन बुझायल कि हत्यारा क हाथ काफी सधल रहे, काहें कि दुई इञ्च चौड़ा ब्लेड के छुरा चार इञ्च ले खून से सनल रहे।

थाने से सौ गज पर सांझे के हत्या। शहर भर में त सनसनी फइली गइल पुलिसो के गरमी चढ़ गइल। सज्जै अखवारन के रिपोर्टर पहुँच के पुलिस से भाँति-भाँति के सवाल करै लगलन। पुलिस के कुल वड़का अफसर ऊहाँ घहराय पड़लन। सरकारी डाक्टर आय के जाँच कयके युवक के मरल वतउलन। फोटोग्राफर कई ठे फोटो लेहलेस, तब लाश उठाय के थाने में लीआवल गइल। बड़े कप्तान के कहले पर जव थानेदार युवक के कपड़ा टटोललन त पैंट के जेवा में एकठे पर्स निकलल, जउने में दस-दस रूपया के चार औ एक-एक के पाँच ठे नोट रहल। दुसरके जेवा में एक ठे अन्तर्देशीय पत्र औ रोडवेज वस के एकठे टिकट मिलल। वस के टिकट लंका से चेतगंज तक के रहल औ चिट्ठी पै पावे वाले क नाम राघवेन्द्र कुमार मारफत राजकुमार राजेन्द्रशंकर, वड़ादेव, वाराणसी लिखल रहल। राजकुमार राजेन्द्रशंकर शहर क नामी फर्म

http://bhojpurisahityangan.com

हौ। तुरते टेलीफोन डाइरेक्टरी देखल गयल त दुकान औ घरे दूनो जगह के टेलीफोन नम्मर मिल गयल। दुकान त बन्द हो गइल रहल, बाकी घरे फोन कइले पं राजेन्द्रशंकर से पता चलल कि राघवेन्द्र कुमार ओनके बेटवा क नाम हौ, जे एम० ए० कइके विश्वविद्यालय में रिसर्च कय रहल बाटन। ई पुछले पर कि ऊ घरे हउवन, ओनकर पिता कहलन कि घरे त नाहीं बाटन तिसरे पहर के विश्वविद्यालय गयल हउवन। टेलीफोने से ईहो पता चलल कि दुकान त बड़ादेव में हौ बाकी रिहायसी घर थाने से थोड़िके दूर गोवरधन सराय में हौ। राजेन्द्रशंकर शहर क मानल-जानल रईसन में हउवन। पुलिस के कुल पूछताछ से ऊ घवड़ा गयलन। पुलिस कप्तान ओनके ढाढस बन्हावे के कोशिस करत कहलन कि हम अपनै आवत हईं।

एतने वड़े अदमी के लड़िका क सरेशाम हत्या थाने के सटले हो जाय, एकर गढ़ूपन कप्तान साहव बूझत रहलन। ऊ शहर पुलिस के सीनियर इन्सपेक्टर प्रकाश नारायण माथुर के एह मामला के जाँच के भार सौंप के कहलन कि माथुर तू खुफिया विभाग में दस बरिस रहके वड़-वड़ काम कइले बाटा। ई मामला तोहरे रहते जे हाली ना फरियायल त हम मुँह देखावे लायक ना रहव।

पुलिस कप्तान थाने के नायव दारोगा के लेके राजेन्द्र शंकर के घरे गोवरधन सराय पहुँचलन। ओनके सामने बड़ा कठिन काम रहे केहू वाप के आवरे जवान बेटा के हत्या हो जाये के खवर देव। बाकी ऊ अनुभवी अफसर रहलन। कइसहूँ घुमाय फिराय के वात कहहीं के पड़ल। राजेन्द्र शंकर त सुनतै थउस के गिर पड़लन। खवर घरे के भीतर पहुँचत देर ना लागल। रोवे पीटे के ऊ कुहराम मचल कि कप्तानो साहव के रूमाल निकाल के आपन आँख तोपि लेवे के पड़ल। कइसहूँ राजेन्द्रशंकर औ ओनके जेठरा लड़िका मानवेन्द्र कुमार के अपने गाड़ी में बइठा के थाने

http://bhojpurisahityangan.com

पर ली अइलन। ई लोगन के पछवें घरे के कुल परानी घरे के मोटर में लदल फनल थाने पं पहुँचलन। राघवेन्द्र क लाश देखतै सबै पछाड़ मार-मार क गिरै लगल। पुलिस वालन के समझी में न आवे कि का करे के चाही।

जहाँ थाने में एक ओर रोवन पीटन औ समुझावन बुझावन होत रहे, दूसरी ओर इंसपेक्टर माथुर अपने काम में जुट गइलन। ऊ तुरते पुलिस लाइन फोन के पुलिस के कुत्ता स्क्वायड के मास्टर के बोलउलन जे हुकुम मिलले के बीस मिनट के भितरै जासूस कुतिया रानी के लेके थाने पं पहुँच गइलन।

इन्सपेक्टर माथुर कुत्ता स्क्वायड के मास्टर हमीद खाँ के ऊ छुरा देहलन जउने से हत्या कइल गइल रहल। मास्टर हमीद रानी के पीठ थपथपाय के ओके ऊ छुरा सुघँउलन। रानी छुरा सूंघ के हट गइल। तब मास्टर हमीद रानी के लेके इन्सपेक्टर माथुर के साथ उहाँ गइलन, जहाँ राघवेन्द्र के हत्या भइल रहल।

ओह जगह पं जेहाँ तक खून फइलल रहल, ईटाँ से घेर देहल रहल। औ पुलिस के दुइ ठे जवान उहाँ तैनात रहलन। जब उहाँ पहुँच के मास्टर हमीद रानी के नाक के पास छुरा ले गइलन त गुर्रा उठल और दक्खिन ओर तेजी से बढ़ल। ऊ जमीन सुँघत आगे बढ़ के दहिने हाथ एकठे गल्ली में घूम गइल। इन्सपेक्टर माथुर बड़े ध्यान से देखत मास्टर हमीद के साथे चलत रहलन, जे रानी के जंजीर अपने हाथ में धइले रहलन। जेह तरह से रानी आगे बढ़त रहल ओसे इन्सपेक्टर के एह बात में तनिको शक नाहीं रहल कि हत्यारा छुरा मारके एही रस्ते से भागल हौ। रानी जमीन सूँघत-सूँघत पिशाचमोचन के ओर मुड़ल त इन्सपेक्टर सोचे लगलन कि ई त कउनो गुण्डा के काम मालूम होत हौ, काहें कि शहर के ऊहो जवार गुण्डन बदे सरनाम हौ। एतने में रानी एकठे घरे

http://bhojpurisahityangan.com

के दुआरी पै जाके रूक गइल औ आगे दूनो गोड़ उठाय के लगल पंजा से केवाड़ी खुरचे।

इन्सपेक्टर माथुर औ मास्टर हमीद एक दुसरे क मुँह तकलन। केवाड़ी भित्तर से वन्द रहे। ऊ सिकड़ी खटखटउलन त भित्तर से अवाज देत एकठे वूढ़ अदमी आय के केवाड़ी खोललन। केवाड़ी खुलते रानी दलान में घुस गइल, वाकी आगे ना वढ़ल। रानी दलान के वहरे लउट आइल औ गल्ली में एहर ओहर सूँघ के फेर दलान में जाय के रूक गइल। इन्सपेक्टरो औ मास्टरो के रानी ई हरकत नाहीं समझ में आइल जव वुढ़ऊ किवाड़ी खोलले रहलन ऊ टुकुर-टुकुर ई तमाशा देखत रहलन। ओनके जइसे वकारे ना फूटत रहल।

इन्सपेक्टर के इशारा पै मास्टर हमीद रानी के किनारे खींच लेहलन। अव इन्सपेक्टर आगे वढ़ के वुढ़ऊ से ओनकर नाँव-गाँव, काम-धंधा औ पर-परिवार के वारे में पुछलन। ऊ वुढ़ऊ, जेकर उम्र लगभग ६५ वरिस के रहल होई, आपन नाँव जयकरन सिंह वतउलन। ऊ वतउलन कि हम इलाहावाद जिला के हड़िया इलाका के रहे वाला हई। गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपली से पेंसन लेके आखिरी समय में काँशीवास के इच्छा से इहै छोटासा मकान खरीद के एही में रहीला। ईहाँ सिर्फ दुई परानी हई। दुई ठे लड़की हई, जे वियह गइल वाटीं औ एकठे लड़िका हौ जवन भोपाल के सरकारी कारखाना में असिस्टेन्ट इंजीनियर हौ। जयकरन सिंह ईहो कहलन कि अवहीं शरीर थकल ना हौ एसे दुईठे ट्यूशन करीला, जेसे अढ़ाई सौ रुपया मिल जाला। काम कइले से जीवो लगल रहला और आमदनी हो गइले से लड़िका के मुँहों ना जोहे के पड़ेला।

जयकरन सिंह क बात एतना स्वाभाविक रहे कि इन्सपेक्टर के शक करे के कउनो गुन्जाइस नाहीं रहल। वाकी कुतिया रानी एह दलान में

http://bhojpurisahityangan.com

काहें आइल। एह सवाल क जवाव ओनके मिले के चाही। इन्सपेक्टर के पुछले पै जयकरन सिंह वतउलन कि ऊ एक ट्यूशन संझा के ६ से ७ वजे तक औ दुसरका ओकरे वाद ७ से ८ वजे तक करेलन। दूनो ट्यूशन वुलानाला के दुई रईसन के इहाँ हौ। आज भी ऊ ट्यूशन पै गयल रहलन और थोड़िके देर पहले ऊँहा से लउटलन हैं। फिर इन्सपेक्टर सीधा स वाल कइलन कि का आज शाम के ७॥ वजे के वाद कोई इहाँ आयल रहल। जयकरन सिंह जवाव देहलन कि जव से हम लउट के अइली है, केहू नाहीं आयल। ओकरे पहिले के हमें नाहीं मालूम।

इन्सपेक्टर कहलन— देखा ठाकुर साहव, हम एकठे कतल के मामले में जाँच करत हई। एम्मे आपके मदद हमें चाही। हम तोहरे घरवाली से भी दुइ एक वात पूछै चाहीला।'

पहले त पुलिस अफसरन के जासूस कुतिया के अइलहीं से जयकरन सिंह के पसीना वहत रहल, अव कतल के मामिला सुनके घवड़ाय गइलन। रोआइन मुँह से कहलन—'इंसपेक्टर साहव हम सोझ अदमी हई। हमसे कतल से का मतलव।'

'तोहसे कतल से मतलव नाहीं हौ, वाकी ई जासूस कुतिया वतावत हौ कि हत्यारा इहाँ तक आयल रहे।'—इंसपेक्टर तसल्ली देत कहलन।

अव त जयकरन सिंह के कउनो चारा ना रहल। कतल क नाँव से ऊ पहिलहीं हदस चुकल रहलन। घरे में जाय के ठकुराइन के वोला ली अइलन। जिनगी में पहिली बार पुलिस के सामने आवे में ओनकर गोड़ काँपत रहल।

इंसपेक्टर माथुर पुछलन—'माताजी संझा के आप घरवै रहलू कि कत्तौ वहरो गइल रहलू।'

हम त दिन भर घरे में से निकलबे नाहीं कइली हे वावू।'

http://bhojpurisahityangan.com

'संझा के केहू इहाँ आयल रहल।'—इन्सपेक्टर के दूसर सवाल भयल।

'नाहीं भइया, संझा के मास्टर के गइले पै हम दलानी के केवाड़ी वन्द कइके उप्पर खाये के वनावे में लगल रहली। तव ले ते केहू नाहीं आयल। मास्टरै अइलन त केवाड़ी खुलल।'

इन्सपेक्टर पुछलन—'मास्टर के गइले पै कवन केवाड़ी वन्द रहल, दलाने के भित्तर के कि वहरे के।'

'दलाने के भित्तर के अँगना वाली केवाड़ी वन्द रहल। वहरे के एसे ओंठकावल रहल कि मास्टर लउटिहें औ अवाज दीहें त उप्पर रहले अव सुनात नाहीं।'—बूढ़ा कहके वइठ गइलिन।

'संझा के दलाने में केहू के आवे के आहट सुनायल रहल।'—इन्सपेक्टर के एह सवाल पं बूढ़ा कहलिन कि हम त नाहीं सुनली। बुढ़ौती में कानौ अव पूरा साथ नाहीं देत।

जयकरन सिंह के धन्यवाद दे के इन्सपेक्टर थाने पै लउट अइलन, वाकी ओकरे पहिले दुइ ठे चलाक सिपाहियन के उहाँ लगाय अइलन औ ओनके हुकुम देहलन कि एह घरे के सादे वेस में चौवीसो घंटा निगरानी कयल जाय औ घरे में आवे वालन पै निगाह रखल जाय। संगही जयकरनो सिंह चाहे ओनकर मेहरारू कत्तो जाँय त चुप्पे चुप्पे ओनहू क पीछा कय के देखल जाय कि लोग कहाँ कहाँ जाला।

कप्तान साहव के सव वात वताय के इन्सपेक्टर माथुर दुसरे दिन सवेरे राजेन्द्र शंकर के घरे पहुँचलन घर में मातम छायल रहल। सवकर आँख रोवत रोवत फूलल रहल। राजेन्द्र शंकर से कह के इन्सपेक्टर ओह कमरा में गइलन, जउने में राघवेन्द्र रहत रहलन। कमरा ढंग से सजल रहल। टेवुल क पास कुर्सी पै वइठते इन्सपेक्टर के तेज निगाह टेवुल पै धइल किताव के नीचे दवल कउनो फोटो के कोना पै पड़ल।

http://bhojpurisahityangan.com

इन्सपेक्टर किताव टार के फोटो उठाय लेहलन। ऊ फोटो एक ठे खूबै सुघर लड़की के रहल, जेकर उमिर ईहे अठारह-वीस के रहल होई। ऊ फोटो देख के राजेन्द्र शंकर के ओर तकलन त राजेन्द्र शंकर कहलन कि ई फोटो शीला के हव। शीला एही साल वी० ए० पास कइलेस हय। वहुत अच्छी औ सुशील लड़की हौ। राघवेन्द्र के ईहाँ पढ़ै आवत रहल। ई फोटो राघवेन्द्र के खींचल हौ।

राजेन्द्र शंकर से इन्सपेक्टर के एह वात के कउनो भनक नाहीं मिल सकल जेसे पता चलत कि राघवेन्द्र के केहू से दुश्मनी रहे। कुछ एहर ओहर के पूछताछ के इन्सपेक्टर शीला के घरे के पता लेके उहाँ से उठ अइलन। ऊहाँ से इन्सपेक्टर सीधे शीला के घरे गइलन। शीला के घरे भी राघवेन्द्र के हत्या क खवर पहुँच चुकल रहल। सवै उदासल रहल। शीला क वाप राघवेन्द्र क बेटवा मतिन मानै।

इन्सपेक्टर माथुर काफी देर ले शीला से राघवेन्द्र औ संगी साथिन के वारे में पूछताछ कइलन, वाकी ओहू से कुछ काम सधै के लच्छन नाहीं देखात रहल। एतना जरूर मालूम भयल कि राघवेन्द्र यूनियन क काम में काफी दिलचस्पी लेत रहलन औ लड़िकन पै ओनकर अच्छा प्रभाव रहे।

कुछ देर वाद शीला क आँख में चमक जइसन देखाइल। ऊ कहलिन—'इन्सपेक्टर साहव, एहर थोड़ दिन से राघवेन्द्र के आइब जाइव शंकर सिंह के इहाँ होत रहल, जेकरे बारे में हम ढेर त ना जातिन, वाकी उहो अपने के छात्र नेता कहेलन। संकटमोचन के पास ओनकर डेरा हौ। एक दिन विश्वविद्यालय से लउटत के राघवेन्द्र ओह डेरा के वतउले रहलन।'

इन्सपेक्टर के पुछले पर शीला कहलिन शंकर से राघवेन्द्र क मेल-जोल हमें न जाने काहें नीक ना लगत रहल।

http://bhojpurisahityangan.com

इन्सपेक्टर अवहीं अन्हारे में टोवत रहलन, तब्बो कुछ आशा बँधल। ऊ भेलूपुर थाने पै गइलन औ ऊहाँ के इन्सपेक्टर से शंकर के वारे में पूछलन। ऊहाँ के इन्सपेक्टर तिवारी बतउलन कि ऊ अबही एही साल ईहाँ आयल हौं। एम० ए० के पहिला साल में नाँव लिखौले हौं। वइसे सुनले हई कि इलाहाबाद से बी० ए० कइले के बाद ला भी कर चुकल हौ। गुण्डा औ लफंगा किसिम के लड़िका ओकरे इहाँ ढर जुटेलन, एही से हमरो निगाह ओहर पड़ल।

इन्सपेक्टर माथुर एह सोच में पड़ गइलन कि राघवेन्द्र अइसने अदमी के इहाँ कइसे आवत जात रहलन। का राघवेन्द्रो के साँठ-गाँठ अइसने लोगन से रहल। बाकी ई ख्याल देर ले ना टिकल। काहें कि अवहीं ले राघवेन्द्र के वारे में कतहूँ एक्को खिलाफ वात सुने क ना मिलल रहल। ऊ इन्सपेक्टर तिवारी से कहलन कि शंकर के घरे के दुई चार दिन चौवीसो घंटा निगरानी करावल जाय औ कउनो खास वात भइले पै हमे तुरत खवर देवल जाय। इन्सपेक्टर तिवारी ओही समय सादे पोशाक में सिपाहिन के ड्यूटी शंकर के घरे लगाय देहलन। इन्सपेक्टर माथुर औ सिपाहिन के काम के वारे में समुझाय के लउट गयलन।

ओह दिन दिन भर औ दुसरे दिन साँझ ले इन्सपेक्टर माथुर एह मामले में तनिको आगे न खसक पउले के चिन्ता में रहलन। एह वीच शहर के कुल अखवार आसमान सिर पै उठाय लेहलन। व्यापारियो गोल वाँध के कलक्टर औ पुलिस कप्तान के इहाँ पहुँच के गोहार लगउलन। कप्तानो के जीव साँसत में पड़ल रहल। बाकी ओनके इन्सपेक्टर माथुर पै भरोस रहल।

संझा के इन्सपेक्टर माथुर के पास वायरलेस से इलाहावाद से सनेस आयल। इन्सपेक्टर माथुर के पहिले दिन जव इ मालुम भयल कि शंकर

http://bhojpurisahityangan.com

सिंह एह साल के पहिले इलाहाबाद रहलन, त ऊ तुरते इलाहाबाद पुलिस के वायरलेस से सनेस देहलन कि शंकर सिंह के बारे में जवन कुछ जानकारी मिल सके, भेजल जाय। वोही के जवाब ओनके इलाहाबाद पुलिस खबर दिहले रहल कि शंकर इहाँ पढ़त रहलन औ ओनकर साथ शहर के चुनल बदमाशन से रहे। इम्तियाज औ जग्गू नाँव के दुई ठे मशहूर गुण्डा ओनके यहाँ बार-बार आवें जाँय। जब पुलिस के निगाह ओन पर तनी कड़ेर भइल त ऊ ईहाँ से खसक गयलन। ई पता नाहीं कि एह समय कहाँ हउवन। बाकी ऊ एतना चलाक रहल कि कउनो थाना में एक्को रपट ओकरे खिलाफ नाहीं हौ।

माथुर इलाहाबाद से मिलल खबर पै गौर करते रहें, तबले एकठे सिपाही आके दूनो बूट लड़ाय के सलामी दगलेस। ई ऊ सिपाही रहल जेकर ड्यूटी जयकरन सिंह के घरे के निगरानी पै लगल रहल। ऊ तुरतै सिपाही के ओर निगाह उठउलन।

सिपाही आपन रिपोर्ट देवे लगल—'सरकार कल त खाली जयकरन सिंह अपने दूनो ट्यूशन पै गयल रहलन। हम ओनके पिछहीं-पिछहीं रहली। बाकी आज तिसरे पहर दूनो परानी एकठे रिक्शा से संकट मोचन गइलन।'

संकट मोचन नाँव सुनतै इन्सपेक्टर चउँकलन बाकी कुछ बोललन नाहीं।

सिपाही कहत गयल—'संकट मोचन पै रिक्शा छोड़ के लोग दर्शन करे गयल। ऊहाँ से लउटल त रिक्शा न कय के पैदले लंका के ओर बढ़ल औ थोड़िके दूर पै एकठे घरे में चल गयलन।'

अब इन्सपेक्टर ओ सिपाही के टोक के घरे के हुलिया पुछलन। सिपाही के बतावल हुलिया से ओनके समझे में देर ना लगल कि ऊ घरवा ओहे हौ, जवने में शंकर सिंह के डेरा हौ।

http://bhojpurisahityangan.com

फिर सिपाही आगे बत उलेस—'ऊँहा ऊ लोग आधा घंटा ले रहल। ओकरे बाद रिक्शा कय के अपने घरे लउट आयल औ तबले लोग ओहीं बाय।'

इन्सपेक्टर माथुर कुछ सोच में पड़ गइलन। तबले सिपाही फिर कहलेस—'सरकार ओ घरवा के भेलूपुर थाने के दुइठे सिपाही निगरानी करत रहलन।'

इन्सपेक्टर माथुर सिपाही के शाबासी देके विदा कइलन। थोड़ी देर बाद ऊ चेतगंज थाने पै गइलन औ ग्हाँ के थानेदार के लेके जयकरन सिंह के घरे पहुँचलन। जयकरन सिंह के बोलाय के इन्सपेक्टर पुछलन कि—'आज आप ट्शन पै नाहीं गइला।'

जयकरन सिंह कहलन—'आज तनी संकट मोचन जी क दर्शन करे चल गइल रहली।'

फिर कुछ सोचके इन्सपेक्टर पुछलन—'मास्टर साहब आप शंकर सिंह के जानीला ?'

'कउन शंकर सिंह ? एकठे शंकर सिंह त हमरे गाँवे के हउवन। नाते में भतीजा लगेलन।' जयकरन सिंह कहलन।

'ऊ का करेलन'—इन्सपेक्टर के दूसर सवाल भयल। इन्सपेक्टर सवाल त करत रहलन बाकी मास्टर के चेहरा के उतार चढ़ाव पर ओनकर आँख बराबर गड़ल रहल।

जयकरन सिंह बतउलन—'आज कल त एहीं बनारसै में पढ़त हउवन। संकट मोचन पै एक ठे घर लेके ओही में रहेलन।'

'का आप से कब्बों भेंट होलै'—इन्सपेक्टर पुछलन। 'भेंट त आजै भइल रहल। दर्शन करै गइल रहली त ई भयल ईहाँ तक आयल हई त तनी शंकरों के हालचाल लेत चलीं।'

http://bhojpurisahityangan.com

'ऊ तोहरऊँ ईहाँ आवलन जालन'—इन्सपेक्टर के एह सवाल पै मास्टर जयकरन सिंह कहलन कि जब पहिले पहल बनारस अइलन त पाँच-छ दिन एहीं टिकल रहलन, फिर घर ठीक हो गइलै पै ऊहाँ चल गइलन।

'ओकरे बाद फिर'—इन्सपेक्टर क सवाल भयल। 'नाहीं, फिर त कब्बों ईहाँ नाहीं अइलन।'—मास्टर साहब कहलन।

एतना पूछके इन्सपेक्टर उठ गइलन। ओनके ई विश्वास हो गयल कि मास्टर जयकरन सिंह तनिको झूठ ना बोलत हउवन। बाकी एह सवाल क जवाब ओनकर मन नाहीं ढूढ़ पउलेस कि फिर रानी कुतिया एनके दलान में काहें आइल।

इन्सपेक्टर माथुर औ थानेदार थाने पै बइठल सोच-विचार करत रहलन कि दीवान आके थानेदार से कहलन कि सरकार पिशाच मोचन से नरायन नाँव के एक जने रपट लिखाय गइलन हैं कि परसों रात के आठ बजे ओनकर नइये साइकिल ओनके दुअरिये से चोरी चल गइल।

थानेदार खिझियायल कहलन—'औ ऊ रपट लिखावे आज अइलन है।'

'हमहूँ ईहै बात कहली त ऊ कहलन कि साइकिल के खरीदला के रसीद ना मिलत रहे, ओकर पता लगावे में देर भइल। आज ऊ दुकान से नम्बर मिलल है, जहाँ से ऊ खरिदले रहलन।'—दीवान बतउलन।

'अच्छा एकर जाँच हलका के छोटे दरोगा के देदा'– कहके थानेदार इन्सपेक्टर के ओर ध्यान देहलन।

बाकी इन्सपेक्टर क ध्यान दीवान के ओर रहल। ऊ दीवान जी से कहलन दिवान जी हम तनी नरायन के घर देखब।

'सरकार अवहीं त नरायन थनवे पै बइठलै हउवन।' दीवान बतउलन।

http://bhojpurisahityangan.com

इन्सपेक्टर माथुर उठ का ठाढ़ हो गइलन। थानेदारो ओनके सथही उठ गइलन। दूनो जने नरायन के साथ लेके ओनके घरे गइलन। नरायन के घर देखते इंसपेक्टर क चेहरा पै हँसी क रेख खिचाय गयल। नरायन क घर मास्टर जयकरन सिंह के घर से सटलै रहल।

इन्सपेक्टर के दिमाग में विजली मतिन ई विचार कौंधल कि मालूम होत हौ कि राघवेन्द्र क हत्यारा भाग के पहिले मास्टर के दलान में आयल। भित्तर के केवाड़ी वन्द रहले से ऊ कुछ देर दलाने में लुकल रहल। ओकरे वाद नरायन के सायकिल देखते ओके उठाय के चल देहलेस। अव इन्सपेक्टर के एह सवाल क जवाव मिल गयल कि जासूस कुतिया रानी जयकरन सिंह के दलान से आगे काहें नाहीं वढ़ पउलेस।

इन्सपेक्टर नरायन से पुछलन कि तोहार साइकिल केतना देर ले दुआरी पै रहल।

नरायन वतउलन—'हम ७॥ वजे इंगलिशिया लाइन पै दुकान वन्द कय के पौने आठ वजे उहाँ से चलली औ इहाँ पहुँच के साइकिल दुआरी पै छोड़ के घरे में गइली कि वहरी कोठरी खोलके साइकिल धय देईं। जव हम भित्तर से वहरी कोठरी खोलली त देखीं कि साइकिल गायव। ओकरे थोरिकै वाद देखली कि पड़ोस के मास्टर के घरे पुलिस आयके पूछताछ करत हौ त हम डर के मारे वहरे ना निकलली।'

इन्सपेक्टर वहुत खुश रहलन। ओनकर एक गुत्थी सुलझल। ओनके विश्वास हो गयल कि हत्यारा मास्टर के दलान में आयल औ ऊहे नरायन के साइकिल लेके भागल। वाकी ऊ हत्यारा के रहल। ई सोचते इन्सपेक्टर के ध्यान शकर के ओर गयल। दूसर केहू होत त ऊ मास्टर के दलान में काहें आवत। शंकरै अइसन आदमी सामने आवत हौ, जेकर सम्वन्ध मास्टर से हौ औ जे ओनके ईहाँ रह चुकल हौ। ईहे कुल सोचत इन्सपेक्टर थाने पै लवट अइलन।

http://bhojpurisahityangan.com

थाने पै बइठतै दीवान टेलीफोन क रिसीवर इन्सपेक्टर क हाथ में देत कहलन—'हुजूर क टेलीफोन हौ।'

इन्सपेक्टर रिसीवर कान के लगउलन। दूसरे ओर कान्स्टेबुल रामनाथ सिंह रहलन, जेकर ड्यूटी संकट मोचन पै शंकर के घरे के निगरानी पै लगल रहल। रामनाथ सिंह क बात सुनके इन्सपेक्टर कहलन, हम अब्बे पहुँचत हई। रामनाथ सिंह खुफिया विभाग में चार बरिस ले इन्सपेक्टर के मातहती में रह चुकल रहें। रामनाथ सिंह के बुद्धि पै इन्सपेक्टर के भरोसा रहल।

इन्सपेक्टर माथुर तुरतै थाने से निलके जीप पै बइठलन औ सीधे संकट मोचन क पैंड़ा धइलन। शंकर के घरे से कुछ पहिलहीं जीप ठाढ़ कयके ऊ पैदले आगे बढ़लन। ओह समय रात के दस बजल रहल। कांस्टेबुल रामनाथ सिंह ओनके सड़क के मोड़े पै मिल गयलन।

इंसपेक्टर रामनाथ सिंह के तनी आड़े ले गइलन, त रामनाथ बतावे शुरू कइलन—'आधा घण्टा पहिले दुई जने के शंकर के घरे में जात देख के हमार माथा ठनकल। सरकार हम ईहाँ से पहिले इलाहाबाद के कटरा थाना में रहली। एसे ई दूनो के चीन्हत हमें देर ना लगल। ई दूनो इलाहावाद के नामी गुंडा औ डकइत इम्तियाज औ जग्गू रहलन। इन्हहन के ईहाँ आइब कउनो खतरनाक मतलब से खाली ना होई। अवहीं दूनो घरहीं में बाटन। हम आपके खबर देवे गइली त जोड़ीदार के निगरानी पै छोड़ गइल रहली।'

इन्सपेक्टर माथुर रामनाथ सिंह के साथे शंकर के पिछवारे गइलन। एक कमरा के रोशनदान से रोशनी आवत देखात रहल। संकट मोचन के आस-पास पहिले जंगलै रहल, बाकी आबादी बढ़ै के साथै-साथ जंगल कटाय गयल तब्बो अवहीं पेड़ औ झंखाड़ क कमी नाहीं हौ। रातो अन्हरिया रहल, जउने से उहाँ केहू के देखे क खतरा नाहीं रहल। इन्सपेक्टर

http://bhojpurisahityangan.com

एकठे पेड़ पै चढ़े चहलन, वाकी रोशनदान के ओर जवन डार रहल ऊ अदमी के वोझा सँभारे लायक नाहीं रहल।

कांस्टेबुल रामनाथ सिंह कहलन—'सरकार हम देवाल के लग्गे ठाढ़ होत हई, आप हमरे कन्धा पै चढ़ जाँई।' इन्सपेक्टर के हिचकिचात देख के फिर कहलन—'ई कँववा काफी वरियार हौ, सरकार।

ढेर सोच-विचार के वखत ना रहल। रामनाथ देवाल से सट के ठाढ़ हो गइलन औ इन्सपेक्टर ओनके कंधा पै चढ़ के रोशनदान तक पहुँच गइलन। कमरा में वहुत हल्लुक रोशनी के वल्व जरत रहल। तीन युवक सोफा प वइठल रहलन। वीच में शराव क वोतल औ तीन गिलास धइल रहल। रामनाथ के वतावल हुलिया से ऊ शंकर, इम्तियाज औ जग्गू के चीन्ह गइलन। वोतल आधा के करीव खाली रहल। ऊ अन्दाज लगउलन कि एक दौर चल चुकल वाय।

कुछ देर सव चुप रहल। फिर इम्तियाज वोलल शुरू कइले—'कहो शंकर मालती क का निपटल।' 'अरे भाई मालती त गरे के फँसरी होइ गइल वाय। कुल तरह से हमहन थक गइली, वाकी ऊ अपने वाप के ई लिखे के तैयारे ना होत हौ कि ऊ वीस हजार रुपया देके ओके छोड़ाय ले जाँय। ओही के झंझट में हमें राघवेन्द्र के हत्या करे के पड़ल।'

'ई राघवेन्द्र के रहल। ओकरे हत्या क खवर हमहन अखवार में कल पढ़ले रहली, वाकी ई नाहीं सोचली कि ओम्मे तोहार हाथ वाय।'—जग्गू कहलन।

शंकर कहलन—'भाई, राघवेन्द्र क एह विश्वविद्यालय के लड़िकन पै वड़ा प्रभाव हौ। राघवेन्द्र अगर हमरे साथ मिल जात त एह साल हम यूनियन के प्रेसीडेंट चुनाय जाइत। तव अपने ओर निगाह उठावे के हिम्मत पुलिस चाहे मजिस्ट्रेट केहू क ना पड़त। एही से हम राघवेन्द्र से मेल वढ़ावे शुरू कइली।'

http://bhojpurisahityangan.com

'त ओम्मे मालती कइसे बाधा बन गइलिन'—इम्तियाज टोकलन। 'मालती इलाहाबाद के लखपति बाप के दुलरूई बिटिया हौ। ओके एतना खतरा उठाय के हम उड़ाय के तोहरी इहाँ रखली कि एक ठे चिट्ठी लिखवाय लेबा त ओकर बाप बीस हजार रुपया आसानी से दे दीहन औ इज्जत क डरन केहू से कहबो ना करिहन।'

शंकर बतावे लगलन—'बात अइसन भइल कि परसों संझा के साढ़े पाँच बजे राघवेन्द्र इहाँ अइलन। हम ऊ बतिअउते रहली, तबले मालती बउराह मतिन ओह कमरा में फाट फरल। ओकरे आधी देहीं लुग्गा रहल औ आधा नंगै। पाछे पाछे मोहना घरे के कोशिश करत रहल। मालती चिचिआइल कि हमें मार डाला बाकी हम बाबू के चिट्ठी न लिखब। राघवेन्द्र के सामने ई नाटक देख के हम घबड़ाय गइली। बाकी अपने के सँभार के मालती के ढकेल के भित्तर कइली। मोहन केवाड़ी बन्द कय लेहलेस। हम राघवेन्द्र से कहली कि ई हमरे रिश्तेदार के लड़की हौ, जे पागल हो गइल हौ और विश्वविद्यालय अस्पताल में इलाज करावे बदे ईहाँ ओकर भाई लेके आयल बाड़न। मोहना के हम ओकर भाई बतउली। बाकी मालती के आँख औ हमार चेहरा देखके राघवेन्द्र ई समझ गयल रहल कि न त मालती पागल हौ औ न हमार बात साँच। ऊ बहुत गढ़ू अवाज में कहलन कि शंकर हम तोहे अइसन ना समझत रहली। ऊ लड़की के छोड़ दा नाहीं त हम पुलिस में खबर दे देब।

राघवेन्द्र के आँख के भाव ई बतावत रहल कि ऊ खालो भभकिये ना देत हौ। हमहूँ रिवाल्वर निकाल के सामने कय देहली औ कहली कि राघवेन्द्र एह झंझट में पड़ले से बुरा होई। तू भेलूपुर थाना तक पहुँचे न पइबा।

राघवेन्द्र ई कहत उठ गइलन कि देखल जाई। ओनके निकलते हम तय कय लेहली कि पुलिस तक पहुँचे के पहिलहीं एनकर मुँह बन्द करे के

http://bhojpurisahityangan.com

होई। हम मोहन के बोलवली। ओके आपन प्लान बतउली। ऊ मोटर साइकिल पै बइठल। हम पीछे बइठली पहिले हम लंका गइली। ऊहाँ एकठे साथी से पता चलल कि राघवेन्द्र अब्बे शहर वाली बस में गइलन हैं। मोहना मोटर साइकिल दौड़उलेस। भेलूपुर में बहाने से मोहना थाने में गयल। ऊहाँ राघवेन्द्र नाहीं रहलन। फिर दशाश्वमेध थानो में झँकाई भइल। ओहूँ नाहीं रहलन। तब तेजी से हमहन चेतगंज के ओर बढ़ली। रस्ते में राघवेन्द्र के पैदले जात देख के गाड़ी रोकवा के हम उतर गइली और मोहना गाड़ी ले के आगे चल गयल। हम रिवाल्वर निकललो, बाकी ई सोच के ओके रख के छुरा लेहली कि रिवाल्वर के अवाज से सज्जे लोग चौकन्ना हो जइहें। पँजरी में घुसल छुरा राघवेन्द्र के फिर बोले के मोका नाहीं देहलेम। हम धीरे से गल्ली थाम के पिशाचमोचन के ओर बढ़ गइली और अनजाने में मास्टर साहब के दुआरी पै पहुंच गइली। दलान के भित्तर के केवाड़ी बन्द रहले से थोड़ी देर दलानिये में सुस्तइली। ओतने में पड़ोस के एक जने आपन साइकिल रखके अपने घरे में गइलन त ऊहे सइकिलिया लेके हम ईहाँ चल अइली। मालतिये के कारन ई सब काण्ड बिना कउनो फायदा के करे के पड़ल।

ई कुल सुनि के जग्गू औ इम्तियाज दूनो सन्नाटे में आ गइलन। फिर थोड़ी देर बाद आधा आधा गिलास शराब आउर खाली कय के इम्तियाज कहलेस—'अच्छा छोड़ा ई सब। बाद में देखल जाई। हमहन दुसरे काम से आइल बाड़ी। गोपीगंज के पास एकठे बनिया के ईहाँ २५ से ५० हजार क रकम मिले के डौल हौ। कल रात के ग्यारह बजे ऊहाँ पहुँचे के हौ। हमहन तीनों जने ईहें से चलब। आउर लोग लोकल रहिहैं, जे ओही टाइम से पहुँच जइहैं।

इन्सपेक्टर माथुर रोशनदान से सट के ई कुल बतकही सुनत रहलन। रामनाथ के कंधा पै जब ऊ ठाढ़ भयल रहलन त रामनाथ क जोड़ीदार

http://bhojpurisahityangan.com

सिपाही कतहूँ से खोज के सात डंडा के एक सीढ़ी उठाय ली अइलन। ऊ सीढ़ी देवाल पै लगाय देहले पै इन्सपेक्टर रामनाथ के कंधा से खसक के सीढ़ी पै चल गयल रहलन।

भित्तर शराव के दौर औ वतकही चालू रहल। इम्तियाज फिर शुरू कइलन—'रात के पौने दस वजे करिअई अम्वेसडर कार कैंट स्टेशन के फुहारा के पास पहुँच जाई। ओपर डव्लू० वी० जी० ६५४३ नम्वर लगल रही। शंकर वहीं से ओपर सवार होइ के ठीक १० वजे रवाना हो जाँय। हम औ जग्गू राजातालाव में मिलव। सवा ग्यारह और साढ़े ग्यारह वजे के वीच वगइचा में मिले क तय हौ। लोकल अदमी समय से वहीं पहुँचिहैं।'

जग्गू शंकर के लिखरलन—'देखा टाइम में तनिको फरक न पड़ै पावे।'

वतकही औ वोतल दूनो खतम होय चुकल रहल। गोल उठै चाहत रहै। ई देख के इन्सपेक्टर माथुर गते से नीचे उतर अइलन। ओनकर नसनस तनाइल रहल। ओनके आगे के कारवाई के फैसला करे के रहे। एही वीच दूनो सिपाही मिल के सीढ़ी उठाय के आड़े कय देहलन। ई लोग तवले अन्हारे में दवकल रहे, जवले इम्तियाज औ जग्गू के चल गइले पै केवाड़ौ वन्द होवै के अवाज ना सुनाइल। इन्सपेक्टर माथुर एतना खुश रहलन कि दस रुपया क नोट निकाल के रामनाथ के देहलन औ कहलन जा दूनो जने कुछ खा पी ला।

इन्सपेक्टर माथुर क जीप ऊहां से सोझे कप्तान साहव के वंगला पै पहुँचल। माथुर क पूरी रिपोर्ट सुनके ओनके शावसी देहलन औ पुछलन कि आगे का करे के वाय। इलाहावाद पुलिस के नाकों में दम कय देवे वालन वदमाशन के इहाँ जड़ जमावे के पहिलहीं सफाई कय देवेके उम्मेद में कप्तान साहव निहाल हो गइल रहलन।

http://bhojpurisahityangan.com

सलाह बात कय के गोपीगंज थाने पै टेलीफोन कय के ऊहाँ के थानेदार के सबेरही कप्तान साहब के बंगला पै पहुँचे के हुकुम दियाइल। जिला के कुछ आउर चुनल-चुनल पुलिस अफसरन के साहब के बंगला पै सबेरे बटुराये के सनेस रातै भेजाय गयल।

दुसरे दिन सबेरे नौ बजे पुलिस कप्तान के प्राइवेट चैम्बर में पुलिस अफसरन के मीटिंग जुटल। सलाह मशविदा के बाद इन्सपेक्टर माथुर क ई सलाह मान लेवल गइल कि गोपीगंज में, जहाँ ई गैंग जाये वाला हौ, वोहीं जब पूरा गैंग इकट्ठा हो जाय, तब छापा मारल जाय।

गोपीगंज के थानेदार के ई हुकुम भइल कि खूब हिम्मती सिपाहिन के गोल लेके ऊ पुलिस गाड़ी में गोपीगंज में तैयार रहे। जब ओहर से डब्ल्० बी० जी ६५४३ नम्बर के करअई अम्बेसडर गोपीगंज चौराहा से आगे बढ़े त सौगज पीछे रहके ओकर पीछा करे। बाकी अगर रात ११॥ बजे तक अम्बेसडर चौराहा से न गुजरे त ऊ अपने दल के साथ बनारस के ओर बढ़ें औ जहाँ अम्बेसडर देखाय ओकरे सौ गज पहिलहीं रुक के हुकुम के इन्तजार करे।

बनारस पुलिस दुई गोल में जाई। एक टैक्सी में इन्सपेक्टर माथुर के साथ चार चुनल अफसर रहहीं। टैक्सी के सौ गज पीछे हथियार बन्द पुलिस के दस्ता अपनी गाड़ी में चली।

रात साढ़े नौ बजे कैंट स्टेशन पै एकठे टैक्सी इलाहाबाद के सवारी ढूढ़त रहल। थोड़ी देर में एक-एक कय के चार सवारी ओके मिल गयल। तेल भराय के ऊ टैक्सी ग्रांडट्रंक रोड पै आगे बढ़ल। टैक्सी के आगे एकठे करिया रंग के अम्बेसडर कार भागल जात रहल। राजातालाब पै अम्बेसडर तनिके सा रुकल औ दुई जने ओप्पर आउर बइठ गइलन। अम्बेसडर सनसनात उड़त जात रहल। ओकरे पाछे पाछे टैक्सियो भागत रहल। अम्बेसडर वाले लोग टैक्सी के त देखले होइहन,

http://bhojpurisahityangan.com

वाकी ओनके ई पता ना रहे कि टैक्सियों के पाछे पुलिस जवानन से भरल पुलिस वानों दउरल आवत हौ।

गोपीगंज से एक डेढ़ मील पहिलहीं अम्बेसडर के चाल धिरायल औ सड़क के वाये किनारे जाके रुक गयल। टैक्सी अपने चाल से आगे वढ़त गइल, वाकी ओकरे पाछे वाला पुलिस वान नाहीं देखाइल। टैक्सी चार फर्लांग ले आगे जाय के दहिने हाथ पड़े वाला ट्रकन के अड्डा पै रूकल औ ओकर सवार उतर के चाय पीये लगलन। ओह वखत ठीक साढ़े ग्यारह वजत रहल। ई लोग जवले चाय पीयत रहलन, गोपीगंज के ओर से आवत पुलिस क गाड़ी देखाइल। टैक्सी के सवारन में से एक जने, जे असल में इन्सपेक्टर माथुर रहलन, हाथ उठाय के पुलिस गाड़ी के रूके के इशारा कइलन। गोपीगंजके थानेदार इन्सपेक्टर के सादो वेश में चीन्ह के गाड़ी रोक के उतर गइलन। दूनो जने में कुछ रायबात भइल और दूनो गाड़ी ओहर वढ़ल जेहर अम्बेसडर रुकल रहल। टैक्सी औ पुलिस वान वत्ती बुताय के धीरे-धीरे वढ़त रहल। अम्बेसडर से सौ गज पहिलहीं दूनो गाड़ी रूक गइलिन। कुल अफसर औ जवान उतर के सड़क के नीचे खसक गइलन औ गत्ते-गत्ते आगे बढ़े लगलन। अम्बेसडर के नगिचे पहुँच के माथुर सबके रोक के आगे वढ़लन औ गोड़ दवउले ओकरे ड्राइवर के नटई पै पीछे से अइसन घूंसा मरलन कि ऊ ढँगिलाय गयल। इन्सपेक्टर रूमाल निकाल के ओकर मुँह वान्ह के हाथ पीछे उलट के वन्हलन औ गोड़ों वान्ह के ओके एकठे सिपाही के पहरा में छोड़ देहलन। ओकरे वाद सड़क पै आय के इन्सपेक्टर अपने पतरकी पेंसिल टार्च के मुँह वनारस के ओर कय के तीन वार गोलहि घुमउलन। ई इशारा मिलते, वनारस से आइल पुलिस वान में, जवन अम्बेसडर के रूकत देख के पिछही रूक गइल रहल, सगवगाहट भइल औ ओम्मे के जवान उतर के राइफल सँभलले धीरे-धीरे आगे वढ़ल। पुलिस के तीनों दल एक जगह इकट्ठी हो गइल। अव ई सोचाये लगल कि वरमास केहर गइल हउवन। एतने में

http://bhojpurisahityangan.com

सड़क के दखिखन से एक अदमी आवत देखायल। ओकर आहट पाय के पुलिस वाले आड़ थाम देहलन। ऊ आदमी इतमीनान से अम्बेसडर के लगे आयके ड्राइवर के गोहरउलेस। ड्राइवर के न पाय के जवले ऊ अचकचाय इन्सपेक्टर के रिवाल्वर के नाल ओकरे गर्दन में सट गयल। ओहू के बेकाबू कय के पुलिस वान में भेज गयल। अब ई मालूम हो गयल कि बदमासन के गोल दखिखनै वाले गांव में गयल हौ। पुलिस दल तीन टुकड़ी में बँट के तीन ओर से आगे बढ़ल। अगवैं एकठे बगइचा पड़ल। इंसपेक्टर अंदाज से समझलन कि ई ऊहै बगइचा हौ जौने में बदमाशन के इकट्टा होवे क बात इम्तियाज कहत रहल। ओह बगइचा पै पुलिस के घेरावन्दी धीरे-धीरे सकेत होत गइल।

एतने में बगइचा के बीच कुछ खरखराहट भइल। बुझायल कि बदमाशन के आहट लग गयल। पुलिसो अब छिपै क जरूरत ना समझलेस। इंसपेक्टर माथुर कड़क के आवाज देहलन—"शंकर, इम्तियाज, जग्गू अब तू लोगन के दिन पूरा हो गयल। हथियार रख के हाथ उठउले ठाढ़ होजा। बचे के कउनो रस्ता नाहीं हौ। चारो ओर से पुलिस रायफल लेहले घेरले बाय औ ओके हुकुम बाय कि जे भागत देखाय ओके गोली मारदा। तू लोगन क तीन मिनट क समय दियात बाय।"

बदमाशन के ओर सन्नाटा छाय गयल। दुई मिनट बितले पै जब इंसपेक्टर माथुर चेतउलन कि अब एक मिनट रह गयल त जवाब में बदमाशन के ओर से गोली चलै लगल। पुलिस दल एकरे बदे तैयार रहे। ऊ पहिलहीं से पोजीशन ले ले रहल। गोलीके जबाब में पुलिसो के ओर से गोली चलो लगल। कुछ देर बाद बदमाशन क ओर से गोली चलल बन्द हो गयल। इंसपेक्टर ई समझ गइलन कि ओनहन के कारतूस खतम होय गयल। ऊ अपने जवानन के ललकार के एक साथै धावा बोल देहलन। सात बदमाश बय के बान्ह लेवल गइलन। ओम्मन इम्तियाज और जग्गू त रहलन, बाकी शंकर के पता नाहीं रहल पुलिस

http://bhojpurisahityangan.com

पार्टी टार्च वार के आस पास खोजे लगल त शंकर एकठे झाड़ी के पँजरे गिरल मिलल। ऊ गोली लगले से बुरी तरह घायल हो गयल रहे।

एहर इंसपेक्टर के पार्टी वदमासन के पीछे जव रवाना हो गइल, पुलिस कप्तान एकठे दुसरे इन्सपेक्टर के साथ पुलिस भेंजके संकट मोचन पं शंकर के घर घेरवा लेहलन। ओह घरे में मालती एक कमरा में वन्द मिलल। मोहनो पुलिस के हाथ लग गयल। शंकर के घरे में नरायन के ऊ सइकिलियो बरामद भइल, जउने के चोरी के रपट चेतगंज थाने में लिखउले रहलन।

शंकर अस्पताल में आपन सव करनी मजिट्रेट के सामने कवूल कय के मर गयल। ओकर आठो साथी जेल भेंज देवल गइलन।

मालती जव आपन कहानी कप्तान के सामने सुनउलेस त उहाँ एकटठा सव अफसरन के आँखिन में लोर भर गयल। मालती के वाप आयके मालती के ले गइलन और बनारस पुलिस के अपनी ओर से इनाम देवे वदे पाँच हजार रूपया पुलिस कप्तान के हवाले कइलन। ई पहिला मोका रहल जव विश्वविद्यालय के छात्र यूनियन प्रस्ताव पास कय के कप्तान के पास बधाई के सनेस भेंजलेस।

http://bhojpurisahityangan.com

पुरुसारथ

पद्माकर त्रिपाठी लाटरी क टिकट खरिदलन त पाँच लाख रूपया क पहिला इनाम मिलले पै ओकर का करे के होई, एहू क हिसाव वइठा लेहलन। ओह पाँच लाख रूपया में से आधा त धरम के काम में सवके पहिले खरच होई। अपने गाँव में एकठे वढ़िया कालेज वनवाय के ओकर नाँव अपने वाप के नाँव पर दिवाकर कालेज रखिहैं। वाप के नाँव पं त कालेज होइ जाई, बाकी मतारी के रिन से कइसे उरिन होइहैं। सोचत सोचत ऊ तय कइलन कि मतारी क नाँव पर अस्पताल वाढ़या रही। ई दूनों काम सोच के ऊ परसन्न हो गइलन। ठीको रहल। ओनकर वाप पंडित दिवाकर त्रिपाठी, पुरान समय क विद्वान पंडित रहलन। ऊ कउनो विद्यालय में अध्यापक क नोकरी त नाहीं कइलन, वाकी ओनके घरे संस्कृत के पढ़वइया दुई-चार विद्यार्थी रोजै पढ़ै आवें। ओनके नाम पै स्कूलै ठीक रही। औ मतारी के सुभाव अइसन रहल कि केहू के दुख ओनसे देख ना जाय। अस्पताल में जव दुखियन क सेवा होई त सरग में ओनके आत्मा के सुख मिली। अढ़ाई लाख रूपया में ई दूनो काम मजे में हो जाई। औ वाकी अढ़ाई लाख से आपन वचल जिनगी सुचित हो जाई।

पद्माकर त्रिपाठी के वाप दिवाकर त्रिपाठी मजे के खात पीयत जमींदार रहलन। जमींदारी टूटले पै वचल खुचल जमीन पै खेती कयके इज्जत ढँकले चल गइलन। पद्माकरो के सुभाव में सन्तोष अपने वाप से विरासत में मिलल रहल। वाकी आज के नई दुनिया के तड़क भड़क ओनके अपने ओर नाहीं खींचत रहल, अइसन वात नाहीं रहल। बढ़िया जिनगी वदे ऊहो तरसैं, वाकी ऊ जिनगी वदे जेतना छल परपंच के जरूरत रहे, ऊ ओनके वूते क वात नाहीं रहल। अपने पास नकद रूपया रहल नाहीं कि कउनो हाल रोजगार चाहे कल कारखाना चलावे। औ कउनो अइसन काम कय नाहीं सकत रहलन, जेसे अपने संगही वापो दादा क नाँव पै आँच आवे। समाज सेवा के ओर लड़िकइयें से झुकाव रहले से ऊ समाज में अपनो वदे इज्जत क जगह वनाय लेहले रहन।

पद्माकर त्रिपाठी जूआ कब्बों नाहीं खेलले रहलन, वाकी जव सरकारी लाटरी जारी भइल त ओनके टिकट खरीदे में तनिको हिचक

http://bhojpurisahityangan.com

नाहीं भयल। इनाम नहियों निकली तबो ई एकठे रूपयवा त गरीवन के कामें आई। टिकट बेचे वाला वढ़ावा देहलस कि पाँचो सीरीज के टिकट लेवे के चाही वाकी पद्माकर त्रिपाठी कहलन कि भगवान देवे के होई त एक्के टिकट पै दे देई।

जइहा से पद्माकर त्रिपाठी टिकट खरिदलन, ओही दिन से लाटरी खुले के दिन अगोरे लगलन। ओनकर दिन जइसे पहाड़ हो गइल, जवन वीते क नाँव न लेय। ओही दिन से ऊ रोज विश्वनाथ औ अन्नपूर्णा के दर्शनो करैं लगलन। ओनके याद परल कि ओनकर वाप रोज देवी के दर्शन करे जाँय। ओही दिन से ऊ देवियो के दरवार में रोज माथा टेके लगलन। बुढ़वा पुजारी आशीर्वाद देत कहलन कि वचवा माई के कृपा से तोहार वाबू कब्वों माई के दरवार में नागा नाहीं कइलन।

पद्माकर त्रिपाठी के ई बुझाय कि अवकी लाटरी में ओनही के नम्वर निकली। वाकी जीव धुकधुकायल करैं। ओनके आँखी के आगे स्कूल औ अस्पताल के भवन घूमल करैं, जवने के वनवावै क संकलप ऊ लाटरी के टिकट खरीदे के समय कइले रहलन। ऊ कउनो स्कूल चाहे अस्पताल के सामने से गुजरैं त ओकरे भवन के बनावट पै ओनकर ध्यान जरूर चल जाय।

आखिर ऊ दिन आई गयल, जइहा लाटरी खुलै वाली रहल। ओकरे पहिले वाली रात वड़ी बेचैनी से कटल। भिनसहरे उठके नहाय धोके पूजा पै वइठ गइलन। वाकी ऐन मौके पै जइसे मन उचट गयल रहल। पूजा में मनै न लगे। कइसहूं ओसे निपट के दर्शन करे चल देहलन। विश्वनाथ, अन्नपूर्णा के दर्शन कय के जव ऊ देवी के धाम में पहुँचलन त पुजारी पुछलन कि आज सबेरवैं कइसे आय गइला। ऊ अनमनाय के कहलन कि आज संझा के बाहर जाये के बाय।

घरे लउटत दस वजल। ग्यारह बजे लाटरी खुले के रहल। पद्माकर त्रिपाटी के मन क जवन हाल ओह समय रहल ओके वताइव कठिन हौ। ऊ बारबार एह कोशिश में रहलन कि साढ़े ग्यारह वजे ले ओनकर ध्यान लाटरी से हटके खाली देवी के चरन में रमल रहे, वाकी मन अइसन चंचल कि ऊ बिछलाय के लखनऊ पहुँच जाय, जहां ओह समय लाटरी खुले के तैयारी होत रहल होई।

http://bhojpurisahityangan.com

एह उधेड़बुन के बीच जब पद्माकर त्रिपाठी केहू तरह आपन मन देवी के चरन पै जमावे के कोशिश करत रहलन, लुगरी पहिनले एकठे अधेड़ भिखमंगिन गोदी में बच्चा लेहले, सामने आ गइल। मन फिर उचट गइले से खिझियाय के पद्माकर ओह भिखमंगिन के डाँट के भगाय देहलन।

भिखमंगिन सहम के चल गइल। बाकी पद्माकर के जइसे चटकन लगल। कहीं देवियै त नाहीं भिखमंगिन के रूप धयके हमार परीक्षा लेवे आइल रहलिन। ई सोचतै ऊ घबड़ाय गइलन। उठके देखें त भिखमंगिन नाहीं देखाइल। ऊ सोचलन ई त गजब हो गयल। तुरत घरे से बाहर निकल पड़लन। अड़ोस पड़ोस के कुल सड़क औ गल्ली छान डललन, बाकी भिखमंगिन कत्तौं नाहीं देखाइल। कई बार मन में आयल कि आस पास लोगन से पूछीं कि केहू ऊ भिखमंगिन के देखलेस है, बाकी लाजन मूँह ना खुले। बारह बजे दुपहरिया ले टकराय के ऊ घरे लउट के खटिया पै गिर के आपन माथा ठोक लेहलन।

दुसरे दिन सबेरे ऊ भिखमंगिन फिर पद्माकर त्रिपाठी के दुआरे आय के खड़ी हो गइल। बाकी आज पद्माकर के मन में न त खीझ उठल औ न कउनो किसिम के उत्साह। ऊ धीरे से उठलन औ एकठे एक रूपया क नोट ओकरे आगे फेंक देहलन। अइसन बुझात रहे जइसे, कल के डाँट के प्रायश्चित करत होंय।

भिखमंगिन नोट के देखलेस, बाकी ओकर हाथ आगे नाहीं बढ़ल। पद्माकरो जब चुप रहलन त भिखमंगिन बोलल—'बाबू हमें रूपया ना चाही। दुईठे रोटी दियाय द त आपन औ बच्चा के पेट भर लेई। हमहन जाँगर औ पुरूसारथ पर भरोसा करीला, बाकी अबकी क सूखा जाँगरो बदे काम नाहीं छोड़लेस, जउने से ई समय देखै के पड़त हौ।'

पद्माकर त्रिपाठी के जइसे काठ मार गयल। ऊ भिखमंगिन के बइठाय के घरे में गइलन औ अपने घरेवाली से कहलन कि दूनो मतारी बेटवा के भर पेट भोजन कराय दा। पद्माकर के आँखी के आगे एकठे पीयर रंग के तख्ती नाचै लगल, जवन ऊ अवधूत भगवान राम कुष्टासेवाश्रम में लगल देखले रहलन औ जउने पै लिखल रहल—'पुरूसारथै से दरिद्रता क नाश होला।' ●

http://bhojpurisahityangan.com

ईश्वरचन्द्र सिनहा

जन्म—६ जुलाई १९१४।

जन्म स्थान – ईश्वरगंगी, वाराणसी।

शिक्षा—प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू और फारसी। बाद में हिन्दी और अंग्रेजी का अध्ययन। १९३० से ही सक्रिय राजनीति में प्रवेश कर जाने से किसी भी डिग्री अथवा सर्टिफिकेट के लिए न तो अवसर ही मिला और न उधर कभी ध्यान ही गया।

राजनीतिक जीवन—१९३० से १९४५ के बीच चार बार जेल यात्राएँ की। इस बीच गांवों और शहरों की मध्यमवर्गीय जनता की स्थिति को समझने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे।

पत्रकारिता—स्वतन्त्रता के बाद राजनीति से अलग होकर पत्रकारिता को अपनाया। १९४५ में आचार्य नरेन्द्रदेव जी के निर्देशन में समाजवादी साप्ताहिक 'हिन्दी केसरी' का सम्पादन। १९४७ से फरवरी १९५० तक दैनिक 'सन्मार्ग' के स्टाफ रिपोर्टर। मार्च १९५० से १३ अप्रैल १९७१ तक दैनिक 'आज' में रिपोर्टर, उप सम्पादक, चीफ रिपोर्टर तथा सहायक सम्पादक पद का भार संभालने के बाद सेवा से अवकाश-ग्रहण।

२५ फरवरी १९७२ से वाराणसी से प्रकाशित दैनिक 'जनवार्ता' के प्रधान सम्पादक।